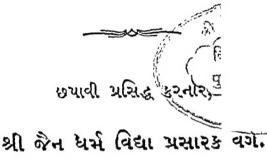
श्री

जैन धर्म बीजी चोपडी.



પાલીતાણા.

225

પ્રથમાવૃત્તિ પ્રત ૧૦૦૦

સંવત્ ૧૯૬૩

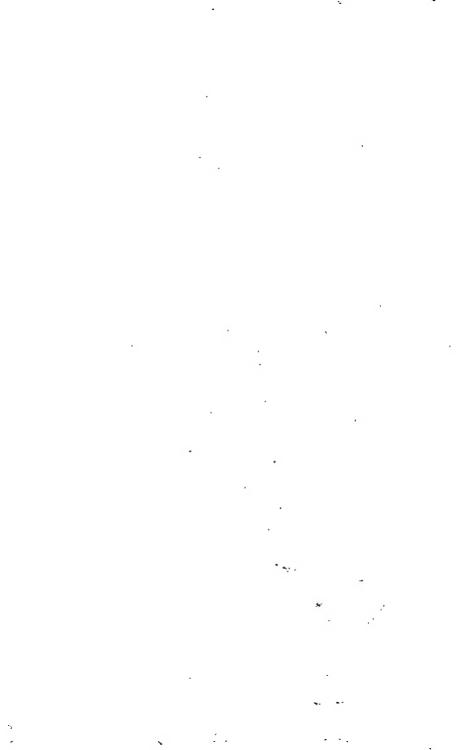
सने १८०७

પાલીતાણા—શ'લુ પ્રિન્ટિ'ગ પ્રેસ.

કિમ્મત o-22-o







अर्पणपत्रिकाः स्वर्गस्थः श्राचक रतनः द्रोठः नरींत्तम-दास नागजी.. जेतुं हुंकुं जीवन आदरणीय; अने अनुक-रणीय इतुं, अने छघु वयथींज जेतुं मन अनेक सद्गुणोथी भरपूर इतुं, जेओनीः धर्म तरफनी श्रद्धाः द्रढ इती, जिनः आगमनाः जेओः अभ्यासी इता, अने जिन भगवाननी भक्तिमां जेओ घणा मेपी इता, पोताना श्रावक वंधुओमां धार्मिक श्राननो पचार जोवानेः जेओ हमेशां उत्सक्त हता, एवाः श्री मांग्ररोळः निवासी स्वर्गवासी श्रावकः रत्न क्षेठ नरोत्तपदास नागजीने अमे आ पुस्तक सद्भावधी अर्रण करीए छीए। प्रसिद्ध कर्ता.



श्रेष्टीवर्य रोठ नरोत्तम नागजी मोतीचंदनी जींदगीनो द्वंक वृत्तांत.

आ बीर नरनो जन्म श्रीमुम्बापुरी मध्ये संबत १९३६ ना पोप वद १० ने दीवसे थयो हतो. शेठ मो-ीं।चंद् देवचंदना श्रीमान् कुटुंवमां लाड साथे उछरतां वीजना चंद्रनी पेठे हृद्धि पामतां पामतां तेमने ब्रह्मचर्याव-स्था प्राप्त थइ. तेमना पूज्य पितामह तथा पिताश्रीनी खंत अने देखरेख नीचे गुजराती तेमज अंग्रेजी भाषातुं समयोचित ज्ञान मेळववामां तेओ फत्तेहमंद नीवड्या हता. जैन तत्त्व झानमां पण तेओ कुशळता धरावता हता. गीत वाजींत्राकदितं ज्ञान पण तेओए संपादन करेलं हतं. आं ब्राप्तचर्यावस्थानो समय पुरो धर्ता संवत १९५१ ना वैशाख मासमां पोतानी जातिना रीवाज मुजव पोतानी व्यवहा-रिक आवरु प्रमाणे घणा आडंवर तथा धामधुमधी ज्ञा-तिमां उंच कुळमां गणाती कन्या नामे नंदकुंवर साथे ते-मनां लग्न करवामां आव्यां इतां. एटले पंदर वरसनी उ-म्मर्थी तेओए गृहस्थावासमां मवेश कर्यो हतो। आ स-मयथी तेओना गृहस्य तरीकेना गुणे व्यक्त जणावा लाग्या हता. धार्मिक द्वाचि पण द्रह यती जणाती हती. सत्संग पूज्य पूजन इत्यादि मार्गानुसारीना गुणा तेमां

श्रेष्टीवर्य राठ नरात्तम नागजी मोतीचंदनी जींदगीनो दंक वृत्तांत.

आ बीर नरनो जन्म श्रीमुम्बापुरी मध्ये संबत १९३६ ना पोप वद १० ने दीवसे थयो हतो. शेठ मो-्रीचंद् देवचंद्ना श्रीमान् कुडुंवमां लाड साथे उछरतां वीजना चंद्रनी पेठे दृद्धि पामतां पामतां तेमने ब्रह्मचर्याव-स्था प्राप्त थइ. तेमना पूज्य पितामह तथा पिताश्रीनी खंत अने देखरेख नीचे गुजराती तेमन अंग्रेजी भाषानुं समयोचित ज्ञान मेळववामां तेओ फत्तेहमंद नीवड्या हता. जैन तत्त्व झानमां पण तेओ कुशळता धरावता हता. गीत वाजींत्राकदिनं ज्ञान पण तेओए संपादन करेलं हतं. आं ब्रायचर्यावस्थानो समय पुरो थतां संवत १९५१ ना वैशाख भारतमां पोलानी द्वातिना रीवाज ग्रुजव पोतानी व्यवहा-रिक आवरु प्रमाणे घणा आढंवर तथा धामधुमयी ज्ञा-तिमां उंच कुळमां गणाती कन्या नामे नंदकुंवर साथे ते-मनां लग फरवामां आच्यां इतां. एटले पंदर वरसनी उ-मार्थी तेओए गृहस्थावासमां प्रवेश कर्यो हती। आ स-मयथी तेओना गृहस्य तरीकेना गुणी व्यक्त जणावा टाम्या हता. धार्मिक हाचि पण दृढ यती जणाती हती. सत्संग पृज्य पूजन इत्यादि मार्गानुसारीना गुणा तेमां

मोटें भागे उपलब्ध यता हता. माध्यस्थादि श्रावकना एकवीश गुणोए पण तेने विषे प्रथमथीः वास करेले। होय, एम बाह्य चिन्होपरथी जणातुं हतुं. गुरु वंदन, शास्त्र श्रवण, आवश्यक क्रिया इत्यादि श्राद्ध कृत्योमां मग्रहोवा साथे जिन पूजा तरफ तेमनुं लक्ष विशेष चोटेलुं, जणातुं हतुं.

कमे क्रमे ते जिन पूजानुं स्वरूप घणा उँचा प्रकारे समजवा लाग्या हता. दुर्गतिवारक, सुगतिदायक, आपत्ति-क्षायक, संपत्तिधायक, सौरभाग्य, निरोगता, पुण्य, प्रीति, इत्यादि उत्पादक जिनेश्वरनी पूजाज छे, एम तेओ शुद्ध श्रद्धापूर्वक समजता हता, जे तेमनी पूजा करती वखतनी सुखाकृति उपरथी स्पष्टपणे जणाइ आवतुं हतुं.

आवी उंचा प्रकारनी शुद्ध पुष्प, चंदन, धूप दी-पादि द्रव्यथी द्रव्य पूजा तेओ करता तेथी कायर पुरुषोने पण दुस्तर संसार स्नुतर बनाववा अने मोक्ष वधूने: स्वयं-वरा बनाववानी इच्छा उत्पन्न करावनारा तेओ जणाता हता. अष्ट, सप्तविंशति, एकविंशति इत्यादि नाना शकारनी पूजाओमां पण तेओ विशेष कुशळ हता. आ प्रकारनी द्रव्य पूजामां तेओ प्रवीण हता, एटछंज नहि, पण द्या-रुप जळथी स्नान करी, संतोषरुप शुद्ध वस्त्र पहेरी, वि-वेकरुप तिलक करी, शुद्ध भावनाथी पावन बनी, भक्ति अने श्रद्धारुपी केशर मिश्रित चंदन छह, शुद्ध आत्मस्वरुप देवनी नवांग भाव पूजा रचवार्यों पण तेओ पांडित्य धरावता हता, उपरांत भाव पूजाना जुदा जुदा भेदोमां पण तेओ पहुत्वने धारण केंरता हता.

आवी एच प्रकारनी शुद्ध द्वति होवा उपरांत न्यवहारनां मुख्य साधनरुप द्रव्यने मेळववामां पण तेओ कुशळ हता. पोवाना पितामह तथा पिताशीए प्रहण क-रेला अर्थ शास्त्रना न्यवहारमांज तेओए पण एक न्यायो-पाजित द्रव्य मेळवनार तरीके शरुआत करी इती, अने धीमे धीमे एक बाहोश अर्थ शास्त्रना अनुभवी तरीके **झळकी निकळ्वानां चिन्हा तेओमां जणातां हतां.** आ रीते धर्मपूर्वक व्यवहार चळावतां लगभग अगीयार वरस यवा आव्या काळ पोतानुं काम कयी करे छे. दरेक अवस्थाना अंत होयं छे. एवा कुद्रतना कानुनोने अनु-सरी कर्म परिणामि महाराजाए पोतानी दाहक दृष्टि आ कोमळ युष्पाकार नर तरफ फेरवी, अने काळ परिणति राणीनी परणाथी स्वरछंदरीओए करेटा हावभाव अने कटाक्षधी मेमांतकप्रस्त ययो होय, तेम हंक मुद्तनी व्यया अनुभवी, अगर सीओए करेला संकेतने अनुसरीने होय-नी, जाणे, तेम आ युवान नर रत्न पोताना पितामर, मातामह, पिता, माता, भायी, भगिनी, त्रण पुत्री, एक पुत्र, अने सगांसंबंधी तेमज मित्र मंदळोने द्योक सागरमां इन्तां मुकीने सं. १९६२ ना भादरवा वद ७ ने मंगळ-धारनी पण अमंगल रात्रिना दश नागे अंधकारने समये २५ वरसनी बालवये आ फानी दुनिआनो त्याग करी

तेमनी पाछळ तेना वडीळोए तेमज तेमनी पाछळ तेनी धर्म पत्नीए जुदां जुदां शुभ खातामां तेमना नामने अमर राखवा रु. ९००० जेवडी एक नादर रकम जुदी काढेळी छे, ज मरण पाछळ पोतानी शक्ति अनुसार करवुं ते योग्यज छे.

आवा एक नर रत्नना स्मरण साधनरूप तेनां आ दुंक जीवन चरित्र शिवाय बीजुं कशुं छेज नहि, तेथी तेटलाथीज संतोष मानी ते उत्तम आत्मानी शुभ गति थाओ, एवी निरंतर इच्छा धराविशुं.





प्रस्तावनाः

श्री जॅन धर्मनी पहेंछी चोपडी अमारा तरफयी मिसद्ध यह चुकी छे, तेंचुं आ वीं पुस्तक "श्री जैन धर्मनी बींजी चोपडी" छे पहेंछी चोपडीनी मस्तावनामां आ वांचनमाळा मिसद्ध करवानो अमारो हेतु स्पष्टपणे बताच्यो छे, तेथी अत्र ते संबंधी पुनः विवेचन कर्चं, ए पाळक्षेपन करवा जेंचुं छे, एम समजी ते करता नथी.

आ जैन धर्मनी वीजी चौपटी सुद्धां श्री जैन धर्म बांचनपाळानां अमारा तरफर्या कुळ ६ पुस्तको प्रसिद्ध ययां छे प्रथमनां चार पुस्तको "श्री जैन धर्म प्रवेश पोधी "ए नामनां छे, अने पछीनां हे श्री जैन धर्मनी पहेली चौपटी अने बीजी चौपटी, ए मळी हुळ ६ पुस्तको अमारी जैन बांचनमाळामां प्रसिद्ध ययां छे।

लाधुनिक शालाओंमां विशेष करीने च्यावहारिक विषयानुं

श्विक्षण आपवामां आवे छे, पण धार्मिक शिक्षणनी योजना जोवामां आवती नथी। वीजा व्यावहारिक शिक्षणने मु-काबले धर्म शिक्षणनी केंटली अगत्यता छे, ए विचार करीए तो सर्वथा एमज कहेबुं पडे छे के, दरेक शाळा-ओमां धर्माशिक्षण अवस्य अपावुंज जोइए, आपणा जैन धमेना शिक्षणने माटे जुद्र जुदा स्थळोमां शाळाओ स्था-पित थइ छे, अने थती जाय छे, ए एक हर्षनी बात छे. आपणा धर्मशिक्षण प्रत्येनी आ जागृति अभिनंदनीय छे, पण मात्र जागृति थइ एटछा उपरथीज हर्ष पामी बेसी रहेवातुं नथी, पण तेने संपूर्णपणे पार पाडवाने माटे प्रयत्न थवानी जरुर छे, अने एम थाय, तोज खरेखरो अर्थ सिद्ध थाय छे. ए कहेवुं सत्य छे के, आपणो धार्मिक शिक्षण संबंधी हेतु पार पाडवाने माटे साधनोनी जरुर छे, अने ते साधनोगां आवा प्रकारनी धार्भिक वि-पयनी वांचनमाळाओनो समावेश थाय छे.

जैन धर्मना शिक्षणने माटे वांचनमाळानी अगत्य सर्वे कोइ स्वीकारे छे, पण अद्यापि सुधी एवा प्रकारनी वांचनमाळानां पुस्तको थोडांज बहार पड्यां छे, ज खाभी पुरी पाडवाने माटे अमोए आ वांचनमाळानां पुस्तको प्रसिद्ध कर्या छे, अने अमे इच्छीए छीए के, ते जैन विद्यार्थीओने सर्व रीते उपयोगी थाय, अने धार्मिक ज्ञान छेवाने तेओने सुगमता थाय, एवी अमारी धारणा छे.

माचीन आचार्य मुनि महाराजीए आपणा धर्मनाजे

यहान ग्रंथों रच्या छे, तेनी पासे तो आ पुस्तकों लेश मात्र पण नथी, तोपण ते महात्माओनां वचनोनेज अवलंबो चान्छ जमानाने अनुकुळ थाय, एवां पुस्तकोनी अमीए रचना करी छे, अने आ पुस्तक वांची श्रावक वर्ग ध-र्मनो बोध मेळववा शक्तिमान थशे, अने प्राचीन ग्रंथो बांचवा तेमनी अभिरुची वधशे, तो अमे अमारो श्रम सफळ थयो गणीशुं.

अपने कहेवाने हर्ष धाय छ के, आ वांचनमाळानां प्रसिद्ध थएलां पुस्तको जन शाळाओमां घणे ठेकाणे च-ळावयां शर थयां छे, अने विद्यार्थीओने ते द्वारा धार्मिक वोध सुगमताधी थइ शके छे, एतुं अनुभवमां आवेलुं छे. आ प्रमाणे घणे स्थळे शाळाओमां आ पुस्तको उपयोगी थइ पडवाथी तेमांनां केटलांक सुस्तकोनी पुनः आहत्ति फाडवानी जरुर पटी छे. आ प्रमाणे आ वांचनमाळा आपणी शाळाओमां उपयोगी धवाधी अमेनि ते प्रसिद्ध फराववा संवंधी उत्साह वध्यो छे, अने अमे। आशा राखीए छीए के, आ वांचनमाळानां वाकीनां पुस्तको पण जेम चने तेम जलदी तैयार करी, सद्गुणी आवको पासे अमे रजु करीशुं.

श्री जैन आगमना ह्ल्यानुयोग, चरण घरणानुयोग, वयानुयोग, अने गणितानुयोग, ए चार योगनुं मृट नत्वरूप ज्ञान मेल्यगान विधार्योशीन सगम परे, अने त

शिक्षण आपवामां आवे छे, पण धार्मिक शिक्षणनी योजना जोबामां आवती नथी। बीजा व्यावहारिक शिक्षणने मु-काबले धर्म शिक्षणनी केंटली अगत्यता छे, ए विचार करीए तो सर्वथा एमज कहेबुं पडे छे के, दरेक शाळा-ओमां धर्माशिक्षण अवस्य अपावुंज जोइए. आपणा जैन धमेना शिक्षणने माटे जुद्रा जुदा स्थळोमां शाळाओ स्था-वित थइ छे, अने थती जाय छे, ए एक हर्षनी वात छे. आपणा धर्मशिक्षण प्रत्येनी आ जागृति अभिनंदनीय छे, पण मात्र जागृति थइ एटला उपस्थीज हर्ष पामी बेसी रहेवातुं नथी, पण तेने संपूर्णपणे पार पाडवाने माटे प्रयत्न थवानी जरुर छे, अने एम थाय, तोज खरेखरो अर्थ सिद्ध थाय छे. ए कहेबुं सत्य छे के, आपणो धार्मिक शिक्षण संबंधी हेतु पार पाडवाने पाटे साधनोनी जरुर छे, अने ते साधनोगां आवा प्रकारनी धार्भिक वि-पयनी वांचनमाळाओनो समावेश थाय छे.

जैन धर्मना शिक्षणने माटे वांचनमाळानी अगत्य सर्वे कोइ स्वीकारे छे, पण अद्यापि सुधी एवा प्रकारनी वांचनमाळानां पुस्तको थोडांज बहार पड्यां छे, जे खाभी पुरी पाडवाने माटे अमोए आ वांचनमाळानां पुस्तको प्रसिद्ध कर्या छे, अने अमे इच्छीए छीए के, ते जैन विद्यार्थीओने सर्व रीते उपयोगी थाय, अने धार्मिक ज्ञान छेवाने तेओने सुगमता थाय, एवी अमारी धारणा छे.

माचीन आचार्य मुनि महाराजीए आपणा धर्मनाजे

महान ग्रंथों रच्या छे, तेनी पासे तो आ पुस्तको छेश मात्र पण नथी, तोपण ते महात्माओनां वचनोनेज अवछंबी चाछ जमानाने अनुकुळ थाय, एवां पुस्तकोनी अमोए रचना करी छे, अने आ पुस्तक वांची श्रावक वर्ग ध-र्मनो वोध मेळववा शक्तिमान थशे, अने प्राचीन ग्रंथो वांचवा तेमनी अभिरुची वधशे, तो असे अमारो श्रमः सफळ थयो गणीशुं.

अमने कहेवाने हर्ष थाय छे के, आ वांचनमाळानां प्रसिद्ध थएळां पुस्तको जैन शाळाओमां घणे ठेकाणे च-ळाववां शरु थयां छे, अने विद्यार्थीओने ते द्वारा धार्मिक बोध सुगमताथी थइ शके छे, एवं अनुभवमां आवेछं छे, आ प्रमाणे घणे स्थळे शाळाओमां आ पुस्तको उपयोगी थइ पडवाथी तेमांनां केटळांक पुस्तकोनी पुनः आदृत्ति काढवानी जरुर पडी छे, आ प्रमाणे आ वांचनमाळा आपणी शाळाओमां उपयोगी थवाथी अमोने ते प्रसिद्ध कराववा संबंधी उत्साह वध्यो छे, अने अमो आशाराखीए छीए के, आ वांचनमाळानां बाकीनां पुस्तको पण जेम वने तेम जळदी तैयार करी, सद्गुणी आवको पासे अमे रज्ज करीशुं.

श्री जैन आगमना द्रव्यातुयोग, चरण करणातुयोग, कथातुयोग, अने गणितातुयोग, ए चार योगतुं मूळ तत्वरूप ज्ञान मेळववाने विद्यार्थीओने सुगम पढे, अने ते ज्ञान मेळववानी तेमने जिज्ञासा उत्पन्न थाय, अने सरळताथी तेओ वोध मेळवी शके, ए वांचनमाळानो धुल्य उद्देश छे. श्री जैन आगम जे चार योगथी विराजीत छे, तेनुं अमसर ज्ञान थाय, एवा पाठो आ पुस्तकोमां दाखळ करेळा छे. सर्व स्थळे विद्यार्थीओनी शक्ति उपर विचार करीने तेमने दरेक विषयना रहस्य समजाय, तेवी रीते सरळ भाषामां पाठो ळखेळा छे. दरेक पाठमां शाळाओमां भणता अभ्यासीओने एक दिवसना अभ्यास जेटळो विषय समावेळो छे, अने ज्यां ज्यां विषयनो संचंध पाछळना पुस्तको जोडे छे, त्यां आ पुस्तकमां पण तेनुं थोडुं पुनरावर्तन करी, विद्यार्थीओने पाछळना पाठो स्मरणमां राखवाने सहाय मेळ तेम करेळुं छे.

आ पुस्तकना चार खंड करेला छे पहेला खंडमां सम्यक्तनुं स्वरुप स्पष्टपण समजाव्युं छे, अने तेज सं-वंधमां अतिचार, श्रद्धा, लिंग, दश प्रकारना विनय, त्रण शुद्धि, पांच दूषण, आठ प्रभावक, पांच सूषण, पांच लक्षण, छ यतना, छ आगार, छ भावना, समिकतना ६७ वोल, पचलाण ए वगेरे पाठो गोठवेला छे.

वीजा खंडमां श्रावकना सामान्य आचार, अने नीतिना पाठो आपेळा छे. एटळे सदाचार, विधि अने निरेध कार्य, भोजन विधि वगेरे संबंधी पाठो आपेळा छे. त्रीजा खंडमां नव तत्वना वोधक पाठो आपेळा छे. ए खंडमां कुल ५२ पाठे। छे. तेमां नव तत्वने। संपूर्ण सार समाबेलो छे. चोथा खंडमां कथानुयोगना पाठो आपेला छे, तेमां श्री अजितनाथ, सगर चक्रवर्त्ति. वगेरेनां चिरत्रो आपवामां आवेलां छे. चारे खंडमां कुल मळीने ८५ पाठो आवेला छे. आ पुस्तकनी पहेलांनां पुस्तकोमां आवेला कोइ कोइ पाठो वधारे विस्तारथी आ पुस्तकमां आपेला छे.

शिक्षक अने शिष्य वंनेने सुगम पडे, माटे पत्येक पाठने छेडे सारांश प्रश्नो आपेला छे. जो विद्यार्थीओं ते प्रश्नोना उत्तर यथार्थ आपी शके, तो पुस्तक मांहेनों सघळो विषय तेमना इदयमां द्रह थाय एवी योजना छे. वळी शिक्षक वर्गने विद्यार्थीओंना पाठ तैयार छे के नहीं, ते वावतनी परीक्षा करवाने ए प्रश्नो घणा उपयोगी छे. पाठ रचवामां विद्यार्थीओथी केटलो विषय ग्रहण करी शकाशे, ते उपर खास छक्ष आप्युं छे, अने जे विषयो मोटा छे, तेना भागो पाडी वे त्रण के तेथी वधारे पाठो छखेला छे.

आ पुस्तक तैयार करवामां ते शुद्ध अने सरछ थाय, तेने नाटे अमोए खास ध्यान आपेछं छे विद्वान मुनि महाराजो अने श्रावक गृहस्थो पासे शोधावी दोप रहित थाय, तेने माटे प्रयत्न करेलो छे, छतां पण धर्म-तत्वनो विषय घणो गंभीर छे, एथी आ पुस्तकमां जे कांइ दोष रही गया होय, ते संबंधी अमी पूज्य मुनि महाराजो अने विद्वान श्रावक वर्ग पासे क्षमा मागीए छीए, तथा तेमने विनित करीए छीए के, आ पुस्तकमां कोइ स्थळे कंइ दोष तेमना जोवामां आवे, तो ते अमारी उपर छखी मोकळवा कृपा करवी, जेथी अमो तेमनो उप-कार मानीशुं, अने बीजी आहत्ति कढाववाने प्रसंगे ते सुधारीशुं

आ वांचनमाळाना प्रथम प्रसिद्ध थयेळां पुस्तको अमोए विद्वान मुनिराजो तथा सुज्ञ श्रावकवर्ग तरफ तेमना अभिप्राय अर्थे मोकळेळां, के जेथी तेमां रहेळा दोष विगेरेनुं वीजी आहत्ति प्रसंगे संशोधन थाय तेओए कृपा करी अमारा पुस्तकोनुं अवळोकन करी पोताना अभिप्रायो मोकल्या छे, जे आ पुस्तकना पछवाडेना भागमां अमोए आपेळा छे. आ प्रमाणे आ पुस्तकने माटे पण विद्वान मुनिराजो तथा श्रावक गृहस्थो पोतानो अभिप्राय छखी अमोने ते संबंधी सुचना आपवा कृपा करशे, एवी आशा राखीए छीए.

आ पुस्तक रचवामां अमोने पूज्य मुनि महाराज श्री चारित्रविजयजीए घणी अमूल्य सहाय आपेली छे। उक्त मुनि महाराज श्री अमारा वर्गना कार्यने वखतोवखत सहाय आपवानी कृपा करे छे; जेथी तेमनो अमो आ. प्रसंगे उपकार मानीए छीए। आ पुस्तक मिसद्ध करवामां मांगरोळवाळा शेठ नागजी मोतीचंदे पोताना स्व० पुत्ररत नरोत्तमदास, के जेमत्तुं जीवनचरित्र आ पुस्तक साथे अमोए प्रसिद्ध कर्युं छे, तेमना स्मरणार्थे का ३००) नी सहाय आपेठी छे, जेथी आ पुस्तक प्रसिद्ध कराववाने अमो शक्तिवान थया छीए. अमो उक्त श्रावकरत्न शेठ नागजीभाइनो आ प्रसंगे आभार मानीए छीए, अने अन्य श्रावक गृहस्थोने उक्त शेठनो दाखलो लड़ अमारा पुस्तक प्रसिद्धीना खाताने सहाय आपवाने माटे विज्ञिप्त करीए छीए.

प्रसिद्ध कत्ती.

अनुक्रमणिका.

खंड १ लो.

				113.
पाठ	8	छो	सम्यक्तव भाग १ छो	?
पाठ	२	जो	सम्यत्तव भाग २ जो	३
पाठ	३	जो	श्रद्धा अथवा सद्दरणा	६
पाठ	8	थो	त्रण लिंग	9
पाठ	ध्	मो	दश प्रकारना विनय	१०
पाठ	६	हो	त्रण शुद्धि	१५
पाठ	9	मो	पांच दूषण	१७
पाठ	C	मो	आठ प्रभावक	१८
पाठ	९	मो	पांच भूषण	२०
पाठ	Şο	मो	पांच छक्षण	२१
पाठ	११	मो	छ यतना	રંઇ
पाठ	१२	मो	छ आगार	२६
पाठ	१३	मा	छ भावना	३१
पाठ	\$8	मो	छ स्थान	३३
पाठ	१५	मो	समिकतना ६७ बोल विषे कविता	३५
पाठ	१६	मो	पचलाण भाग १ छो	३८
	१७		पचलाण भाग २ जो	8 {
पाठ	१८	मो	पचलाण भाग ३ जो	४३

पाठ	१९	मा	पचलाण भाग ४ था	४६
पाठ	२०	मो	पच्छाण करवानुं फळ	ષ્ઠું
			,	
	•		खंड २ जो.	
पाठ	३ १	मो	सदाचार भाग १ छो	५३
पाठ	२२	मो	सदाचार भाग २ जो	५५
षाठ	२३	मो	न करवानां काम	40
पाठ	२४	मो	करवा योग्य काम	६०
षाठ	२५	मो	भोजन विधि भाग १ लो	६२
पाउ	२६	मो	भोजन विधि भाग २ जो	६५
			खंड ३ जो.	
पाठ	२७	मो	जीव	६८
पाठ	२८	मो	पर्याप्ति	७१
पाठ	२९	मो	जीवना चौद भेद	७३
			जीवना चौद भेद विषे कविता	७५
पाठ	३१	मो	अजीव तत्त्व	७६
पाठ	३२	मो	अस्तिकाय	७७
पाठ	३३	मो	अरुपी अजीवना दश भेद	७९
			रुपी अजीवना चार भेद	८०
		-		-

				पात्तुं.
पाठ	३५	मो	काळ	८२
पाठ	३६	मो	. छ द्रव्य	28
पाठ	३७	मो	पुण्यतत्त्व	66
पाठ	३८	मो	पुण्य बांधवा विषे कविता	९०
पाठ	३९	मो	पुण्य भोगववाना ४२ प्रकार भा, १ त	क्रा ९१
पाठ	80	मो	पुण्य भोगववाना ४२ प्रकार भा २ व	ना ९४
पाठ	४१	मो	पुण्य भोगववाना ४२ प्रकार भा ३ व	ना ९७
पाठ	४२	मो	पापतत्त्व	९९
		-	पाप भोगववाना प्रकार भा १ छो	१० ₹
पाठ	88	मो	पाप भोगववाना प्रकार भा २ जो	१०५
			पाप भोगववाना प्रकार भा ३ जो	१०८
		_	पाप भोगववाना प्रकार भा ४ थो	११३
			पापतत्त्व विषे कविता	११६
	•	_	आश्रवतत्त्व	११७
			पांच इंद्रिय अने चार कषाय	११९
		_	आठ मदनो त्याग करवा विषे कविता	
	-	-	पांच अव्रत भाग १ ले।	१२४
			पांच अव्रत भाग २ जो	१२७
			पांच अत्रत भाग ३ जो	१३०
			त्रण योग अने पचीश क्रिया भा १ छो	
		~	त्रण योग अने पचीश क्रिया भार २ जो	
पाउ	५६	मा	आश्रव तत्त्व विषे कविता	१३९

				पानुं.
पाठ	५७	मो	संवरतत्त्व	. \$80
पाठ	40	मो	संवरना सत्तावन भेद	१४२
पाठ	५९	मो	संवरना सत्तावन भेद	\$88
			(दश प्रकारनो यतिधर्म)	
पाठ	६०	मो	ब्रह्मचर्य (नव गुप्ति)	580
पाठ	६१	मो	संवरना सत्तावन भेद वारः भावना	१५१
पाठ	६२	मो	वार भावना विषे कविता	१५६
पाठ	६३	मो	संवरना सत्तावन भेद	१५८
			(वावीश परिषह)	
ंपाठ	६४	मो	वावीश परिसह विपे कविता	१६२
पाठ	६५	मो	संवरना सत्तावन भेद [पांच प्रका-	
			रतुं चारित्र	१६६
पाठ	६६	मो	निर्जरा तत्त्व	१७०
पाठ	६७	मो	तप	१७२
			तप विषे कविता	१७५
			वंध तत्त्व	१७६
पाउ	90	मो	वंध हेतु	१७९
पाठ	७१	मो	(वंध उत्तर हेतुना सत्तावन भेद) मिथ्यात्व	१८३
पाठ	७२	मो	वंध हेतुना सत्तावन भेद अ-	
			विर्ति कपाय	१८५

	पानुं•
पाठ ७३ मो वंध हेतुना सत्तावन भेद (योग)
भाग १ छो.	१८७
पाठ ७४ मो योग भाग २ जो	१९०
पाठ ७५ मो बंध तत्त्व विषे कविता	१९३
पाठ ७६ मो मोक्ष तत्त्व भाग १ लो	१ ९8
पाठ ७७ मो मोक्ष तत्त्व भाग २ जो	१९९
पाठ ७८ मो सिद्धना पंदर भेद	२०४

. खंड ४ थो.

पाठ	७९	मो	अजितनाथ भाग १ लो	2.06
पाठ	60	मा	अजितनाथ भाग २ जी।	२१७
पाठ	८१	मो	अजितनाथ चरित्र विषे कविता	२२२
षाठ	८२	मो	सगर चक्रवार्त्त भाग १ लो	्र २२४
पाठ	८३	मो	सगर चक्रवर्त्ति भाग २ जो	२२९
षाठ	68	मो	सगर चक्रवर्ति भाग ३ जो	233
षाठ	८५	मो	सगर चक्रवार्त भाग ४ थो	२३९



श्री जैन धर्म बीजी चोपडी.

खंड १ लो.

पाठ १ लो

सम्यक्तव भाग १ लो.

सम्यक्तव ए आत्मानो शुभ परिणामरुप गुण छे ते स-म्यक्तव एवी वस्तु छे के, जे छद्मस्थ विगेरेने प्रत्यक्ष थइ शके तेम नथी। सम्यक्त्व आत्मानी शुभ परिणाम छे। सम्यक्तवनो प्रभाव अलौकिक छे, जैन धर्मनी वधी महत्ता स-स्यक्तवने आश्रीने रहेळी छे, जैन तत्त्वज्ञान संपादन कर-वानो उत्तम अधिकार सम्यक्तवथी प्राप्त थाय छे. जो हृदयमां सम्यक्तव होय तो ते जैन धर्मना रहस्यने जाणी शके छे छुदेव, कुगुरु अने कुधर्मनो परित्याग करी शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी आस्था राखवी, ते सम्यक्त्वनुं मूळ स्वरुप छे. ते सम्यक्त्व ओळखवाने माटे सम्यक्त्वना जुदाजुदा सडसठ पकार छे. ते जैन संपदायमां ' समिकतना सडसठ बोल ' एवा नामधी ओळखाय छे. सम्यक्तवतुं वीजुं पाकृत नाम समिकत छे, अने प्राये करीने जैन प्रजामां ते नामथी ते वधारे प्रख्यात छे. समिकतना सहसठ बोलनी गणना आ प्रमाणे थाय छे. सहहणाना चार भेद छे, लिंगना त्रण भेद छे, विनयना दश भेद छे, शुद्धिना त्रण प्रकार छे, दूषणना पांच प्रकार छे, प्रभावक आठ कहेवाय छे, भूषण पांच छे, लक्षणना पांच भेद छे, छ प्रकारे यतना कहेवाय छे, छ आगार कहेवाय छे, छ भावना अने छ स्थान कहेवाय छे. आवी रीते समिक-तना आश्रयी कुल मळीने सहसठ बोल थाय छे. दरेक श्रावकनां संताने आ सहसठ बोल बराबर समजीने याद करवा जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्व ए शुं छे १ २ सम्यक्त्व प्रत्यक्ष थइ
शके तेवी वस्तु छे के केम १ ३ सम्यक्त्वथी शो लाभ
थाय छे १ ४ इद्यमां सम्यक्त्व होवाथी शुं थाय छे १
५ सम्यक्त्वनुं मूळ स्वरुप शुं छे १ ६ सम्यक्त्वना केटला
प्रकार छे १ अने ते जैन संप्रदायमां केवा नामथी ओळखाय छे १ ७ सम्यक्त्वनुं वीजुं नाम शुं छे १ ८ सम्यक्त्वना वधा बोल गणावो ९ स्थान अने आगार केटला
छे १ १० भूषण अने लक्षण केटलां छे १ ११ विनय,
लिंग अने दुपणना केटला प्रकार छे १ १२ शुद्धि अने

प्रभावक केटला छे[?] १३ सदहणा अने यतनाना केटला प्रकार छे[?]

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुभ परिणाम, छन्नस्थ, अलौकिक, महत्ता, रहस्य, अधिकार, आस्था, सदद्दणा, लिंग, शुद्धि, दूषण, प्रभावक, यतना, आगार, भावना, स्थान

पाठ २ जो.

सम्यक्त्व भाग २ जो.

शुद्ध देव, गुरु, अने धर्म—ए त्रण तत्व उपर जे निश्रल परिणामरुप श्रद्धा ते सम्यक्त्व कहेवाय छे किंद्र कोइ जीवने उपरनां त्रण तत्त्वना वरावर वोध न होय, पण जो ते जीव किंद्र पक्षपात छोडी दहने मनमां एखं धारे के, " जिनेश्वर भगवाने जे अर्थ कह्या छे, ते वधा नि:शंकपणे सत्य छे " आवी तेनी तत्त्व उपरनी जे श्रद्धा, ते पण सम्यग् दर्शन कहेवाय छे, तेनाथी जे विपरीत ते मिथ्यात्व कहेवाय छे वली मिथ्यात्वनो त्याग करवो, ते पण सम्यक्त्व कहेवाय छे.

देव, गुरु, अने धर्मना स्वरुपने जाणीने निश्चय करवी, तेपण सम्यक्त कहेवाय छे. चार अनंतानुबंधी कषाय, सम्यक्त मोह, मिश्र मोह, अने मिश्र्यात्व मोह—आ सात प्रकृतिनो जे जीव उपश्चम करे, तथा क्षयोपश्चम करे, ते जीवने उपश्चम अने क्षयोपश्चम सम्यक्त थाय छे. ए सम्यक्त प्रत्यक्ष ज्ञाननो विषय नथी. "आ जीवने सम्यक्त छे, " एवं केवळी जाणी शके छे. जे जीवने सम्यक्त प्रगट थाय छे, ते जीवने नरक तथा तिर्थच आ बन्ने गतिना आयुष्यनो बंध थतो नथी.

ए सम्यक्तवना पांच अतिचार छे. १ शंका अति-चार, २ आकांक्षा अतिचार, ३ वितिगिच्छा अतिचार, ४ मिथ्या द्रष्टि पशंसा अतिचार, अने ५ मिथ्या द्रष्टि परिचय अतिचार—आवां तेनां नाम छे.

जिन वचनमां शंका करवी नहि जो शंका करवामां आवे तो, शंका नामे पहेला अतिचार छे. बीजा मतवाळाओनां अज्ञान कष्ट देखी, कोइ पाखंडीना विद्या मंत्रना चमत्कार देखी, तेमज पूर्व जन्मनां अज्ञान कष्ट्यी फळ पामेला अन्य मतवाळाओने सुखी, तेमज धनवान देखी, पोताना मनमां ते मतनी प्रशंका करे, अने तेने अंगीकार करवानी आकांक्षा राखे, ते आकांक्षा नामे घीजो अतिचार लागे छे. तेथी बीजा मतनी आकांक्षा न करवी. पोताना पूर्व जन्मनां करेलां पापना उदयथी दुःख

भोगवतो जीव एवो विचार करे के, " हुं धर्म कर्छ छुं, तेनुं फळ मने शुं मळके ? अथवा मळके के नहीं ? वळी जेओ धर्म करता नथी, तेओ सुखी छ, अने हुं धर्म करुं छुं, तथापि दुःखी थाउं छुं." आ प्रमाणे विचार हुं, ते वितिगिच्छा नाम त्रीजो अतिचार छे, तथा जैन साधुनां मिलन त्रारीर तथा मिलन वस्त्र देखींन मनमां दुगंछा करे के, " आ साधु गंदा छे. आवा मिलन साधु शी रीते संसारने तरी शके ?" आवो विचार करवाथी पण वितिगिच्छा नामे त्रीजो अतिचार छागे छे, माटे उपर प्रमाणे दुगंछा न करवी.

जिन प्रणित आज्ञाथी जे वाहेर छे, ते मिथ्या द्रष्टि छे. कारण के तेओ सर्वज्ञनां वचनोने मानता नथी, अने असर्वज्ञनां वचनोने सत्य माने छे. आवा जिनाज्ञा-नी वाहेर अज्ञान कष्ट करनारा मिथ्यात्वीओनी प्रशंसा करवी, तेओनां तप, त्रत, अने पर्वोत्सवनां वखाण करवां, ते मिथ्या द्रष्टि प्रशंसा नामे चोथो अतिचार छे, तेथी सम्यवत्ववाळा यविजनोए मिथ्या द्रष्टिनी मशंसा न करवी.

मिथ्या द्रष्टिनी साथे वहुज मेळाप राखे, खानपान करे, अने वास करे, ते मिथ्या द्रष्टि परिचय नामे पांचमो अतिचार छे, एवा अनेक प्रकारे सहवास करवाथी मिथ्या द्रष्टिनी वासना छागी जाय छे, अने तेम करतां छेवटे धर्मश्रप्ट थइ जवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ सम्यक्त्व एटले शुं १ २ सात प्रकृति कइ कइ १ २ आ जीवने सम्यक्त्व छे, एवं कोण जाणी शके १ ४ सम्यक्त्वना पांच अतिचार ग्रावो ५ पांच अतिचार् रनी समजुती आपो

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

श्रद्धा, सम्यक्तव, अनंतातुवंधी कषाय, उपश्रम, क्षयो-पश्रम, आकांक्षा, विज्ञिगिच्छा, पर्वोत्सव, धर्मभ्रष्ट.

पाठ ३ जो

अद्धा अथवा सद्दरणा.

आस्तिकपणानी जे बुद्धि ते अद्धा अथवा सहहणा कहेवाय छे ते सहहणानो संबंध समिकतनी साथे रहेलो छे ते सहहणाना चार प्रकार छे जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास करवो, ते संबंधी सारो विचार करवो, ते अद्धानो पहेलो प्रकार छे जीव विगेरे नव तत्वो श्री जिन भगवंते कहेला छे, अने तेमां जे जे कहेवामां आन्युं छे, ते वरावर छे तेमल तेनी अंदर जे जे कहेलुं छे, ते सत्य छे. आ प्रमाणे विचार करी ते नवतत्वनुं ज्ञान यथार्थ मेळववुं, ते श्रद्धानो पहेलो प्रकार छे.

गुरुसेवा ए अद्धानो वीजो प्रकार छे. साधु मुनि-राजनी शुद्ध बुद्धिथी सेवा करवी, तेमनं निर्मळ चारित्र जोइ उत्तम मकारे तेमनी भक्ति करवी, ए श्रद्धाना वीजा मकारमां आवे छे. जे समिकतथी भ्रष्ट होय, तेमना संग करवो नहि, ए श्रद्धानो त्रीजो पकार छे. पासथ्या, कु-शीलिआ अने नेपविडंवक, एवा छोको धर्मथी भ्रष्ट होय छे. जेओ धर्मीपणाना डोळघाछ होय, तेमज खोटा आ-डंबरथी धर्मनो विपरीत वोध आपनारा होय, ते पासध्या कहेवाय छे. जेमनामां शीलगुण न होय, ते कुशीलिआ कहेवाय छे, अने द्वोटो वेप धरी वीजाने ठगनारा होय, ते वेपविडंवक एवा नामथी ओळखाय छे, ते पासथ्था, कुशी-लिआ अने वेपविडंवक ए वधा समिकतथी भ्रष्ट होय छे, तेवाओनो संग करवो नहीं, ते सदहणाना त्रीजा भेदमां आवे छे.

मिथ्यात्वींनो संग न करवो, ते श्रद्धानो चोथो प्रकार छे भिथ्यात्वी एटले अन्य दर्शनी—ने वीजा दर्शन— (मत)ने माननारा होय, तेवाओनो संग न करवो। कारण के तेवाओनो संग करवाथी समिकतनो नाश थाय छे।

आ चार श्रद्धाना प्रकार छे। जे भव्य मनुष्यने

समिकत उपर श्रद्धा होय, ते जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास करे छे, अने सर्वदा तेनोज विचार करे छे. समिकतनी श्रद्धावाळो मनुष्य साधु मुनिराजनी सेवा करे छे. पासथ्या, क्रशीलिआ अने वेष विडंबक एवा समिकतथी भ्रष्ट थये-लानो तेमज मिथ्यात्वीनो संग करता नथी, ए समिकतनी श्रद्धानो प्रभाव छे.

सारांश प्रश्नो.

१ श्रद्धा अथवा सद्दहणा एटले शुं १ २ सहहणाना केटला प्रकार छे १ ३ जीव विगेरे नव तत्वनो अभ्यास अने तेनो विचार करवो, ते श्रद्धानो क्यो प्रकार छे १ ४ पासथ्था, कुशीलिआ विगेरेनो संग करवो नहीं, ते श्रद्धानो क्यो प्रकार १ ५ साधु मिराजनी सेवा करवी, ते क्यो प्रकार छे १ ६ मिथ्थात्वीनो संग न करवो, ते क्यो प्रकार छे १ ७ खोटा वेपधारी बीजाओने टगनारा होय, ते केवा कहेवाय छे १ ८ पासथ्था अने कुशीलिआ एटले शुं १ ते समजावो.

ाशिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी

भ्रष्ट, पासध्या, कुशीलिआ, वेषविडंवक, आडंवर, विपरीत, मिध्यात्वी, अन्य दर्शनी, दर्शन, भन्य मनुष्यः

पाठ ४ थो.

ञ्रण लिंग.

जेनामां समिकित होय, तेवा माणसने ओळखावनारां ज चिन्ह ते लिंग कहेवाय छे. ते समिकितनां लिंग त्रण प्रकारे छे. सिद्धांत एटले श्री चीतराग प्रभुनी चाणी, तेने सांभळवानी अति अभिलाषा थाय, ते समिकित हुं पहेलुं लिंग छे. कहेवानो आशय एवा छे के, जे महु- एयन सिद्धांत सांभळवानी अभिलाषा थती होय, ते चिन्ह उपरथी एम समज छं के, तेनामां समिकित छे.

चारित्र धर्म एटले व्रत पचखाण करवानी जेने अति अभिलापा थाय, ते समिकतनुं वीजुं लिंग के जे मनुष्य व्रत पचखाणे करवानी अति अभिलापा राखतो होय, तो समजवुं के, ते मनुष्यमां समिकत के.

देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच करवामां सावधान रहेवुं, ते समिकततुं त्रीजुं लिंग छे जे माणस देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच करवामां साव-धान रहेतो होय, तो तेनामां समिकत छे, एम स-मज्युं.

उपर कहेलां त्रण लिंगो ते समकितने ओळखवानां खरेखरां चिन्हो छे. जो हद्यमां समकित होय, तो मा-णसने सिद्धांत सांभळवानी अभिट्यमा थाय छे. ब्रन पचलाण करवानी इच्छा थाय छे, अने तेनाथी देव, गुरु विगेरे उत्तम पुरुषोनी वैयावच करवामां सावधान रहेवाय छे. संक्षेपमां एटछंज समजवानुं के, सिद्धांत श्रव-णाभिलाष, चारित्र धर्माभिलाष, अने देव, गुरु सेवा ए त्रण सम्यवत्वनां लिंगो छे.

सारांश प्रश्नो.

१ लिंग एटले शुं १ २ वत-पचलाण करवानी अभिलाषा ते समिकतनुं वधुं लिंग छे १ ३ वीतरागनी वाणी सांभळवानी इच्छा ते क्युं लिंग छे १ ४ चारित्र धर्म एटले शुं १ अने ते क्युं लिंग १ ते कहो. ५ त्रण लिंगोनां संक्षेपथी नाम आपो

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी. चिन्ह, छिंग, वीतराग, वैयावच, सावधान.

पाठ ५ मो.

द्श प्रकारना विनय.

सम्यक् ज्ञान अने दर्शन विगेरे सघळा गुणोतुं मूळ विनय छे जेनाथी आठ प्रकारनां कर्मने वि एटछे वि- शेषे, स्य एटले दूर करी शकाय, ते विनय कहेवाय छे. अथवा जे संसारनो लय करे, ते विनय कहेवाय छे. सेवा, यक्ति, वहु मान करवा, अंदरनो प्रेम वताववो, गुण गादा, अने अवगुण छोडवा, ए वधां विनयनां लक्षण छे. ते विनय दश प्रकारे थाय छे. १ अरिहंत देवनो विनय, २ सिद्ध भगवान्नो विनय, ३ जिन प्रतिमानो विनय, ४ श्रुत धर्मनो विनय, ५ चारित्र ध-र्मनो विनय, ६ सर्व साधुनो विनय, ७ आचार्यनो विनय, ८ उपाध्यायनो विनय, ९ चतुर्विध संघनो वि-नय, अने १० सम्यग् दर्शननो विनय-एम तेना दश पकार पडे छे. देवनी चोराशी पकारनी, अने गुरुनी तेत्रीश प्रकारनी आशातना टाळवी—ए पण विनयमां गणाय छे.

विनयना बीजी रीते पांच प्रकार पण थइ शके छै १ दर्शन विनय, २ ज्ञान विनय, ३ चारित्र विनय, ४ तप विनय, अने ५ औपचारिक विनय—एवां तेनां नाम छे दर्शनमां कहेला धर्मास्तिकायादि पदार्थ उपर अद्धा करवी, ते पहेलो दर्शन विनय कहेवाय छे ते पदार्थनुं ज्ञान मेळववुं, ते वीजो ज्ञान विनय कहेवाय छे किया करवी, ते त्रीजो चारित्र विनय गणाय छे, अने सम्यक् रीते तपस्या करवी, ते चोथो तप विनय कहेवाय छे पांचमा औपचारिक विनयना व भेद छे १ प्रतिरूप विनय अने २ अनाज्ञानना विनय तमां

मितरप विनयना त्रण मकार छे. १ कायिक मितरप विनय, २ वाचिक मितरप विनय, अने ३ मानसिक मितरप विनय.

तेमां पहेला कायिक मित्रिण विनयना आठ प्रकार छे. १ अभ्युत्थान, २ अंजलिबंध, ३ आसन प्रदान, ४ अभिग्रह, ५ कृति कर्म, ६ शुश्रुषा, ७ अनुगमन, अने ८ संसाधन—एवां तेमनां नाम छे. गुणवान् जननी तरफ उठी सामा जवं, ते अभ्युत्थान, तेनी सामे हाथ जोडी उभा रहेवुं, ते अंजलिबंध, तेमने आसन आपवं, ते आसन प्रदान, तेमनी चीज—वस्तु लइ, ठेकाणे राखवी, ते अभिग्रह, तेमने वंदन करवं, ते कृति कर्म, तेमनी आज्ञा सांभळ्वा तैयार रहेवुं, ते क्रुश्रूषा, तेमनी पाछळ जवं, ते अनुगमन, अने तेमनी पगचंपी करवी, ते संसाधन कहेवाय छे. आ प्रमाणे काथिक विनयना आठ प्रकार थाय छे.

वाचिक प्रतिरुप विनयना चार प्रकार छे. १ हित, २ मित, २ अपरुष, अने ४ अनुपाति—एवां तेनां नाम छे. हित एटले हितकारी वोलवुं, मित एटले खप पूरतुं वोलवुं, अपरुप एटले मधुर वोलवुं, अने अनुपाति एटले अनुसरतुं वोलवुं. आवी रीते वाचिक प्रतिरुप विनयना चार भेद छे.

मानसिक प्रतिरुप विनयना वे भेद छे, १ अङ्गर

मनोनिरोध, अने २ कुज्ञळमन ऊद्दीरणा-आवां तेनां नाम छ. अजुज्ञळ मननो निरोध करवो, एटले कोइनुं भुंडं चितवतुं निह, ते अजुज्ञळ मनोनिरोध कहेवाय छे, अने सर्वनुं भलुं चितवतुं, ते कुज्ञळमन ऊद्दीरणा कहेवाय छे. आ प्रांतरुप विनय बीजानी अनुहत्ति करवारुप छे, एटले बीजाने अनुसर्गन ते विनय थइ ज्ञके छे, तेथी केवलज्ञानी प्रतिरुप विनय करना नथी, तेओ अप्रतिरुप विनय हरे छे.

अंपचारिक विनयनो वीजो भेद जे अनाशातना विनय छे, तेना वावन भकार थाय छे. तीर्थकर, सिद्ध, इ.ल., गण, संघ, किया, धर्म, ज्ञान, ज्ञानी, आचार्य, स्थिवर, उपाध्याय अने गणी ए तेर पदनी आशातना करवाथी द्र रहेवुं, ते तेर पदनी भिक्त करवी, ते तेर पद्तुं वहु मान करवुं, अने ते तेर पदनी प्रशंसा करवी, ए चार प्रकारे तेर पद गणतां वावन प्रकार थाय छे.

आवो विन्य गुण सर्वथी उत्तम छे. विनयथी ज्ञान प्राप्त थाय छे, ज्ञानथी द्र्शन प्राप्त थाय छे, द्र्शनथी चारित्र प्राप्त थाय छे, अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्त थाय छे, एथी सर्व गुणानुं मृळ विनयन छे.

. सारांचा प्रश्नो.

१ विनय ए शब्दनो अर्थ शो थाय १ २ विनयनो क्यां लक्षणों छे ? ३ विनयना सूळ केटला भेदं छे ? तेनां नाम गणावो. ४ देवनी अने गुरुनी केटली केटली आशातना कहेवाय छे ? अने ते आशातना टाळवी, ते शेमां गणाय छे ? ५ विनयना बीजा केटला प्रकार थई शके छे १ ते गणाबोः ६ तपत्रिनय अने दर्शनिवनय शुं छे ? ते समजावो. ७ पदार्थमुं ज्ञान मेळवबुं, अने क्रिया करवी, ते कया विनय कहेबाय छे ? ८ औपचारिक विनयना केटला भेद छे ? ९ मितरूप विनयना केटला भेद छे ? तेनां नाम आपे। १० काथिक प्रतिरूप विन-यना केटला भेद थाय ? ते गणावो. ११ संसाधन, अ-भ्युत्थान अने अनुगमन, ए केवा विनयमां आवे छे, अने तेनो शो अर्थ थाय छे ? ते समजावो. १२ ग्रुणवान् जननी सामे हाथ जोडी उभा रहेबुं, ते केवो विनय ? १३ मोटा जननी आंज्ञा सांभळवा तैयार रहेचुं, ते केवो विनय १ १४ मोटाओने आसन आपवुं, ते केवा विनय १ १५. अभिग्रह अने कृतिकर्प विनयमां शुं करवानुं हे ? १६ वाचिक प्रतिरुप विनयना केटला प्रकार छे १ १७ हित तथा अनुपाति ए केवां वचन कहेवाय ? १८ खप पूरतुं वोलवुं, अने मधुर दोलवुं, ते केवा विनयमां गणाय छे? १९ मानसिक प्रतिरुप विनयना केटला भेद छे १ २० अकुशळ मनोतिरोध अने कुशळमन उद्दीरणा एटछे

शुं ? ते समजाबो २१ अनाशातना विनयना केटला भेद छे ? २२ तेर पद कयां ? ते गणाबो २३ तेर पदने केबी रीते गणतां बावन प्रकार धाय छे ? २४ सर्व गु-णोनुं मृळ विनय छे, ते केबी रीते ? ते समजाबो

ं शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

लय, बहुमान, श्रुतधर्म, चतुर्विध संघ, द्रव्य, हित, मित, अपरुप, अनुपाति, निरोध, उदीरणा, अनुरुत्ति, स्थिवर, गणीः

पाठ ६ हो.

त्रण शुद्धिः

सम्यवत्व मेळववामां त्रण प्रकारनी शुद्धिनी जहर छे. ते शुद्धि ते सम्यवत्वनी शुद्धि कहेवाय छे. ए शुद्धिना त्रण प्रकार छे. १ मनःशुद्धि, २ वचनशुद्धि अने ३ काय-शुद्धि, एवां तेनां नाम छे.

- " आ संसारमां श्री वीनरागनो कहेलो धर्मन सार है. वीड़े वां: सार नधी. " आ प्रमाण मनमां भावतुं, ते मनःशुद्धि कहेवाय है.
 - " किन धर्मनुं आगयन करवाधी कत्याण न होय,

तो बीजा कोनाथी होय ? कल्याण तो श्री वीतरागना धर्म-थीज छे, वीजाथी नथी। '' आ प्रमाणे वचनथी कहेंबुं, ते दचनशुद्धि कहेवाय छे।

" कदि कोइ आवीने मारो, छेदो, भेदो अने अ-नेक प्रकारनी पीडा उपजावो, पण वीतराग विना वीजा-नी आगळ कायाथी मस्तक न नमाववुं, एवी द्रढता, ए कायशुद्धि कहेवाय छे.

आ त्रणे प्रकारनी शुद्धि, ते खरेखरी समिकतनी शुद्धि गणाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ शुद्धि एटले शुं १ २ शुद्धिना केटला मकार छे १ ३ जिन धर्मनुं आराधन करवायीज कल्याण थाय छे, बीजाथी थतुं नथी—आवां वचन केबी शुद्धिमां गणाय छे १ ४ मनःशुद्धि अने कायशुद्धि विषे समजावो।

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी। सार, छेदो, भेदो, द्रहता।

पाठ ७ मो.

पांच दृषण.

सम्यक्त्वना पांच अतिचार, ते तेनां पांच दृपण कहेवाय छे. तेमनां १ शंका, २ कांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ प्रांसा अने ५ संस्तव—एवां नाम छे. वीतरांग कहेलां वचनमां जे संशय करवो, ते शंका नामे पहेलुं दृपण छे. जिनमत विना वीजा मतनी वांछा करवी, ते कांक्षा नामे वीजुं दूपण छे. "धमें जुं फल मळशे के नहीं १" एम संदेह करवो, ते विचिकित्सा नामे त्रीजुं दृपण छे. कुलिंगी एवा पाखंडी लोकोनी प्रशंसा करवी, ते प्रशंसा नामे चोथुं दूपण छे, अने उपर वतावेला पाखंडी लोकोनो परिचय करवो, ते संस्तव नामे पांच हुं दूपण छे.

समिकतना आराधक एवा पुरुषे ए पांच दृपणनो सर्वथा त्याग करवो जोइए.

सारांश प्रश्लो.

१ सम्यवत्वना अतिचार अने दूपणमां तफावन छे के नहीं १ २ सम्यवत्वनां दूपण केटलां छे १ ते द्रेकनां नाम आपी गणावोः ३ संस्तव अने प्रशंसा एटले शुं १ ते समजावोः ४ वीतरागनां कहेलां वचनंमां संशय करवो, अने बीजा मतनी वांछना करवी, ते कयां दूषण कहेवाय? '५ धर्मनुं फळ मळशे के नहीं ? एवा संदेह करवा, ते कयुं दूषण कहेवाय?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी-

कुलिंगी, संस्तव, आराधक

पाठ ८ मो॰

आठ प्रभावक.

सम्यवत्वना आठ प्रभावक छे. जे पुरुष सम्यवत्वना प्रभावने वधारे, ते प्रभावक कहेवाय छे. जे जिनमतनां अने प्रमतनां शास्त्रोनो जाणनार होय, ते पहेलो प्रभावक छे. जे धर्मनो उपदेश आपनार होय, ते बीजो प्रभावक छे. जे न्यायथी वाद करी वादीओनो प्रभाव करे, ते त्रीजो प्रभावक छे. जे निमित्त—शुकन तथा ज्योतिष शास्त्रने जाणनार होय, ते चोथो प्रभावक छे. जे क्षमावंत निर्लोभी अने तपस्वी होय, ते पांचमो प्रभावक छे. जे विद्या मंत्रनो जाणनार होय, ते छहो प्रभावक छे. जे सिद्धसंपन्न होय, एटले आकाशगामनी विद्याए युक्त होय, ते सातमो प्रभावक छे. जे किस होय, एटले अकाशगामनी विद्याए युक्त होय,

गुणधी वर्णन करनारी होय, ते आठमी प्रभावक छे, आ आठ गुणधी मोटा मोटा राजाओन प्रसन्न करी जैनी बनाव, ते प्रभावक जाणवा

आ आठ प्रभावक जिनमतेन दीपावनारा छे हमेशां एवा प्रभावक थवानो उद्यम करवो, के जेथी जिनमतेन दीपावनार थड् शकाय, अथवा तेमना समिकतवाळा गुण जोड्ने एवा प्रभावक पुरुपोनी सेवा करवी

सारांश प्रश्नो.

१ मभावक केटला छे १ २ मभावक कोने कहेवाय १ ३ ज आकाशगामनी विद्याए युक्त होय, ते केटलामी मभावक कहेवाय १ ४ कवि होय ते केटलामी मभावक १ ५ जिनमत अने परमतनां शास्त्रोंने जाणनार केटलामी मभावक १ ६ बीजो मभावक कयो १ ७ ज न्यायधी बाद करे, ते केटलामी मभावक १ ८ धर्मनो उपदेश आ-पनार केटलामो मभावक १ ९ क्षमावन, निलीभी अने तपस्वी होय, ते केटलामी मभावक १ १० ज्योतिः शास्त्रने जाणनारो केटलामी मभावक १ ११ सिद्धसंपन्न एटले थुं १ १२ थुं परे तो मभावक कहेवाय १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपंची.

प्रभावक, परमत, निमित्त, ज्योतिषशास्त्र, सिद्धसंपन्न, आकाशगामीनी.



ं पांच भूषण.

समितिनां पांच भूषण कहेलां छे. भूषण धारण करवाथी जेम शोभा माप्त थाय छे, तेम आ पांच भूषण धारण करवाथी समितित शोभे छे. २ कुशलता, २ म-भावना, ३ तीर्थ सेवा, ४ द्रहता, अने ५ वैयाष्ट्रत्य—ए पांच भूषणनां नाम छे. जिन धर्मने विषे कुशलता राखवी, ते पहेलुं भूषण छे. जिन शासननी मभावना करवी, एटले जिन शासनने दीपात्रवुं, अथवा दृद्धि थाय तेम करवुं, ते बीजुं भूषण छे. तीर्थ सेवा एटले गीतार्थ मुनिराज अने तीर्थनी सेवा करवी, ते त्रीजुं भूषण छे. द्रहता एटले जिन धर्मने विषे स्थिरता राखवी, ते चोथुं भूषण छे. वैयाष्ट्रत्य एटले देवगुरु तथा सिद्धांतनो विनय करवी—वैयावच करवी—ते पांचर्य भूषण छे.

समिकतनां आ पांच भूषणो समिकतने दीपावनारां

हैं। तेना विना समिकित जरा पण शोभतुं नथी, तेथी देरेक श्रावके तें पांच भूपण संपादन करवां जोइए।

सारांश प्रश्नो.

१ भूषण एटले शुं १ २ ते भूषण केटलां छे १ तेनां नाम आयो २ देवगुरु तथा सिद्धांतनो विनय के वियावच्य करवा, ते चयुं भूषण १ ४ तीर्थ सेवा अने गुजळता ए वे भूषण विषे सपजावो ५ जिन धर्मने विषे द्रढता राखवी, ते चयुं भूषण छे १ ६ प्रभावना एटले शुं १ ते समजावो

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ती आएवी.

मभावना, इश्वलता, गीर्ताध, द्रहता, स्थिरताः

पाठ १० मो।

पांच हक्षण.

समितनां शुं उसण छ ? अने " आ जीवणं समिति छ , " एम जी रीते जणाय १ ए मत्येक आव-

के जाणवुं जोइए. ते जाणवाने माटे समकितनां पांच लक्षणो कहेलां छे. ए पांच लक्षणोथी समंकितनं खरेखरू स्वरुप जणाइ आवे छे. ए पांच लक्षणोनां १ उपशम, २ संवेग, ३ निर्वेद, ४ अनुकंपा, अने ५ आस्तिक्यः एवां नाम छे. क्रोध, मान, माया, अने लोभ-ए चार कपायनो त्याग, ते उपदाम नामे समकिततं पहेळं लक्षणा छे. जे जीवमां अनंतातुवंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभनो उपशम देखाय, एटले अपराध करनार उपर पण जेने क्रोध विगेरे तीव्र कवाय उत्पन्न न थायः जो कदि उ-त्पन्न थाय, तो तेने निष्फळ करी दे, एवी शमता जेना-मां जोवामां आवे, ते जीवमां समकित छे, एम जाणवुं, जेना हृदयमां मोक्षनाः सुखनी अभिलाषाः राखवाने लीधे संसार उपर वैराग्य थाय, ते संवेग नामे समिकतनुं बीजुं लक्षणः छेः जेः जीवनेः तेवोः वैराग्यः उत्पन्नः थतोः मालम पड़े, ते जीवमां सम्यक्तव छे, एमः जाणवुं, संसा-रना दुःखथी कंटाळो पामी उदास रहेंचुं, ते निर्वेद नामे समिकतनुं त्रीजुं लक्षण छे. जे जीव संसारनां सुख उपर द्वेष करे, कुटुंव विगेरेनी परतंत्रताना दुःखरूपः गृहस्थावा-समां रहेतां, पण मोक्षनी अभिलाषा करें, ते निर्वेद लक्षणवालाः जीवमां सम्यक्तव छे एम जाणवुं वीजा जीवने दुःखधी निवारण करवानी इच्छा, अर्थात् सर्व जीव उपर दया भाव राखे, ते अनुकंपा नामें समाकतनुं चोथुं लक्षण छे. जेना हदयमां दुःखी जीवने देखी अनुकंपा उत्पन्न थाय,

दु:स्वी जीवनां दुःख दूर करवानी इच्छा थाय, तेमज वीजा जीवन दुःखी जोइ, पोताना मनमां दुःखी थाय, अने पोतानी शक्ति प्रमाणे दुःखी जीवना दुःखने दूर करे, नेवां अनुकंपानां लक्षणथी समजवुं के, ते जीवमां समिकित छे. "श्री वीतराग प्रभुए कहुं, ते सत्य छे, तेमां कंड् पण जुटुं नथी." आवी द्रह आस्था राखवी, ते आस्तिक्य नामे समिकितनुं पांचमुं लक्षण छे. जे जीवमां एवी द्रह आस्ता जोवामां आवे, ते जीवमां सम्यवस्व छे, एम जाणवुं.

ए प्रमाणे उपशम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, अने आस्तिवय—ए पांच लक्षण उपरथी जीवमां रहेन्द्रं सम्य-वन्य ओळखाय छे।

सारांदा प्रश्नो.

? समितनां लक्षणो शुं छे, अने ते केटलां छे?
तेनां नाम गणावो. २ श्री वीतरागनां वचन उपर हृह
आरधा राखवी, ते समितनुं वधुं लक्षण १ ३ उपराम
एटले शुं १ ते समजावो. ४ बीजा जीवने दृःख्यी निवारण करवानी इच्छा, ए पधुं लक्षण १ ५ संवेग एटले
शुं १ ते विष समजावो. ३ संसारनां दृःख्यी बंटाली
इटास रहेतुं. ते वधुं लक्षण १

के जाणवुं जोइए ते जाणवाने माटे समकितनां पांच लक्षणों कहेलां छे. ए पांच लक्षणोथी समंकितनुं खरेखहं स्वरुप जणाइ आवे छे. ए पांच लक्षणोनां १ उपशम, २ संवेग, ३ निर्वेद, ४ अनुकंपा, अने ५ आस्तिक्या एवां नाम छे. क्रोध, मान, माया, अने लोभ-ए चार कपायनो त्याग, ते उपदाम नामे समकिततुं पहेळं लक्षण छे. जे जीवमां अनंतानुवंधी क्रोध, मान, माया, अने लोभनो उपराम देखाय, एटले अपराध करनार उपर पण जेने क्रोध विगेरे तीव्र कवाय उत्पन्न न थायः जो कदि उ-त्पन थाय, तो तेने निष्फळ करी दे, एवी शमता जेना-मां जोवामां आवे, ते जीवमां समिकत छे, एम जाणवुं, जेना इदयमां मोक्षनाः सुखनी अभिलाषाः राखवाने लीधे संसार उपर वैराग्य थाय, ते संवेग नामे समिकतनुं वीजुं लक्षणः छे. जेः जीवनेः तेवोः वैराग्य उत्पन्नः थतोः मालम पडे, ते जीवमां सम्यक्त्व छे, एम जाणवुं, संसा-रना दुःखथी कंटाळो पामी उदास रहेंबुं, ते निर्वेंद नामे समिकतनुं त्रीजुं लक्षण छे. जे जीव संसारनां सुख उपर द्वेष करे, कुटुंव विगेरेनी परतंत्रताना दुःखरुपः गृहस्थावा-समां रहेतां, पण मोक्षनी अभिछापा करें, ते निर्वेद छक्षणवाळां जीवमां सम्यक्तव छे एम जाणवुं, वीजा जीवने दुःखथी निवारण करवानी इच्छा, अर्थात् सर्व जीव उपर दया भाव राखे, ते अनुकंपा नामें समिकतनुं चौथुं लक्षण छे। जेना इदयमां दुःखी जीवने देखी अनुकंपा उत्पन्न थाय;

दु:खी जीवनां दु:ख दूर करवानी इच्छा थाय, तेमज बीजा जीवने दु:खी जोइ, पोताना मनमां दु:खी थाय, अने पोतानी शक्ति प्रमाणे दु:खी जीवना दु:खने दूर करे, तेवां अनुकंपानां छक्षणथी समजवुं के, ते जीवमां समिकत छे. " श्री वीतराग प्रभुए कहुं, ते सत्य छे, तेमां कंइ पण जुटुं नथी।" आवी द्रह आस्था राखवी, ते आस्तिक्य नामे समिकतनुं पांचमुं छक्षण छे। जे जीवमां एवी द्रह आस्ता जोवामां आवे, ते जीवमां सम्यक्त छे, एम जाणवुं

ए प्रमाणे उपशम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, अने आस्तिक्य—ए पांच लक्षण उपरथी जीवमां रहेलुं सम्य-कत्व ओळखाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ समितिनां लक्षणो शुं छे, अने ते केटलां छे १ तेनां नाम गणावो. २ श्री वीतरागनां वचन उपर द्रह आस्था राखवी, ते समितिनुं नयुं लक्षण १ ३ उपशम एटले शुं १ ते समजावो. ४ बीजा जीवने दुःखंथी निवारण करवानी इच्छा, ए नयुं लक्षण १ ५ संवेग एटले शुं १ ते विषे समजावो. ३ संसारनां दुःखंथी कंटाली उदास रहेवुं, ते नयुं लक्षण १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

जपशम, संवेग, निवेंद, आस्तिक्य, अनंतानुवंधी, निष्फळ, अनुकंपा, शक्तिः

पाठ ११ मो

छ यतना.

समिकतने शुद्ध रीते राखवा यत्न करवो, ते समकितनी यतना कहेवाय छे जो दरावर यतना करवामां
आवी होय, तो समिकत नाश पामतुं नथी ए यतनाना
छ प्रकार छे १ परतीर्थिकादि वंदन, २ परतीर्थिकादि
नमस्करण, ३ परतीर्थिकादि आलापन, ४ परतीर्थिकादि
संलापन, ५ परतीर्थिकादि अश्चनादि दान अने ६ परतीर्थिकादि गंध पुष्पादि भेषण—आवां तेनां छ प्रकारनां
नाम छे.

दीजा मतवाळाओने, तेमना देवने अने तेमणे ग्रहण करेली प्रतिमाने वंदन करवुं नहीं, एटले तेमनी आगळ वे हाथ जोडवा नहीं, ते परतीथिकादि वंदन नामें पहेली यतना छे. वीजा मतवाळाने नमस्कार करवो नहीं, एटले तेमनी आगळ माथुं नमाववुं नहीं, ते परतीथि-कादि नमस्करण नामें बीजी यतना छे. वीजा मतवा-

ळानी साथे प्रथम बोलवुं नहीं, ते परतीधिकादि आलापन नामे त्रीजी यतना छे तेमनी साथे वारंवार
बोलवुं नहि, ते परतीथिकादि संलापन नामे चोथी
यतना छे तेमने धमे बुद्धिए खावा पीवानुं आपवुं नहि,
ते परतीथिकादि अद्यानादिदान नामे पांचमी यतना
छे तेमने माटे गंध तथा पुष्प मोकलवां नहि, ते परतीथिकादि गंध पुष्प प्रेषण नामे छही यतना छे

आ छ प्रकारनी यतना राखवाथी समिकत द्रह थाय छे, अने तेना गुणमां वधारो थाय छे, वे हाथ जोडीने नमवुं, ते वंदन, अने माथुं नमाववुं, ते नमस्कार कहेवाय छे, प्रथम बोलवुं, ते आलापन, अने वारंवार बोलवुं, ते संलापन कहेवाय छे,

सारांदा प्रश्नो.

१ समिकतनी यतना एटले शुं १ २ यतनाथी शो लाभ थाय छे १ ३ यतना केटला प्रकारनी छे १ तेना बधा भेदनां नाम आपो ४ परतीर्थिकादि गंध पुष्प प्रे षण—एटले शुं १ अने ते केटलाभी यतना छे १ ५ बी-जा मतवालाओने, तेमना देवने, अने तेमणे ग्रहण करेली प्रतिमाने बंदन करबुं निह, ए कइ यतना १ ६ परतीर्थि-कादि अञ्चनादि दान—ए केटलाभी यतना, अने तेनो अर्थ शुं १ ७ बीजा मतवालाने नमस्कार करवो नहीं, ते कइ यतना ? ८ परतीर्थिकादि संलापन ए यतनानो अर्थ शुं ? ९ बीजा मतवाळानी साथे प्रथम बोलवुं नहि, ते कइ यतना ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

यतना, परतीर्थिकादि, वंदन, नमस्करण, आलापन, संलापन, अञ्चनोदि दान, गंध पुष्पादि, प्रेष्ठण, धर्म बु-दि, द्रढ.

पाठ १२ मो

छ आगार.

कोइ मुक्केछीने छड़ने श्रांकने कांड पण अनुचित काम करतुं पड़े, ते वखते जे कांड पण न चालतां छुट राखवी, ते आगार कहेबाय छे, तेने संस्कृतमां आकार (अपवाद) कहे छे, ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आपवामां आवे छे, त्यारे गुरु तेने आगार वतात्रे छे, ते आगारना छ प्रकार थाय छे, ते वखते गुरु तेने जणांवे छे के, जो छ कारणोमां तमारे कांइ अनुचित काम करतुं पड़े, तो आ छ आगार राखी शकाय, जेथी करीने तमारुं सम्य-कत्व कलंकित यशे नहीं। राजाना कहेवाथी करवुं पढे, ते राजानियोग नामे पहेलो आगार छे. कदि राजा जोरावरीयी अहावित काम करावे, तथी सम्यक्त्वमां दूषण लागे नहीं-

गण एटले ज्ञातिनो समूह अथवा कि तेमना के हेवाथी करवुं, ते गणाभियोग नामे की बातान है। ज्ञाति के पंच अनुचित काम करवानी कर गढ़े हैं। प्रसंगे जो ते काम करवुं एडे, ते हैं कि कि सम्बद्धाः मां दूषण लागतुं नथी।

निश्रह नामे पांचमो आगार छे माता पिताना आग्रहथी कांइ अनुचित काम करबुं पढे, तथा धर्माचार्यने कोइ दृष्ट संकट आपतो होय, तथा जिन मितमानुं खंडन करतो होय, के जिन मंदिर तोडतो होय, तेओनी रक्षाने माटे जो कांइ अनुचित काम करबुं पडे, तो सम्यक्त्वमां दृषण छागतुं नथी.

द्वित एटले आजीविका तेने माटे कांइ विरुद्ध काम करवुं पड़े, ते कांतारवृत्ति नामे छहो आगार छे दुकाळ विगेरे आपत्ति आवी पड़े, त्यारे आजीविकाने माटे मि-ध्या द्रष्टिने अनुसारे चालवुं पड़े, अथवा कांइ विरुद्ध आचरण करवुं पड़े, तेथी करीने कांइ दूषण लागतुं नथी.

आ छ वस्तुना आगारने छ छींडी पण कहे छे. पोतानी मरजी न छतां वीजाओना कहेवाथी छाचारीवडे आ छ आगार सेववाथी सम्यक्त्वने कांइ पण दूषण छा-गतुं नथी.

आ छ आगार शिवाय बीजा चार आगार पण जुदा गणेला छे. कोइ व्रतना पचलाण लेती वखते ते-ओनो उचार करवामां आवे छे, ते नीचे प्रमाणे छे—

कोइ विरुद्ध कार्य अजाणपणे जुपयोग आप्या विना यइ जाय, ते पहेलो आगार छे. तेने माटे "अनत्थणा भोगेणं" एवो उचार धाय छे. कोइ विरुद्ध काम अकस्मात् थइ जाय, मनमां जा-णतां छतां योगनी चपळताथी अथवा निरंतरना अभ्यास-थी थइ जाय, तो ते बीजो आगार छे. तेने माटे " सहस्सागारेणं" एवो उचार थाय छे.

जे काम करवाथी सम्यक्त्वमां दूषण लागे छे, पण तेमां घणोज मोटो लाभ रह्यो होय, अथवा कोइ मोटानी आज्ञाथी खास करवुं पढे तेम होय, तो ते त्रीजा आगार छे. तेने माटे " महत्तरागारेणं " एवा उचार थाय छे.

जे काम सर्व समाधि न्यत्ययथी एटले मोटा सिन्नपात विगेरे रोगोने प्रसंगे वावरा वनी जवाथी, तथा दृद्धावस्था-मां स्मृतिनो भंग थवाथी, तथा सर्प विगेरेना ढंशने लीधे असमाधि थइ जवाने प्रसंगे करवुं पढे, ते चोथो आगार छे. तेने माटे " सच्च समाहिचत्तिआगारेणं" एवा उचार थाय छे.

आ चार आगारथी व्रतनो तथा सम्यक्त्वनो भंग थतो नथी। तेवे प्रसंगे कदाग्रह राखी, आर्च ध्यानमां प्राणनो त्याग करवो, ते योग नथी। " गमे ते थाय, पण जे नियम लेवामां आव्युं, ते कदापि तोडवुं नाहि।" एवो अति आग्रह राखवो न जोइए। कारण के जो पहेले-थी आगार राख्या होय, तो पछी व्रतनो भंग थतो नथी।

सारांश प्रश्नो.

१ आगार एटले शुं है ते समजाबो र आगारने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ३ आगारना मुख्य केटला प्रकार छे ? ४ छ आगारनां नाम आपो. ५ आजीविकाने माटे विरुद्ध काम करवुं पड़े, ते कयो आगार कहेवाय ? ६ गुरुनिग्रह आगार केवी रीते छागे ? ते कहो. ७ रा-जाना कहेवाथी विरुद्ध करवुं पढे, ते कयो आगार 🏗 ८ गणाभियोग आगार एटले शुं १ ते समजावो ९ देव के व्यंतरना आवेशयी अनुचित काम करवुं पडे, ते कयो। आगार १ १० वलाभियोग आगार विषे समजावो. ११ छ आगारने बीजा कया नामथी ओळखावे छे ? १२ छ आगार शिवाय वीजा आगार छे के निह १ जो छे तो ते केटला छे ? १३ मोटा रोगोने प्रसंगे वावरा थइ जवाथी जे आगार छागे, तें केंटछामो आगार, अने तेने माटे शो उच्चार छे ? १४ " अनत्थणा भोगेणं " ए उचार केवा आगारने माटे छे ? १५ जे काम विरुद्ध: होय, पण तेमां घणा मोटो लाभ रह्यो होय, ते केटलामी आगार ? अने तेने माटे केवो उचार छे ? १६ " सह-स्सागारेणं " ए उचार केका आगारने माटे छे ? १७ उपरना छ आगार अने आ चार आगारथी शेनो भंग न थाय ? १८ आगार राखवाथी शो लाभ थाय छे 😲

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अनुचित, कलंकित, गण, म्लेच्छ, क्षेत्रपाळ, व्यंतर, मरणात, आजीविका, आपित्त, छींडी, उचार, उपयोग, समाधि, व्यत्यय, स्मृति, असमाधि, कदाग्रह, आर्त्त ध्यानः

पाठ १३ मो.

छ भावनाः

समिकतने छ वस्तु साथे सरखाववानी भावना करवी, ते भावना कहेदाय छे. झाडनुं मूळ, पेसवानुं द्वार, महेल्लो मूळ पायो, तत्वनो निधि (भंडार), जीवितनो आधार अने रसनुं पात्र, एवी छ उपमा चारित्रनी साथे आपीने ते भावना भाववामां आवे छे. " समिकत चारित्र धर्मरुपी झाडनुं मूळ छे"—आ प्रमाणे भाववुं, ते पहेली भावना छे.

- " समिकत चारित्र धर्मरुपी नगरमां पेसवानुं द्वार छे. " आ ममाणे भावनुं, ते बीजी भावना छे.
- " समिकत चारित्र धर्मरुपी महेलनो मूळ पायो छे. " आ प्रमाणे भावतुं, ते त्रीजी भावना छे.
 - " समक्तित ज्ञान, चारित्र विगेरे गुणरूप तत्वनो

निधि-भंडार छे. " आवी रीते भावबुं, ते चौथी भा-वना छे.

" समिकत चारित्ररुपी जीवितनो आधार छे." आ प्रमाणे भाववुं, ते पांचमी भावना छे.

" समिकत श्रुत चारित्ररुपी रसनुं पात्र छे. " आ प्रमाणे भावनुं, ते छद्वी भावना छे.

आ समिकतनी छ भावना, समिकतनी दृद्धि कर-नारी छेः तथी समिकतधारी श्रावके हमेशां ते भावना भाववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ भावना एटले शुं १ २ भावनाना केटला प्रकार है ? ३ ते छ भावनाओने कई कई वस्तुनी साथे सरखावी छे, ते वस्तुओनां नाम आपो. ४ समिकतिने रसना पात्रनुं रुपक आप्युं छे, ते कई भावना छे १ ५ " समिकति चारित्र धर्मरुपी झाडनुं मूळ छे." ए केटलामी भावना १ ६ समिकतिने जीवितनो आधार कहेल छे, ते कई भावना १ ७ वीजी भावनामां समिकतिने कोनुं रुपक आपेषे छे १ ८ " समिकत ज्ञान चारित्र विगेरे गुणरुप तत्वनो निधि छे," ए केटलामी भावना १ ९ त्रीजी कई भावना छे १ १० आ समिकतिनी भावना भाववाथी शो लाभ छे १

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजूती आपवी। मूळ, द्वार, निधि, जीवित, समकितधारी।

पाठ १४ मो

छ स्थान.

समिकतमां छ स्थान गणाय छे. ए छ स्थान जी-वने उद्देशीने कहेलां छे. ए छ स्थानो आस्तापूर्वक मान-वाथी समिकत गुणने वधारे छे.

- ' जीव छे, ".एम जे मानवुं, ते पहेछुं स्थान छे. जीव कहो वा आत्मा कहो, ए वंने एकज वस्तुनां नाम छे. ते जीवनुं मुख्य लक्षण चैतन्य छे.
- " जीव नित्य छे, " एम जे मानवुं, ते वीछुं स्थान छे, जीवनो अत्यंत अभाव थतो नथी, वेथी तेने नित्य कहो छे,
- " जीव कमोंनो कर्ता छे, " एम जे मानवुं, ते त्रीजुं स्थान छे, जीव सारां अने नटारां कर्मीनो कर्ता छे, मिथ्यात्व, अविरित, प्रमाद, अने योगथी मिलन थइने ते वेदनीयादि कर्मीनो कर्ता छे.
 - " जीव कमोंनो भोगवनार छे, " एवी रीते जे

मानवुं, ते चोथुं स्थान छे. जीव करेलां कर्मोनां सुख दुःख विगेरे फळनो भोक्ता छे.

- " जीवने मोक्ष छे, " एम जे मानवुं, ते पांचमुं स्थान छे. सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, अने सम्यक् चा- रित्र—ए त्रण रत्नथी छत्कुष्ट पुरुषार्थ करी, कर्मना बधा अंशने दूर करनारा जीवनो मोक्ष थाय छे.
- " जीवने मोक्षनो उपाय छे, " एटले जीवने कर्म रहित थवानो उपाय छे, एम मानबुं, ते छठुं स्थान छे. ते उपाय सम्यग् ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र छे.

सारांचा प्रश्नो.

१ स्थान केटलां छे १ २ स्थान कोने छहेशीने कहेलां छे १ ३ जीवने मोक्षनो उपाय छे एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान १ ४ मोक्षनो उपाय शुं १ ५ 'जीव छे ' एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान १ ६ जीव अने आत्मा केवी वस्तु छे १ ७ जीवनुं मुख्य लक्षण शुं छे १ ८ '' जीवनो मोक्ष छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान १ ९ मोक्ष केवा जीवने थाय छे १ १० त्रण रत्नो कयां १ ११ '' जीव नित्य छे " एम मानवुं, ते कयुं स्थान छे १ १२ जीव नित्य शा माटे छे १ १३ '' जीव क-मोंनो भोगवनार छे " एम मानवुं, ते केटलामुं स्थान

छे १ १४ जीव कयां फलनो .भोक्ता छे १ १५ " जीव कभीनो कर्ता छे " एम मान्त्रं, ते केटलाग्रं स्थान छे १ १६ जीव केवां कमीनो कर्त्ता छे १ १७ जीव शेनाथी मिलन थइने वेदनीयादि कमीनो कर्त्ता छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्थानः उद्देशीने, आस्तापूर्वक, चैतन्य, अत्यंत अ-भाव, अविराति, योग, वेदनीआदि, भोक्ता, पुरुषार्थ, अंतः

पाठ १५ मो.

समिकतना सडसठ बोल विषे.

कविता.

सवैया एकत्रीशा.

भणे विचारे जे नव तत्वो करे भक्तिथी मुनिवर सेव, पासथ्थादि भ्रष्ट तणी राखे नहीं संग कर्यानी टेव; दूर रहे भिथ्या दृष्टिधी ए भेदो श्रद्धाना चार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार. मन इच्छा सिद्धात अवणनी व्रत चारित्र तणो अभिलाष, देव गुरु आदि उत्तमनी वैयावच करवानी आश; ए त्रण छे समिकतनां लिंगो धारण करवा धरता प्यार, ते समिकत गुणधारी आवक समजी ल्यो समिकतनो सार. २

श्री अरिहंत सिद्ध जिन प्रतिमा चारित्रागम ने अनगार, उपाध्याय आचार्य चतुर्विध संघ अने दर्शन सुखकार; ए दशनो शुभ विनय करें ने ए दश राखे विनय प्रकार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार, ३ मननी वचनतणी कायानी ए त्रण शुद्धि राखे आप, शंका निह राखे जिनवचने परमत वांछा न करे आप; धर्मतणा फळमां नव राखे हृदय विषे संदेह लगार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार, १

जे पाखंडी धर्म कुलिंगी लोको फरता जगविख्यात, करे कदि न पशंसा तेनी मुखथी पेम धरी साक्षात; नव राखे परिचय ए जननो ए पांचे दूषण दुःखकार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार. ५ ज्ञाता जिनमत परमतनो छे धर्म तणो उपदेशक आप, न्याय थकी बदनारो वादी धरे शुकन ज्योतिपनी छाप, तपसी मांत्रिक विद्यासिद्धि आठ प्रभावक ए सुखकार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार. ६ जिनमतमां जे धरे कुशळता शासन प्रभावना करनार, गीतारथ तीरथनी सेवा धर्म विषे दढता धरनार; देव गुरु श्रुत विनय वधारे ए पांचे भूषण भवहार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार. ७ कषाय टाळे उपशम गुणथी शिवसुख इच्छे धरी संवेग, उदास रहे भवथी निवेंदे अनुकंपा धरवानो वेगः जिनवचने आस्ता दढताथी पांचे समिकत लक्षण सार, ते समिकत गुणधारी श्रावक संमजी ल्यो समिकतनो सार. ८ जे परतीर्थी देव अने परतीर्थीनी प्रतिमा कहेवाय, वांदे नहि करजोडी तेने नहीं मस्तकथी नमन करायः तेनी साथे प्रथम नं बोले वारंवार वदे न लगार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो सम्कितनो सार. ९ धर्मबुद्धिए परतीर्थिकने खानपान नव आपे लेश, गंध पुष्प तेने नव अपे राखी धर्म तणो उद्देश; ए यतना छ समिकतनी छो राखो नित्ये समिकत धार, ते समिकत गुणधारी श्रांवक समजी ल्यो समिकतनो सारः १० राजा ज्ञाति पंच अने वळवंत देवनो जे अभियोग, आजीविकाने गुरु निग्रहथी विपरित करवानो संयोग; होय अनिच्छा लाचारीथी करतां ए छे छो आगार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समिकतनो सार ११ समिकत छे चारित्र दृक्षनुं सूळ मनोहर जे मुखकार, समिकत छे चारित्र नगरमां मवेश करवानुं शुभ द्वार; समिकत छे चारित्र महेलनो दढ पायो धरतो विस्तार,

ते समकित गुणधारी श्रावक समजी ल्यो समकितनो सार. १२

जीव वस्तु छे जीव नित्य छे जीव कर्मनो छे करनार, जीव कर्मनो भोगवनारो मोक्ष जीवने छे छुखकार; मोक्ष तणो छे उपाय तेने ए छ स्थान तणोज प्रकार, ते समिकत गुणधारी श्रावक समजी हथो समिकतनो सार. १३

दोहा.

सडसट पूरा बोल ए, समिकतना निरधार, कंट करे ज प्रेमथी, ते पामे भवपार. १

ं शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

पासध्थादि, श्रद्धा, श्रवण, अभिलाष, चारित्रागम, परमत वांछा, गीतास्थ (गीतार्थ), तीरथ (तीर्थ), भवहार, उद्देश, समिकतधार, अभियोग, ग्रुरु निग्रह, विपरीत (काम)

पाठ १६ मो.

पचलाण भाग १ लो.

पचलाण ए प्राकृत भाषानो शब्द छे तेने संस्कृत भाषामां प्रत्याख्यान कहे छे प्रत्याख्यान ए शब्दमां त्रण पद रहेलां छे पहेलुं पद प्रति, वीजुं पद आ, अने

त्रीजुं पद आख्यान-ए त्रण पद मळीने प्रत्याख्यान ग्रव्द थयेलो छे. प्रति एटले तर्फ, आ एटले मर्था-दा-हद, अने आख्यान एटले कहेवुं, एवा तेना जुदा जुदा अर्थ थाय छे ते वधानों भावार्थ एवो छे के, अविरातिपणा तरफ आगारनी मर्यादा करी कहेवं, ते प्रत्याख्यान अथवा पच्चाण कहेवाय छे. ते पच्छाणना शूळ गुणरुप अने उत्तर गुणरुप एवा वें भेद छै। मुनिने पंचमहाव्रत लेवां, ते मूल गुणनुं पचलाण छे, अने शुद्ध आहार लेवा विगेरे जे करवुं, ते उत्तर गुणतुं पचखाण छे. श्रावकने पांच अणुव्रतनां जे पचखाण, ते मूळ गुणतुं पच्खाण छ, अने शिक्षाव्रत विगेरेनां जे पचखाण, ते उत्तर गुणतुं पच्याण छे. पच्याण इमेशां साधारण रीते अविरतितुं विरोधी छे, अने अविरति दृर करवानोज तेनो हेतु अथवा उदेश छे.

ते पचखाणनुं उपयोगीपणुं हमेशां उत्तर गुणरुपे रहेल छे. ते उत्तर गुण पचखाणना दश भेद पडे छे. ते दश पकारनां नाम आ प्रमाणे छे—

१ अनागत पचलाण, २ अतिक्रांत पचलाण, ३ कोटी सहित पचलाण, ४ नियमित पचलाण, ५ अनागार पच्चलाण, ६ सागार पच्चलाण, ७ निरवशेष पच्चलाण, ८ परिमाणकृत पच्चलाण, ९ सांकेतिक पच्चलाण, अने

१० अद्धा पच्चखाणः आ दशे प्रकारनां पच्चखाणः, ते । पत्तर गुणनां पच्चखाण कहेवाय छेः

सारांचा प्रश्नो. 🕆

१ पच्चखाण ए केवा शब्द छे १ २ पच्चखाणने संस्कृतमां शुं कहे छे १ ३ प्रत्याख्यान ए शब्दमां केटलां पद छे १ ४ प्रति, आ, अने आख्यान ए त्रणे पदनों जुदो जुदो अर्थ कहो. ५ प्रत्याख्यान अथवां पच्चखाणनो भावार्थ शो १ ६ पच्चखाणना केटला भेद छे १ ७ पच्चखाणने मूळ तथा उत्तर गुणरुपे मुनि तथा श्रावकने मूळ गुणतुं पच्चखाण कयुं १ ९ मिन तथा श्रावकने उत्तर गुणतुं पच्चखाण कयुं १ १० पच्चखाणनो हेतु अथवा उद्देश शो छे १ ११ उत्तर गुण पच्चखाणना केटला भेद छे १ १२ उत्तर गुण पच्चखाणना दश भेदनां नाम आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पाकृत, संस्कृत, मर्यादा, अविराति, आगार, मूळ गुण, उत्तर गुण, शिक्षावत उदेश.

पाठ १७ मो.

पचलाण भाग २ जो.

पर्युपण विगरे पर्व आव्यानी अगाउथी गुरुनी पासे पच्चखाण लड्ने जे तप करवामां आवे, ते पहेलुं अनागत पच्चखाण कहेवाय छे. पर्युषण विगेरे पर्व वीती गया पछी तेज कामना हेतुशी पाछळथी आठम विगेरेना तपने माटे जे पच्चखाण हे, ते बीज़ुं अतिक्रांत पच्चखाण कहेवाय छे. सवारे उपवास प्रमुख व्रत करीने वळी वीजे दिवसे सवारे तेज उपवास विगेरेनुं पच्चलाण करे, एम छह विगेरेनी कांटि मेळवे, एटले एक पचलाण पूरा थयानी चखते बीजा पचलाणनी संधि मेळवे, ते त्रीजुं कोटिसहित पचलाण कहेवाय छे. एकाशणा विगेरेना पचलाण पार्या पहेलां आंविल विगेरे करवां, एटले एकनो छेडो अने बीजानी शरुआत, ते पण कोटि सहित पचखाण थायछे. पोते तंदुरस्त अथवा रोगी होय, पण ते एवं चिंतवे के मारे अमुक दिवसे छट्ट के अट्टम विगेरे तप कर्चुं, पछी गमे तेवुं कारण उपने, तोपण ते निर्धारेला दिवसे ते तप अवश्य करे, पण छोडे नहीं, ते नियंत्रित पचखाण कहेवाय छे. आ पचखाण जे काळे वजरूपभ नाराच संहननवाळा तथा चोदपूर्वी, दशपूर्वी अने जिनकल्पी हता, ते काळे हतुं; हाल तेनो विच्छेद थड् गयो छे. 🗀

ξ

जे प्यताणमां आगार न होय, ते पांचमुं अनागार पच्चलाण कहेवाय छे. आ पच्चलाण पण पूर्व काळेज हतुं, हाल तेनो उच्छेद थह गयो छे. जे पच्चलाणमां आगार होय, ते छट्टं सागार पच्चलाण कहेवाय छे. जेमां अश्चन विगेरे चार प्रकारना आहार अने अनाहार वस्तु सर्वनुं पच्चलाण करवामां आवे, तथा चडविहार विगेरे तथा अनशन करवामां आवे, ते सातमुं निस्वशेष पच्च-लाण कहेवाय छे; जेमां दातिनी संख्या, कोळीयानी संख्या अने घरनी संख्या करे, एटले भिक्षा विगेरेमां दाति, कोळीया अने घरनुं परिमाण करे ते अथवा मग, अडद विगेरे वस्तुओनी भिक्षानो जेमां त्याग करवामां आवे, ते आठमुं परिमाणकृत पच्चलाण कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अनागत पच्चखाण कोने कहेवाय १ २ पर्धुषण पर्व वीती गया पछी तेज कामना हेतुथी पाछळथी आठम विगेरे तपने माटे जे पच्चखाण छे, ते कयु पच्चखाण कहेवाय छ १ ३ कोटि सहित पच्चखाण कोने कहेवाय १ ४ कोटि एटले शुं १ ५ मारे अग्रुक दिवसे अग्रुक तप करवुं, एवो नियम घारी ते कदि पण छोडे नहीं, ते कयुं पच्चखाण कहेवाय छ १ ६ अनागार पच्चखाण कोने

कहेवाय १ ७ जे पच्चखाणमां आगार होय, ते केंद्रं प च्चखाण कहेवाय १ ८ निरवशेष पच्चखाण कोने कहे-वाय १ ९ जेमां दाति, कोळीया अने घरनी संख्या कर-वामां आवे, ते कयुं पच्चखाण कहेवाय १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पर्युषण पर्व, कोटि, वज्ररुषभ नाराच संहनन, चौद पूर्वी, दशपूर्यी, जिनकल्पी, उच्छेद, आगार, अशन अनाहार वस्तु, चजविहार, अनक्षन, दाति, परिमाण

पाठ १८ मो.

पचलाण भाग ३ जो.

(नवमा सांकेतिक पचलाणना आठ भेदः)

फांइपण संकेत एटले चिन्ह करीने पचलाण लेवुं ते नवधुं सांकेतिक पच्चलाण कहेवाय छे. आ पच्चलाण घणुंकरीने गृहस्थने होय छे. कोइ श्रावक पोरसी वि गेरेना पच्चलाण करीने वहार कोइ कामे गयो होय अथवा घरमां वेठो होय, अने पोरसीनो चलत पूरो या गयो होय, परंतु भोजननी सामग्री तैयार यह न होय ते बसते एवो विचार करे के, आटलो बसत मारो प च्चखाण वगरनो रहेशे, ते वखते ते एवो संकेत-चिन्ह करे के, " ज्यां सुधी हुं भूठ वाळी नवकार न गणुं, त्यां सुधी मारे पच्चखाण छे; ते सांकेतिक पच्चखाणनो पहेलो भेद छे. वळी सुद्रिका धारी राखवा सुधीनो नियम ते बीजो भेद छे. गांठ बांधी राखवा सुधीनुं पच्चखाण धारे ते त्रीजो भेद छे. ज्यां सुधी घरमां होय, त्यां सुधी धारे, ते चोथो भेद छे.

ज्यां सुधी शरीरना परसेवानां टीपां नीकळे, त्यां सुधी धारे ते पांचमो भेद छे. ज्यां सुधी श्वास छेवाय, त्यां सुधी धारे ते छहो भेद छे. ज्यां सुधी पात्र विगेरेने पाणीनां टीपां सूकाय, अथवा हाथ विगेरे सूकाय, त्यां सुधी धारे, ते सातमो भेद छे. ज्यां सुधी दीवानी ज्योति रहे, त्यां सुधी धारे, ते आठमो भेद छे.

आ प्रमाणे सांकेतिक पच्चखाणना आठ भेद कहेला छे. कदि पोरसी विगरे पच्चखाण न करे, अने केवळ अभिग्रहज करे तो गांठ विगरे न छोडे, त्यां सुधी तेने पच्चखाण थाय. तेथी आ सांकेतिक पच्चखाण जेम वीजा पच्चखाणोनी वचमां थाय छे, तेम अभिग्रहने विषे पण थइ चके छे. साधुने पण जो कोइ स्थानके ज्यां सुधी गुरु विगरे न आव्या होय, त्यां सुधी अथवा सागारिक विगरे कांइ कारण होय, त्यारे पण आ अभिग्रह संकेत पच्चखाण थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ संकेतिक पच्चखाण कोने कहेवाय ? २ संकेत एटले ग्रं १ ३ आ पच्चखाण कोनाथी करी शकाय छे १ ४ आ पच्चखाणना केटला भेद छे १ ५ पहेला भेदमां शुं आवे छे १ ६ मुद्रिका पहेरी राखवा सुधीतं पच्चलाण धारे, ते केटलामो भेद छे ? ७ सांकेतिक पच्चलाणनो त्रीजो भेद कयो ? ८ घरमां होय, त्यां सुधी धारे ते केटलामो भेद छे १ ९ सांकेतिक पच्चखाणनो पांचमो भेद कयो छे १ १० ज्यां सुधी श्वास लेवाय, त्यां सुधी धारे ते कयो भेद छे? ११ सांकेतिक पच्चखाणनो सा-तमो भेद कयो छे १ १२ दीवानी ज्योति रहे, त्यां सुधी धारे ते कयो भेद गणाय छे १ १३ सांकेतिक पच्चखाण अभिग्रहने विषे थइ शके के नहीं १ १४ आ पच्चलाण साधुने पण क्यारे थाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

संकेत, पोरसी, सामग्री, ज्योति, अभिग्रह, मृद्रिका-

पाठ १९ मो.

पचलाण भाग ४ थो.

(दशमा अदा पचलाणना दश भेद.)

जेमां वे घडी सथा पोरसी विगेरेना काळना प्रमा-णथी पचलाण लेवामां आवे, ते दशमुं अद्धा पचलाण अथवा काळ पच्चलाण कहेवाय छे. ते अद्धा पचलाणना दश भेद छे १ नोकारसी, २ पोरिसी, साहुपोरसी, ं ३ पुरिमहु, ४ एकाशण, ५ एकलटाणुं, ६ आंबिल, ७ अ-भक्तार्थ, ८ चरिम, ९ अभिग्रह, अने १० विगइ, एवां तेनां नाम छे जे नवकार कहीने पारवामां आवे, अने जिनुं वे घडीनुं प्रभाण छे, ते पहेछं नोकारसी पच्छाण कहेवाय छे. एक पोहोर दिवस सुधीतुं जे पचलाण ते बीजुं पोरसी पचलाण कहेवाय छे. साहुपेरसी एटले दोढ पोहोरनुं पचलाण पण तेमां आवी जाय छे. बे पोहोरत्रं पचलाण ते त्रीजं पुरिषह पचलाण कहेवाय छे. पुरिमहुनुं बीजं संस्कृत नाम पुरिमार्द्ध एवं छे. एकाशणे बेसीने एकज वार खावानुं नियम ते चोधुं एकासणुं पचलाण कहेवाय छे. एकज वार अने एक अंगज हाले तेवी रीते खावुं, ते पांचमुं एकळठाणुं पश्चाण कहेवाय छे. आ पश्चालामां पाणी पण एकज वार पीवाय छे.

र ऐक्सपुरं, एकळठाणा, आसंबिस, उपवासमा पाणी उन्ने पीमाय के

जेमां विगय तथा निवीशाता खवाय नहीं, अने छुखं रांबेछं अनाज पाणीमां धोइने खावुं, ते आयंबिल नामे छुढुं पचलाण कहेनाय छे. जे उपवासनुं पचलाण ते अभक्तार्थ नामे सातमुं पचलाण कहेनाय छे, अभक्तार्थ पचलाणनुं मागधीमां नाम अपभक्ताहे एवं छे. दिवस चित्म अथवा भन चित्म विगेरेनुं जे पचलाण ते आठमुं पचलाण कहेनाय छे.

" ज्यारे अष्ठक कार्य कराय, त्यारेज अष्ठक बस्तु खावी," एवो नियम धारीने जे पच्चखाण लेखुं, ते नयमुं अभिग्रह पच्चखाण कहेवाय छे विग्रह एटले विकार करे तेथी हुध, दहीं, धी, गोळ, तेल, विगरे वस्तुओ खावानुं जे पच्चखाण करे, ते दशमुं विगर पच्चखाण करेवाय छे. आ दशे पच्चखाणोमां काळनी मुख्यता छे, माटे ते अद्धा पच्चखाण कहेवाय छे.

आ वधामां नोकारसी कथी पछी आगळ पोरसी विगरे पच्चखाण यह शके, ते दिना न यह शके, जो कदि नोकारसी कथी दिना पोरसी विगरे करे, तो ते काळ संकेतरप जाणवी, तेने माटे दृद्ध लोकोना संमदा-यमां एम पण कहे छे के, जे नोकारसी पच्चखाण छे, ते रातना चटविहार दिगरेना पच्चखाणतुं दिशा-रूप छे.

सारांश प्रश्नो.

१ अद्धा पच्चाया कोने कहेवाय १ २ अद्धा प-च्चखाणनं बीजं नाम शुं छे ? ३ अद्धा पच्चखाणना केटला भेद छे ते कहो, अने तेनां नाम आपो ४ नोका-रसी पच्चलाण कोने कहेवाय ? ५ एक पोहोर सुधीना पच्चखाणने शुं कहे छे ? ६ साहुपोरसी पच्चखाण शेमां गणाय छ ? ७ पुरिमह पच्चखाण एटले शुं ? ८ पुरिम-हुनुं संस्कृत नाम शुं छे ? ९ एकासणानुं पच्चखाण केटलामुं कहेवाय छे ? १० एकलठाणुं पच्चखाण एटले शुं ? ११ आयंविछ पच्चखाण एटले शुं ? १२ अभक्ता-र्थ पच्चखाणनो अर्थ शो, अने तेनुं बीजुं नाम शुं छे ? १३ आठमुं पच्चखाण कयुं कहेवाय छे १४ अमुक कार्य कराय, त्यारेज अमुक वस्तु खावी, ए पच्चखाणनुं नाम शुं १ १५ विगइ पच्चखाण एटछे शुं १ १६ आ दशे पुच्चखाणोमां मुख्यता कोनी छे १ १७ नोकारसी पुच्च-खाणने माटे दृद्ध लोकोनो शो संप्रदाय छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

एकाशणुं, अंग, दिवस चरिम, भव चरिम, अभिग्रह, विकार, भंग, संकेतरुप, संपदाय, शिक्षारुप, विगइन

पाठ २० मो.

पचलाण करवानुं फळ.

पच्चखाण करवाथी श्रावकने सार्छ फल मले हैं।
कोई पण काम आपणाधी स्वाभाविक रीते सार्छ थई जाय,
पण जो ते पच्चखाणनो नियम लईने करवामां आव्युं
होय, तो तेतुं फल मले छे, अने नहीं तो ते नकातुं
धई णाय छे। दाखला तरीके नोकारसीनुं पच्चखाण न
कुं होय, तोएण आपणे अष्टुक वस्तत पछी स्वाभाविक
रीते कांई पण आहारपाणी वापरीए छीए, पण जो
नोकारसीनुं पच्चखाण लई, तेने नवकारधी पारीने ते
पापरीए तो आपणने सार्छ फल मले छे, माटे दरेक
श्रावके पच्चखाण लेवानो उत्तम नियम राखवो जोइए.

पच्चलाण लेवाथी आलोक अने परलोक वक्ते कुं फळ मले छे. आ लोक हुं पण धम्मिलकुमारे मेळव्छुं इतुं, फेनी कथा धम्मिलना रात्तगां मख्यात छे, अने परलोक मुं फळ दामनक नामे एक वेपारीने मळ्छुं इतुं. दामनक नामे एक वेपारी राजगृह नगरमां थयो हतो. ज्यारे ने आठ वपनी हतो, त्यारे मरकीना रोगधी तेतुं वधुं कुटुंच नाश पामी गछुं इतुं. पछी दामनक एकलो दुःली यह एक सागरद्य नामना वेपारीने घेर रही हतो. एक यत्वते फोर् ये साधु सागरद्य वेपारीने घेर भिक्षाने मोटे आवी

चड्या; त्यां दामनकने जोइ तेमांथी एक साधु बोल्या के, आ छोकरो आ घरनो धणी थशे. आ वात ग्रप्तरीते सागर-दत्ते सांभली, तेथी तेने दामनक उपर इष्यी उत्पन्न थइ, अने तेने छुपीरीते मारी नाखवा चांडालने जणाव्युं. वनमां एकांते चांडाल मारवा लइ गयो, पण तेने दया आववाथी तेनी टचली आंगळी कापी लड्ड सागरदत्तने एंधाणी तरींके आपी, अने दामनकने छोडी मूक्यो दामनक अय पामीने त्यांथी नाशी छुटयो. फरता फरतो तें सागरदत्तना वसावेला गोकुळ गाममां आवी चड्यो. गोक्ळपतिए ते वाळकने स्वरुपवान् जोइ पोताना पुत्र तरीके राख्यों अनुक्रमे बाळक युवान थयो, त्यारे सा-गरदत्त शेठ त्यां आव्योः तेणे दामनकने ओळखी लीधो-पछी तेने कोई कार्यमुं बहानुं करी एक पत्र छखी पोताना पुत्रनी पासे मोकल्यो, अने तेमां तेने विष आपवाने छख्युं. पत्र लइने दामनक चाल्यो, त्यां रस्तामां वाडीनी अंदर कोइ कामदेवनुं मंदिर आव्युं, तेमां तेण विश्राम लीधो, अने ते त्यां सूइ गयो; त्यां सागरदत्तनी विषा नामनी दीकरी ते मंदिरमां वर मेळववाने कामदेवनी पूजा करवा आवी. आ सुंदर कुमारने स्तेलो जोइ तेनी उपर मोह पामी गइ-तेनी पासे पत्र हतो ते वांच्यो, तेमां पोताना पिताना अक्षर ओळख्या. तेणीए पिताना छेखमां भूल जाणी, विषने ठेकाणे काजळनो कानो वधारी विषा कर्युः पछी ते त्यांथी चाली गइ, अने थोडी वार पछी दामनक

जागी उठयोः ते त्यांथी सागरदत्तने घेर आव्योः सागरदत्तना पुत्रे ते पत्र बांची, तेनी साथे पोतानी बहेन विपाने पर-णावी सागरदत्तना पुत्र साथे दामनकनी मीति थइ, ते वात जाणी सागरदत्त घणोज नाखुक्ष धइ गयोः पंछीः कुळमातानुं पूजन करवा माटे दामनकने मोकल्यो, अने त्यां हेने ठार मारवाने चांडाल राख्या कुळमातानुं पूजन करवानो वखत नठारो हतो, तेवी वेळाए नवा परणेलाने मातानुं पूजन कर्वा मोकलवो, ते योग्य न लागवाधी सागरदत्तनो पुत्र तेनीवतीं पूजन करवाने गयो, त्यां अ-गाउथी संकेत करी रख़िला चांडालोंए तेने मारी नाख्यों. आ वात सांभळी सागरदत्तनी छाती शोकथी फाटी गई, अने ते मरण पामी गयो पछी सागरदत्तना घरनो स्वामी दामनक थयो।

दामनकर्तुं आवं पुण्य पश्चलाणना नियमधी थयुं हतुं. दामनक पूर्व भवे कुलकर हतो, तेण जिनदास ना-मना कोइ श्रावकनी संगतधी साधु पास जड़ मच्छतुं मांस न खावानुं पच्चलाण लीधुं हतुं. एक बखते दुकाळ पडवाधी लोको मांसाहारी थया, एटले लोको ते कुलकरने बळात्कारे उपाटी माछलां पकटवाने पाणीना घरा पासे लाज्या. त्रण दिवस सुधी बळात्कारे ते काम कराज्युं. तेवामां एक माछलानी पांख तुटेली नोइ तेण अनजन लीधुं. पछी ते मृत्यु पामीने आ दामनक यहने अवनयीं हता.

सारांश प्रश्लो,

१ पच्चलाण करवाथी शो लाभ छे १ २ दरेक श्रादके केवी नियम राखवी जोइए ? ३ पच्चखाण छेवाथी आ कोतः तुं फळ कोने घळवं इतं ि ४ पच्चखाण लेवाथी परलोक्ज फळ कोने यळ्युं हतुं ? ५ दामनक कोण हतो ? ६ ते दुःखी थइने कया नगरमां कोने घेर रह्यो हतो १ ७ सागरदत्ते तेने माटे शुं कर्धुं हतुं ? अने ते शायाटे कर्सु इतुं ? ८ दामनकने विषानी साथे कोणे परणाव्यो हतो, अने केबी शिते एरण्यो हती ? ९ विषाए सागरदत्तना पत्रमां केवा शब्दनो जो फेर कर्यो हतो १ १० दामनकने सागरदचे शेलुं पूजन करवा मोकल्यो हतो ? ११ दामन-कते बद्छे कोण पूजन करवा गयुं इतुं १ १२ सागरहत्तुं छेद्रहे शाशी मृत्यु थयुं हतुं ? १२ द्रामनक पूर्व भने कोण हतो, अने तेणे शुं पुण्य कर्धुं हतुं ? ते हकीकत समजावो. १४ हामनक सागरदत्तना घरनो स्वामी कया पुण्यथी पदो हतो ?

खंड २ जो.

पाठ २१ मो.

सदाचार भाग १ हो.

शिक्षक — छोकराओ! आजे तमने सदाचार विषे शीखववानुं छे, माटे तेमां ध्यान आपजी।

छोक्तराओ — साहेव ! अभे वरावर ध्यान आपीर्ध, आप कृपा फरीने सदाचार विषे समजावी.

शिक्षक — छोकराओ ! आचार एटले आचरण, जे सारुं आचरण ते सदाचार फहेवाय छे. सदाचार राख्याधी धर्म सारी रीते जळवाय छे. जेनामां सदाचार होतो नधी, ते माणस धर्मने साथी शकतो नधी. धर्म साधवानी योग्यता शृचि एटले पवित्र रहेवाधी माप्त याय छे. जेनामां अशृचि होय, तेनामां धर्म साधवानी योग्यता आवती नधी. शृचि — पवित्र रहेवानी रीत सदाचार्थी मेळवाय छे. ज्यारे कायानी शृद्धि यह, एटले हृद्य निर्मळ यवाथी मन यचननी शृद्धि यह जाय छे; माटे दरेक आवके सदाचार पळवा जोहण, सदाचारने माटे एक विद्रान लेले छे के, अनाचार राखवाथी मिवनता भावे

छे, अने अति आचार राखवाथी मूर्खता देखाय छे, माटे विचार अने आचार बंनेना योगने सदाचार कहेछे.

आ शरीर हमेशां अशुचिधी भरेछुं छे, तेथी तेनी द्रव्यथी शुद्धि करवानी जरुर छे. छघुनीति तथा वडी-नीतिए जह आव्या पछी राख तथा जळधी हाथ पग थोवा जोइए, झाडे जवानां वस्त्र जुदां राखवां जोइए, व-नतां सुधी तो जंगल जइ आव्या पछी नहाबुं जोइए, ते छतां कदि तेम न बने, तो हाथ पग बराबर साफ करी, कोगळा करी, मोद्धं धोई, बधी जातनी अशुचि टाळकी जोइए.

छोकराओ — साहेव ! हवे अमे सदाचारने माटे समज्या हज्ज पण कांइ ते विषे वीजं समजावी

सारांश प्रश्नो.

१ आचार एटले शुं १ २ सदाचार एटले शुं १ ३ सदाचार राखवाथी शुं थाय छे १ ४ क्यो माणस धर्मने साधी शकतो नथी १ ५ धर्म साधवानी योग्यता क्यारे प्राप्त थाय छे १ ६ केवा माणसमां धर्म साधवानी योग्यता आवती नथी १ ७ सदाचारथी केवी रीत मेळ्वाय छे १ ८ सदाचारने माटे एक विद्वान शुं लखे छे १ ९ द्र-च्यथी शुद्धि करवानी कोने जकर छे १ १० राख तथा

पाणांथी हाय पग क्यारे घोवा जोइए ? ११ जंगल जइ आव्दा पछी श्रं करवुं जोइए ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

आचरण, शृचि, अशुचि, निर्मळ, मिलनता, मूर्खता, लघु नीति, वडी नीवि.

पाठ २२ मो

सदाचार भाग २ जो.

शिक्षक छोकराओ । तमे सदाचारने माटे थोई तो समज्या हशो, हवे ते विषे चथारे समजाई, ते ध्या-नमां राखकोः

सदावारनो बीजो शब्द आचार छ, तेना त्रण भाग पढे छे मननो आचार, वचननो आचार, अने कायानो आचार हमेशां मन चोख्खुं राखवुं, ए मननो आचार पहेवाय छे मननो आचार राखवाथी मन चोख्खुं रहे छे, अने ज्यारे मन चोख्खुं रहे, तो पछी तेमां नटारा विचारो आवता नथी.

छोकराओ — सारेव ! तम फछुं के, मन चोलखुं राखणुं, त्यारे मन चोलखुं न रहे, ए केवी शेते बनवुं इशे १ वळी मन शैनाथी मेर्छ थाय १ ते धर्धु अपने सारी रीते समजावी.

शिक्षक छोकराओं ! खोंडुं ध्यान करवाथी, मनमां कपट राखवाथी, अने खराब विचार लावबाथी मन मेंछुं थइ जाय छे. ज्यारे मन मेंछुं थयुं, एटले मनने। आचार नाश पामे छे, तेथी करीने माणस अनेक जा-तनां नटारां काम करे छे, माटे हमेश मनने चोरूखुं राखवुं, मनने चोरूखुं राखवुं, ए मननो आचार पाळ्यो कहे-वाय छे.

छोकराओ ! बीजो बचननो आचार छे सारां बचनो बोलवां, सत्य बोलवुं, सत्युरुपनां बखाण करवां, बीलवामां नम्रता तथा विनय राखनो, ए बचननो आचार करेवाय छे. बचननो आचार राखनाथी सारां वचनो बोलाय छे, अने सारां बचनो बोलवाथी सारां काम करी शकाय छे. जेओ वचननो आचार राखता नथी, तेओ नठारां बचन बोले छे. तेमना मुखमांथी धंडां दचनो अने बीजानी निंदानां बचनो नीकले छे, तेवां माणसो बचनना आचार विनाना नीच गणाय छे.

छोकराओ ! त्रीजो कायानो आचार छे यन अने वचननो आचार ए भावथी, अने कायानो आचार द्र-व्यथी छे शरीरनी अशुचि द्र करवी, शरीर उपर मेल राखवो नहीं, शरीर उपर पहेरवानां छगडां साफ राखवां, मोहं, हाथ, पग, वरावर संभाळीने घोवां। आंख, फान, अने नाकना मेछ दूर करी, तेने साफ राखवां, ए वधों कायानो आचार कहेवाय छे। कायानो आचार राखवाथी बळी आळोकमां पण केटलाएक फायदा थाय छे। शरीर साफ राखनारने चामडीना के रुधिरना रोगो थता नथी, तेथी यण भागे शरीरनी तंदुरस्ती सारी रहे छे, माटे दरेक आवकना छोकराए कायानो आचार साचववानी जहर छे।

छोकराओ —साहेव ! हवे अम सदाचारमां वरावर समजी गया। आपनी आ शीखामण प्रमाण अमे हमेशां चाळीशुं, अने आपना आभार मानीशुं.

सारांदा प्रश्नो.

पाठ २३ मो.

न करवानां काम.

धर्मदास नामनो एक धर्मी आवक चंपानगरीमां रहेतो हतो, तेने विनय अने विवेक नाम बे पुत्रो हता. धर्मदास पोताना वे पुत्रोने जुदा जुदा विषय शीखवतो हतो. जे करवा योग्य काम होय, ते विनयने शीखवतो, अने जे करवा योग्य काम नथी, ते विवेकने शीखवतो हतो. विवेक हमेशां सवारे उठीने न करवानां कामनो पाठ करी जतो, अने ते पछी बीजां काम करतो हतो. दरेक आ-वकता दीकराए ते विवेकनी जेम न करवानां कामने याद राखवां जोइए, ते आ नीचे प्रमाणे छे:—

- १ मिथ्यात्वीनी करणी करवी नहि
- २ गाय विगेरे प्राणीओने लाकडी विगेरेथी घणाज मारवां नहि, अने मजबूत रीते वांधवां नहिः
- ३ कोइपण जीवनी हिंसा करवी नहि.
- ४ माकड, जुं विगेरेने तडकामां फेंकी देवां निह.
- ५ अळगण पाणी वापरवुं नहिः
- ६ अनाज, इंधणां, शाक, पत्र, तांबुल, फळ विगेरे शोध्या विना वापरवां नहिः
- ७ सोपारी, खारेक, ओळी, फळी विगेरे पूरीरीते भांग्या विना मोढामां नाखवां नहिः

- ८ जीववाळी भूमि उपर नहावुं निह, तथा तेवी भृमि उपर यळ मृत्र करवां निह.
- ९ जयणा राख्या विना हालबुं चालबुं नहिः
- १० जीववाळा दाणा विगेरे दळवा, भरडवा तथा रांपवा नहिः
- ११ धर्मनां काम अनाद्रधी करवां नहिः
- १२ देव, गुरु अने साधर्मिओनी निंदा तथा द्वेप परवो नहिः
- १३ देशसरनुं द्रव्य खावुं नहि.
- १४ देव, गुरु अने धर्मनी निंदा करनारनी संगत पारवी निंदे
- १५ धर्मी जीवोनी मक्करी करवी नहिः
- १६ अति कपायवाळां काम करवां नहि.
- १७ पंदर कर्मादाननां आचरण करवां नहिः
- १८ पापवाळी नायरी फरवी नहिः

आ अहार न परवानां काम हुं करीहा नहीं, को-हनी पांस फरावीश नहीं, अने करता होय तेमने अनु-मोदीश नहीं

रमेशां आ ममाणे याद करवाणी विवेक एक मारी उत्तर आवक पर्या रती. अने तेहुं विवेक एतुं नाम जगनमां सार्थक पर्यु हतुं.

ंसारांश प्रश्नो.

१ धर्मदास केवा श्रावक हता १ २ तेने केटला दीकरा हता १ ३ विनय अने विवेकने ते शा शा विषय शीखनतो हता १ ४ विवेक हमेशां शुं याद करतो हतो १ ५ न करवानां काम केटलां गणाव्यां छे १ ६ ते न करवानां काम याद करवाथी विवेकने शो लाभ थयो हतो १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी. करणी, इंधणां, तांब्छ, मळ, पंदर कमीदान.

- पाठ २४ मो

करवा योग्य कास.

धर्मदासे विनयने करवा योग्य काम गणावी, तेने हमेशां याद राखवाने कहीं हतुं. तेमां मुख्य रीते पांच मकारना विरुद्धनो त्याग करवाने सचव्यं हतुं.

१ देश विरुद्ध, २ काळ विरुद्ध, ३ राज विरुद्ध, ४ लोक विरुद्ध ५ अने धम विरुद्ध, ए पांच प्रकारे विरुद्ध न होय, ते काम हमेशां करवा योग्य छे; एम विनयना यनमां ठसावी दीधुं इतुं. तेथी विनय हमेशां सवारे तेने याद करना हना.

- १ जे देशमां जे काम न करवा योग्य होय, ते देश दिल्ह गणाय है.
- २ जे काळे जे काम न करवा योग्य होय, ते काळ विरुद्ध गणाय छेः
- ३ ज माणसी राजानी विरुद्ध होय, तेमनी साथे मळडुं, अथवा जे राजाए मना करेलुं होय, ते कर्युं, ते राज विरुद्ध गणाय छे.
- ४ ज काम लोकमां नटाई कहेवातुं होय, अथवा ज कामने लोको धिकारता होय, तेवुं काम करवुं ते लोक विरुद्ध कहेवाय छै।
- ५ जे अम धर्मनी विरुद्ध होय, ते धर्म विरुद्ध यहेदाय छे:

श्रा पांचे प्रकारना विरुद्ध वगरनुं ने काम होय, ते करवा योग्य काम गणाय के नेवां करवा योग्य काको विनय होको याद करना, अने ने प्रमाण वर्षनी हता. नेम बचेदाधी विनय ज्यारे स्टायक जन्मनी ध्या, त्यारे ते एक उत्तम प्रकारनी श्रावक प्रमाण हती.

सारांश प्रश्नो.

१ विरुद्ध केटला प्रकारना छे १ ते गणावो २ देश विरुद्ध अने काळ विरुद्ध एटले शुं १ ३ राज विरुद्ध, लोक विरुद्ध, अने धर्म विरुद्ध एटले शुं १ ४ करवा योग्य काम केवुं गणाय १ ५ करवा योग्य काम करवाथी विनय केवो थयो हतो १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी. विरुद्ध, काळे, उत्तम प्रकारनोः

पाठ २५ मो.

भोजन विधि भाग १ लो.

श्रावकना आचारमां भोजन विधि पण आवे छे। विधि प्रमाणे भोजन करवाथी आलोकमां घणा लाभ थाय छे, अने भोजननो आचार साचववाथी धर्मनो लाभ पण मेळवी शकाय छे। श्रावके हमेशां वखतसर भोजन करवुं. वनतां सुधी भोजननो वखत उद्घंघन करवा देवो नहीं। भोजन करवानी जग्या ज्यां एकांत अने शांति रहे तेवे ठेकाणे राखवी। भोजन वखते मुनिने दान

आपवानी भावना भाववी, अने योग होय तो दान देवुं, तेमज माता, पिता, भाइ, बहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्रहान—दुःखी, अने बांधेलां गाय विगेरे जानवरोनी संभाळ पहेलां लेवी जोइए. प्रथम मातापिताने भोजन करावदुं, ते पछी सरखा आसन उपर बेसी, पंचपरमेष्टी तुं स्वरण करी, देव गुरुतुं नाम लइ, पच्चलाण पारी, सर्व नियमोने संभारी शांतिथी भोजन करवुं.

जे पोतानी तबीयतने माफक आवे तेवा पदार्थी जमवा खावाणं कोइ चीज उपर अति छोछपता राखवी नहीं जे वस्तु अमध्य एटछे पापवाळी होय ते खावी नहीं खावामां मिताहार करवा, वधारे पडतुं जमवुं नहीं खधारे पडतुं जमवाथी अजीण, उछटी, झाडो विगेरे थाय छे, जे माणस मिताहार करे छे, ते बळवान थाय छे, अने जे वधारे पडतुं जमे, ते रोगी थाय छे, जो आखी जींदगी निरोगी रहेवुं होय, तो नीचेनी पांच बावत हमेशां ध्यानमां राखवी.

- १ अख लागे त्यारे हितकारी थोडो खोराक लेवा.
- २ डावी वाजु नीचे राखी सुवुं.
- ३ थोडो घणो चालवानो अभ्यास राखवो.
- ४ ज्यारे हाजत थाय, त्यारे तरत दिशा मात्रा करवां.
- ५ विषय भोग घणोज ओछो करवोः

आ पांच बाबत ध्यानमां राखी, ते प्रमाणे नियमधी वर्त्तवामां आवे, तो आखी जींदगी निरोगी रहेवाय छे.

सारांचा प्रश्लो.

१ विधि प्रमाण भोजन करवाथी को लाभ थाय छे १ २ भोजननो आचार साचववाथी शुं थाय छे १ ३ भोजन करती वस्तते शुं भाजन करती वस्तते शुं भावना भाववी १ ५ भोजन करती वस्तते कोनी कोनी संभाळ छेवी जोइए १ ६ भोजन करवानी जग्या केवे ठेकाणे रास्त्रवी १ ७ पहेलां कोने भोजन करवानी जग्या केवे ठेकाणे रास्त्रवी १ ७ पहेलां कोने भोजन करवां १ १ मोजनमां केवा पदार्थी जमवा १ १० केवी वस्तु स्वाची नहीं १ ११ विधार पडतुं जमवाथी शुं थाय छे १ १२ जे मिताहार करे छे, तेने शुं थाय छे १ १३ आस्त्री जींदगी निरोगी रहेवामां पांच वावत ध्यानमां रास्त्रवानी छे, ते कइ पांच वावत १ १४ ए पांच वावत ध्यानमां रास्त्रवाभी शुं थाय छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी सयज्ती आपवी.

चल्लंघन, ग्लान, लोल्डपता, अभस्य, अजीर्ण, पि-ताहार, भावना

पाठ २६ मो.

भीजन विधि भाग २ जो.

श्रावके भोजन विधिमां पचीश बाबतानो त्याग करवानो छे. १ अति सवारे, अति संध्याकाळे, अने रात्रे भोजन करवुं नहीं. २ सडेर्छ अने वासी अन्न खाबुं नहीं. ३ हालतां चालतां खावुं नहीं. ४ जमणा पग उ-पर हाथ राखी खाबुं नहीं. ५ खावाना पदार्थ हाथमां राखी खाबुं नहीं. ६ खुङ्घा आकाशमां, तडकामां, अंधारामां वेसी खावुं नहीं. ७ झाड नीचे वेसी खावुं नहीं. ८ तर्जनी (अंगुठानी पासेनी) आंगळी उंची राखी खाबुं नहीं. ९ हाथ, पग, मुखं विगेरे घोया विना खाबुं नहीं. १० नम्र थइने के मेलां वस्न पहेरीने खाबुं नहीं. ११ थाळी पकडया विना खाबुं नहीं. १२ फक्त एक धोतीयुं पहेरी खावा वेसवुं नहीं. १३ भीनां वस्त पहेरी खावुं नहीं. १४ भीतुं वस्त्र माथे छपेटी खावुं नहीं. १५ ज्यारे अपवित्र होइए, त्यारे खावुं नहीं, १६ अति र्छपट थइ एटले अकरांतीया थइ खावुं नहीं. १७ उपान पहेरी निःकेवळ भूमिपर वेसी खार्च नहीं १८ विदिशा तथा दक्षिण दिशा तरफ मुख राखी खाबुं नहीं. १९ चंडाल के धर्मभ्रष्टनीं देखतां खावुं नहीं। २० फुटेला तथा मिलन भाजनमां खावुं नहीं. २१ हत्या करनार तथा रजस्वला स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहीं. २२ गाय, श्वान तथा पंखीए सुंघेली, अजाणी अने फरीथी उनी करेली वस्तु खावी नहीं. २३ बचबचाट शब्द करतां खावुं नहीं. २४ उघाडी पडी रहेली वस्तु खावी नहीं, अने २५ मुख फाडतां बुरुं लागे, एम मुख करी खावुं नहीं.

आ पचवीश नियमोने बराबर ध्यानमां राखी श्रावके हमेशां भोजन करबुं. अति खारुं, अति खारुं, अति तीखुं, अति टंडुं अने अति मीठुं खावुं नहीं। अति गरम खावाथी रस नाश पामे छे, अति खारुं खावाथी इंद्रियोनी शक्ति कम थइ जाय छे, अति खारुं खावाथी नेत्र वगडी जाय छे, अति चीकणुं खावाथी नासिकानी शक्ति मंद थइ जाय छे, माटे दरेक पदार्थ साधारण रीते खावा। तेमां थोडा थोडा बधा रस होवा जोइए. तीखुं तथा कडबुं खावाथी कफ दूर थइ जाय छे, कपायछुं अने मीठुं खावाथी पित्त नाश पामे छे, घी विगेरे चीकणा पदार्थी खावाथी वायु दूर थइ जाय छे.

जमती वखते सौथी पहेलां मीढुं अने चीकणुं भोजन करवुं, जे तीखुं भोजन होय ते वचमां करवुं, अने कडवुं भोजन पाछलथी करवुं, जम्या पहेलां पाणी पीवुं न जोइए. जम्या पहेलां पाणी पीवाथी अग्नि मंद यह जाय छे, भोजननी वचमां पीवाथी घणो गुण याय छे, अने वचमां पीधा शिवाय भोजनने अंते पीवाथी ते झेर समान थाय छे. जम्या पछी हाथ घोवा, ते पाणीथी भींजाएला हाथ, गळं, कपोळ, तथा आंख उपर लगा-डवा नहीं.

एंडु ग्रुकंडुं नहीं, जोइए ते प्रमाणमांज लेंडुं, अम्या पछी शरीरतुं मदन, दिशागमन, बोजो उठाववातुं काम, वेसी रहेंडुं अने स्नान, एटलां काम करवां नहीं, कोइ विशेष पुण्यतुं काम शरु करतां अने आठम, चौदश विगेरे पर्वने दिवसे भोजन करतुं न जोइए एवी तपस्या आलोक अने परलोकमां हितकारी छे, तथा गुणकारी छे, भोजन कर्या पछी नवकार मंत्र गणी उठवुं, आ विधि प्रमाणे भोजन करनारो आवक सदाचारने सेवनार तथा स्वधम प्रमाणे वर्त्तनार गणाय छे.

साराचा प्रश्नो.

१ भोजन विधिमां केटली वावतोनी त्याग करवानी है १ २ ते पचवीश बावत हुंकामां गणावी ३ रस, इं- द्रियोनी शक्तिनो नाश, नेत्र हुं वगडी जवुं, नासिकानी शक्तिनी मंदता केवा केवा पदार्थी खावाथी थाय छे १ ४ कफ, पीत्त, अने वायु केवो पदार्थ खावाथी नाश पाम छे १ ५ जमती वखते पहेलुं, वच्चे, पाछळथी केवुं केवुं जमवुं १ ६ जमती वखते पाणी पीवुं क्यारे सारुं, अने क्यारे नठारुं १ ७ जम्या पछी भींजाएला हाथ क्यां क्यां न लगाडवा लोइए १ ८ जम्या पछी शुं शुं न

करवुं जोइए १ ९ कये कये दिवसे भीजन न करवुं जोइए १ १० तपस्या करवाथी शो लाभ थाय छै १ ११ भोजन कर्या पछी शुं भणीने उठवुं १ १२ विधि प्रमाण भोजन करनारो श्रावक केवो गणाय छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

तर्जनी, छंपट, उपान, निःकेवळ, विदिशा, धर्म-भ्रष्ट, रजस्वला, रस, कफ, पीत्त, अग्नि मंद, दिशागमन,

खंड ३ जो.

पाठ २७ मो.

जीव.

जैन शास्त्रमां नय तत्त्वो मानेलां छै, तैमानुं जीव एक तत्त्व छे. जे प्राणने धारण करे, अने जेनामां चै-तन्य होय, ते जीच कहेवाय छे. ते जीवनी उपाधि भेदे करी छ जातिओ छे. पहेली जातिमां जीव चेतना लक्षणथी एक प्रकारनो छे. वीजी जातिमां चस्त अने स्थावर एवा तेना वे भेद पहे छे. जेनामां चालवानी शक्ति होय, अने जे भय देखीने त्रास पामे. ते त्रस जीव, अने जे हाली चाली शके नहीं, अने स्थिरज रहे, ते स्थावर जीव कहेवाय छे. त्रीजी जातिमां तेना त्रण भेद पडे छे. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुंसक वेद अर्थात् स्त्री जातिना, पुरुष जातिना, अने नपुंसक जातिना जीव होय छे ते. चोथी जातिमां देवता, मनुष्य, नारकी अने तिर्यंच एम चार जातना जीव थाय छे. पांचमी जातिमां एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, तेरेंद्रिय, चौरेंद्रिय, अने पंचेंद्रिय एम पांच भेद पडे छे, अने छही जातिमां छकाय जीव थाय छे. पृथ्वीकाय, अप्काय, ते-इकाय, वायुकाय वनस्पतिकाय अने त्रसकाय. आ प्रयाणे जीवनी छ जातिओ थाय छे. तेमां पांचमी जातिमां जे एकेंद्रिय [एक इंद्रिवाळा] जीव कहेल छे, तेना सूक्ष्म अने बादर एवा वे भेद पढे छे. सुक्ष्म एकेंद्रिय जीव निरतिशयी सूक्ष्म नाम कर्मना **उदयवाळा होवाथी** ते घणा झीणामां झीणा होय छे. ते आ वधा चौद राज्य-लोकमां व्यापीने रहेला छे, ते पर्वत विगेरेने भेदीने जाय आवे छे, ते कोइथी भेदाता नथी, अने अग्निथी बळ्ता नथी माणसोनां चर्मचक्षुथी जोवामां आवता नथी, अने माणस के कोइ वीजाना उपयोगमां आवता नथी.

वादर एकेंद्रिय जीव दृश्य सातिशय नाम कर्मना उद्यवाळा होवाथी माणसोथी जोइ शकाय छे, एक नि-

१ एक जातनुं कर्म छे, जे कर्म उदय आवे, त्यारे प्राणी झीणामां झीणुं रूप मेळवी शके छे. २ चामडानी आंखो. ३ एक जातनुं कर्म छे. जे उदय आवतां प्राणी दृश्य-जोड़ शकाय तेवुं रूप मेळवे छे,

यमित ठेकाण ते रही क्षके छे, कोइथी भेदी शकाय छे, अग्निथी वाळी शकाय छे, अने ते सर्वना उपयोगमां आवे छे.

सारांश प्रश्नी.

१ जैन शास्त्रमां केटलां तत्त्व छे १ २ जीव कोने कहेवाय १ ३ जीवनी वधीं मळीने केटली जाति १ ४ पहेली, त्रीजी अने पांचमी जाति कई १ ते जणावी ५ त्रस जीव एटले शुं १ ६ स्थावर एटले शुं १ ७ छ-काय कया कहेवाय १ ८ सूक्ष्म अने बादर एटले शुं १ ९ निरतिश्रयी सूक्ष्म अने सातिशय हश्य ए शुं छे १ ते समजावी

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्राण, चैतन्य, स्त्रीवेद, पुरुप वेद, नपुंसक वेद, नारकी, तिर्थेच, एकंद्रिय, वेरिंद्रिय, तेरिंद्रिय, चौरिंद्रिय, पंचेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजकाय, वायुकाय, वन-स्पतिकाय, त्रसकाय, चौद राज्यलोक, चर्म चक्षु, जपाधि भेद, निरादिशय, सातिशय.

पाठ २८ मो.

पर्याप्ति.

जीवना शरीरनो बंध पुद्गळोथी बने छे ए पुद्गळोना वधाराथी ज कांइ पुद्गळना परिणामने करनारी
कोइ जातनी शक्ति थाय, ते पर्याप्ति कहेवाय छे ते
पर्याप्तिनो ओछो वधतो संबंध जीवनी साथ होय छे ते
पर्याप्तिने आधारेज जीवनुं जीवन रहे छे पर्याप्तिनो हंको
अर्थ आहारादि पुद्गळोनो मेळाप एवा पण थइ शके
ए पर्याप्तिना छ भेद छे १ आहार पर्याप्ति, २ शरीर पर्याप्ति,
३ इंद्रिय पर्याप्ति, ४ श्वासोच्ञ्चास पर्याप्ति, ५ भाषा पर्याप्ति
अने ६ मनः पर्याप्ति

१ आहार पर्याप्ति दरेक जीव वीजा जीवनी उ-त्पत्ति वखते जे शक्तिवडे आहार छे, अने ते आहारने पछी रसपणे परिणमाववानी जे शक्ति ते

२ दारीर पर्याप्ति आहारना रसरुप थएला परिणा-मने रस, रुधिर, मांस, चरवी (मेद), अस्थि^४, मज्जा^५ अने वीर्य, ए सात धातुरुपे परिणमावी शरीर वांधवानी जे शक्ति ते

१ एक रुपने वांजे रुपे थइ जंड, ते ' परिणाम फहेवाय छे. २ जी-वडं. ३ साउं ते. ४ हाडकां. ५ एक जातनी धातु छे.

र इंद्रिय पर्याप्ति सात धातुपण परिणमावेला ते रसने जेने जेटली इंद्रियो जोइए, तेटली इंद्रियपण परिण-माववानी जे शक्ति ते.

४ श्वासोच्य्वास पर्याप्त उपरनी त्रण पर्याप्ति वांधीने पछी श्वासोच्य्वासने योग्य एवी वर्गणाना दलिक (दिळया) लइ, तेमने श्वासोच्य्वासपणे परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते

५ भाषा पर्याप्ति भाषाने योग्य एवां पुद्गळ लइ, तेने भाषापणे परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते

६ मनः पर्याप्ति मनोवर्गणा योग्य पुद्गळ लइ, तेने मनपण परिणमावीने अवलंबी मुकवानी जे शक्ति ते

आ छ पर्याप्तिओ जीवमां होय छे. तेमांथी जे जीवने जेटळी पर्याप्ति कही छे, तेटळी पूरी कर्या पछी मरण पामे, ते पर्याप्ता जीव कहेवाय छे, अने जेने जेटळी कही छे, तेटळी पूरी कर्या विना मरण पामे, ते अपर्याप्ता जीव कहेवाय छे.

ते छ पर्याप्तिओमां आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, अने इंद्रिय पर्याप्ति आ पहेली त्रण पर्याप्तिओ पूरी कर्या विना कोइ जीव मरतो नथी।

१ प्रहण करी मुकवानी.

सारांश प्रश्नोः

१ पर्याप्ति एटले शुं १ २ तेनो हुंको अर्थ शुं यह शके १ ३ पर्याप्तिना केटला भेद छे १ ४ परिणाम शब्दनो अर्थ शो १ ५ सात धातु क्या १ ६ वर्गणा एटले शुं १ ७ दिलया एटले शुं १ ८ अवलं मुकवानी एटले शुं १ ९ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जीव कया कहेवाय १ १० कइ कइ पर्याप्ति पूरी कर्या विना जीव मरतो नथी १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

परिणाम, पुद्गळ, पर्याप्ति, जीवन, आहार, उत्पत्ति, गज्जा, अस्थि, वर्गणा, दिलक, अवलंबी, मनोवर्गणाः

पाठ २९ मो.

जीवना चौद भेद.

जीवनी छ जातिमां पांचपी जातिनी अंदर पंचेंद्रिय जीव कहेल छे, तेने चामडी, जीम, नाक, आंख अने कान—ए पांच इंद्रियो होय छे। ए पंचेंद्रिय जीवना संज्ञी अने असंज्ञी एवा वे भेद थाय छे। जेनामां मननी संज्ञा (भान) होय ते संज्ञी, अने जेनामां मननी संज्ञा न होय, ते असंज्ञी कहेवाय छे, एक इंद्रियवाळाना बे भेद, बेरिंद्रिय, वेरिंद्रिय अने चौरिंद्रियना एक एक भेद अने पंचेंद्रियना बे भेद—ए बधा मळी नीचे प्रमाणे सात भेद थाय छे.

१ सूक्ष्म एकेंद्रियः

२ बादर एकेंद्रिय.

३ वेरिंद्रियः

४ तेरिंद्रियः

५ चौरिंद्रियः

६ संक्षी पंचेंद्रियः

७ असंज्ञी पंचेंद्रिय.

उपरना साते भेदना जीवो—१ पर्याप्ता अने २ अ-पर्याप्ता, एवा वे प्रकारे छे, एटले वधा मळीने जीवना चौद भेद थया, ते नीचे प्रमाणे—

१ सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताः २ सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्ताः

३ वादर एकेंद्रिय पर्याप्ताः ४ वादर एकेंद्रिय अपर्याप्ताः

५ वेरिद्रिय पर्याप्ता. ६ वेरिद्रिय अपर्याप्ताः

७ तेरिंद्रिय पर्याप्ताः ८ तेरिंद्रिय अपर्याप्ताः

९ चौरिंद्रिय पर्याप्ताः १० चौरिंद्रिय अपर्याप्ताः

११ संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताः १२ संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ताः

१३ असंही पंचेंद्रिय पर्याप्ताः १४ असंही पंचेंद्रिय अपर्याप्ताः

सारांश प्रश्ना.

१ पांच इंद्रियोनां नाम कहा २ संज्ञी अने असंज्ञी ए शुं १ ते समजावो ३ जीवना सात भेद क्या १ ते गणावो ४ क्या जीवना एक एक भेद थाय छ १ अने क्या जीवना वे वे भेद थाय १ ते जणावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवीः संज्ञा, संज्ञी, असंज्ञी, पर्याप्ता, अपर्याप्ताः

पाठ ३० मो.

जीवना चौद भेद विषे कविता.

चोपाइ

जीवतणी छो जाति बने,
एकेंद्रिय पांचमीमां गणे ॥ १॥ स्थ्म ने वादर तेना भेद,
दि त्रिर चौ इंद्रिय एक भेदः ॥ २॥

९ पांचनी जातिमां. २ द्वि-द्वीइंदि (केशिंदिय), त्रि-त्रींदिय (तेरिंदिय), ची-चीरिंदिय, तेमना एक एक भेद छे.

पंचेंद्रिय बेथी भेदाय³; संज्ञी असंज्ञी ते कहेवायः ॥ ३॥ ते साथे पर्याप्ता थाय, अपर्याप्ता तेय गणायः ॥ ४॥ जीवतणा चौद भेद मनाय, जिनवाणीमां ते वंचायः ॥ ५॥

पाठ ३१ मो.

अजीव तत्त्व.

पहेला जीव तत्त्वनी विरुद्ध जे तत्त्व ते वीजं अजीव तत्त्व कहेवाय छे जीव तत्त्व वरावर समजवाथी अजीव तत्त्व सहेली रीते जाणी शकाय छे ते अजीवना अरुपी अजीव अने रुपी अजीव, एवा मुख्य वे भेद पढे छे. जेतुं रुप देखवामां न आवे, ते अरुपी कहेवाय छे, अने जेतुं रुप देखवामां आवे, ते रुपी कहेवाय छे. अरुपी अजीवना दश भेद अने रुपी अजीवना चार भेद मळी अजीवना चौद भेद थाय छे. आ चौद भेदवाछं अजीव तत्त्व दरेक आस्तिक माणसे जाणवुं जोइए. ए तत्त्व जा-णवाथी जगत्ना घणा पदार्थी जाणवामां आवे छे. जे वस्तु चेतन विनानी जडरुप छे, ते अजीव गणाय छे,

३ वे भेद थाय छे.

अने तेवी वस्तुना ज्ञानथी जीव अने अजीव तत्त्वतुं स्फ्रट

सारांचा प्रश्नोः

१ अजीव तस्व एटले शुं १ २ अजीव तस्वना मुख्य केटला भेद छे १ ३ रुपी अने अरुपी एटले शुं १ ४ रुपी अजीवना केटला भेद छे १ ५ अरुपी अजीवना केटला भेद छे १ ६ अरुपी अने रुपी अजीवना वधा मळीने केटला भेद थाय छे १ ७ अजीव शुं कहेवाय १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी. अरुपी, रुपी, आस्तिक, चेतन, जह.

पाठ ३२ मो.

अस्तिकाय.

अस्ति एटले प्रदेश तेनो काय एटले समृह, ते अस्तिकाय कहेवाय छे, एटले प्रदेशना समृहने अस्तिकाय कहे छे. चलन (हालवा चालवामां) मदद करवाना स्वभाव गुणवाळो जे प्रदेशनो समृह, ते धमास्तिकाय कहेवाय छे. जे स्थिर राखवामां मदद करवानो स्वभाव-वाळो होय, ते अधमास्तिकाय कहेवाय छे. एक ज-ग्याथी बीजी जग्यामां जतां जे अवकाश आपे, ते आकाशास्तिकाय कहेवाय छे; एटले चलनमां मदद करवानो स्वभाववाळो प्रदेश समृह ते धमास्तिकाय, स्थिर राखवामां मदद करवानो स्वभाववाळो प्रदेश समृह ते अधमास्तिकाय, अने एक जग्याथी बीजी जग्यामां जतां अवकाश आपनारो प्रदेशनो समृह, ते आकाशास्ति-काय एम समजवुं.

आ त्रणे प्रकारना अस्तिकायना स्कंध, देशा अने प्रदेश एवा त्रण त्रण भेद पडे छे जे आखो पदार्थ होय, ते स्कंध कहेवाय छे तेवा स्कंधनी साथे संबंधनाळो जे केटलेएक भाग, ते देश कहेवाय छे, अने जेनो भाग करवाथी बीजो भाग पढी शके नहि, ते प्रदेश कहेवाय छे.

सारांदा प्रश्नो.

१ अस्तिकाय ए शब्दनो अर्थ करो. २ अस्ति एटले शुं, अने काय एटले शुं १ ३ धर्मास्तिकाय एटले शुं १ ४ आकाशास्तिकाय एटले शुं १ ५ आकाशास्तिकाय एटले शुं १ ६ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकायना केटला भेद छे १ ७ स्कंध, देश अने प्रदेश एटले शुं १ ते समजावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी. अस्तिकाय, चलन, स्वभाव, अवकाश, स्कंध, देश, पदेश.

पाठ ३३ मो.

अरुपी अजीवना दश भेद.

अरुपी अजीवना दश भेद छे. धर्मास्तिकायना त्रण, अधमीस्तिकायना त्रण, आकाशास्तिकायना त्रण, अने काळनो एक, एम मळीने अरुपी अजीवना दश भेद थाय छे. धर्मास्तिकायना स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छे. अधर्मास्तिकायना स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छ, अने आकाशास्तिकायना पण स्कंध, देश, अने प्रदेशथी त्रण भेद थाय छ, अने का-ळनो भेद एकज छे, तेने काळ अथवा अद्धा कहे छे. एकंदर तेना दश भेद नीचे ममाणे थाय छे-

१ धर्मास्तिकाय स्कंधः

५ अधमीरितकाय देशः

७ आकाशास्तिकाय स्कंधः ८ आकाशास्तिकाय देशः

९ आकाशास्तिकाय प्रदेशः १० काळ-अद्धाः

२ धर्मास्तिकाय देशः

३ धर्मास्तिकाय मदेशः ४ अधर्मास्तिकाय स्कंधः

६ अधर्मास्तिकाय प्रदेशः

सारांदा प्रश्नो.

१ अरुपी अजीवना केटला भेद थाय ? २ आका-शास्तिकायना त्रण भेद गणावो ३ अधर्मास्तिकायना त्रण भेद क्या ? ते कहो ४ अद्धा एटले शुं ? ५ एकं-दर अरुपी अजीवना दश भेद कहो।

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी. काळ, अद्धाः

पाठ ३४ मो

ं इपी अजीवना चार भेद.

आगळ कहेवामां आव्युं छे के, जे क्पवाळा अजीव होय, ते रुपी अजीव पुद्गळास्तिकाय कहेवाय छेते रुपी अजीवना चार भेद छे- १ पुद्गळ स्कंध,
२ देश, ३ प्रदेश, अने ४ परमाणु, एवां तेमनां नाम
छे- स्कंध, देश, अने प्रदेशनुं स्वरुप आगळ जाणवामां
आव्युं छे- हवे पुद्गळ अने परमाणुनुं स्वरुप जाणवुं
जोइए- जेनो पूरण गलन एटले पूरावानो तथा गळवानो
स्वभाव होय, ते पुद्गळ कहेवाय छे- ए पुद्गळना स्कंध,
देश, प्रदेश अने परमाणु एवा चार भेद थाय छे- स्कंधर्मी भिन्न धयेलानो जे निर्विभाज्य भाग एटले जेनो

भाग पड़ी सके नाहि एवा भाग, ते परमाणु कहेवाय छै. ए परमाणु पुद्गळनो एक भेद पण थाय छे. पुद्गळा-स्तिकाय रुती होवाधी तेमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अने शब्द रहेला छे, ते वळी सचित्त, अचित्त, अने पिश्र गंधे तेवो शब्द, अंधकार, प्रकाश, चंद्रनी ज्योति, छाया, सूर्यना तडको विगेरे गुणा तेनामां रहेळा छे. ते चौद राजलोकमां व्यापक छे, अने संख्यात, असंख्यात अने अनंत पदेशी छे. धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय ते वंनेमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रूप नथी, तेथी ते अहपी कहेवाय छे. ते असंख्यात मदेशी अने चौद रज्जुनवाण लोकमां (चौद राजलोकमां) व्यापक छे. आकाशास्तिकाय पण लोकालोक व्यापक, अनंत मदेशी अने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द अने रुपथी रहित छे, तेथी ते पण अरुपी कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ रुपी अजीवना केटला भेद छे १ तेनां नाम आपो।
२ पुद्गल एटले शुं १ तेनुं स्वरूप बताबो। ३ पुद्गलना
फेटला भेद छ १ ते नणाबो। ४ परमाणु एटले शुं १ ते
फहो। ५ पुद्गलास्तिकायरुपी शी रीते छे १ ते विवेचन
सरी बताबो। ६ पुद्गलास्तिकायमां शुं शुं होय छे १ ते
फहो। ७ धर्मारितकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्ति-

कायमां शो लफावत छे १ ते विवेचन करी समजावो. ८ चंद्रनी ज्योति अने सूर्यनो तडको विगरे ग्रण कोनामां रहेला छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ती आपवी.

षुद्गळ, परमाणु, पूरण गलन, निर्विधाज्य भाग, संचित, अचित, मिश्र, चंद्रनी ज्योति, चौद रज्जुनगाण, ज्यापक, संख्यात, असंख्यात, अनंत प्रदेशी, असंख्यात अदेशी, चौद राजलोक.

पाठ ३५ मो.

कारा.

काळ ए अरुपी अजीवनो दशमो भेद छे, ते सूर्यनी
गति अने क्रियाना परिणाम उपरथी जाणी शकाय छे।
अति सूक्ष्म काळने समस्य कहे छे, तेवा असंख्यात समयने एक आविलिका कहे छे, एटले निगोदना जीवोने
एक वासोच्यासमां सत्तर वार मरण सुधी अने अहारमा
भवनी उत्पत्ति थाय, ते तेमनुं आयुष्य वसो ने छप्पन
आविलिका कहेवाय छे। वसो छप्पन आविलिनो निगोदना

जीवनो एक क्षुल्लक भव ने साहासत्तर क्षुल्लक भव जेटलो काळ ते श्वासोच्य्वासरुप प्राण छे, तेना सान प्राणनो एक स्तोक कहेवाय छे, तेवा सात रुतोकनो एक लच कहेवाय छे, अने तेवा सत्तोतेर लवनो एक सुहूर्त्त गणाय छे, ते सहूर्त्तनुं प्रमाण वे घडीनुं छे; तेवा त्रीश सुहूर्त्तनो अहोरात्र थाय छे, तेवा पंदर अहोरात्रनो एक पक्ष (पखनाडीयुं) थाय छे, वे पखनाडीयानो एक मास थाय छे, वार मासनुं एक वर्ष थाय छे, असंख्याता वर्षोथी एक पल्योपम थाय छे, दश कोडाकोडी पल्योपमनो एक सागरोपम थाय छे, दश कोडाकोडी सागरोपम एक उत्सिर्णि थाय छे, तेटलाजः प्रमाणे एक अवसिर्णि थाय छे.

सारांश मक्षी

१ काळ शी रीते जाणी शकाय १ २ समय कोने कहे छे १ ३ केटला समयनी आवलिका कहेनाय छे १ ४ निगोदना जीवोतुं आयुष्य केटली आवलिकातुं छे १ ५ खासोच्यासम्प एवा केटला प्राणनो एक स्तोक कहेन्वाय छे १ ६ केटला स्तोकनो छट कहेनाय छे १ ७ महूर्चनुं प्रमाण केवी रीते छे १ ८ केटला महूर्चनो अहोरात्र थाय छे १ ९ पह, मास अने वर्ष केवी रीते थाय १ ते कहो.

६ रात ने दिवह.

१० उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळना प्रमाणमां शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सूर्यनी गति, कियानुं परिणाम, अति सूक्ष्म, निगोद, श्रुष्ठक भव, श्वासोच्यासरुप प्राण, स्तोक, छव, अहोराव, पक्ष, कुवानुं दृष्टांत, पत्योपम.

पाठ ३६ मो.

छ द्रव्य.

जैन शासनमां छ द्रव्य गणाय छे. एक जीव अने अजीवनां पांच द्रव्य मळीने छ द्रव्य थाय छे. जीव द्रव्य विषे आगळ कहेवामां आव्युं छे, अने अजीवना चौद भेद पण जणाव्या छे. हवे अजीवना पांच द्रव्यनो विशेष बोध थवाने तेनुं विवेचन करवानी जरुर छे. धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गळास्तिकाय अने काळ, ए पांच अजीव द्रव्य कहेवाय छे. जेम माछ्छांने संचार करवानुं अपेक्षा कारण पाणी छे, एटले माछछं पाणीने लड्ने संचार करी शके छे, तेम जीव तथा पुद्ग-ळने गतिरुपे परिणमतां एटले जीव तथा पुद्गळने संचार

करवामां जे अपेक्षा कारण, ते पहेळं धर्मास्तिकाय द्रव्य फहेवाय छे, अधीत् धर्मास्तिकायने लइने जीव तथा पुद्ग-ळनो संचार थइ शके छे.

वीजं अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे, तेतुं स्वरुप वधी रीते धर्मास्तिकायन मळतुं छे, पण ए द्रव्य जीव तथा पुद्-गळने स्थिरता राखवामां सहाय करे छे, जेम कोइ मुसा-फर रस्ते चाळतां थाकी जाय, त्यारे विश्राम ळेवा कोइ झाड विगेरेनी छायामां जइ वेसे छे, अहीं स्थिति तो पोतेज करे छे, पगंतु आश्रय विना स्थिति थइ शकती नधी, तेथी तेने छक्षनी छाया ए अपेक्षा कारण छ, तेवी रीते जीव तथा पुद्गळ गति करतां स्थिति करवाने मसंगे स्थिति तो पोतेज करे छे, तेने छक्षनी छाया जेवुं स्थित करवानुं जे अपेक्षा कारण, तेज अध-धीस्तिकाय द्रव्य कहेवाय छे.

जीजुं आकाशास्तिकाय द्रव्य है। तेनुं वीजुं स्वरूप धर्मीस्विपायना जेवुंन है। आ द्रव्य, जीव अने पुद्गळने रद्यामां अवकाश आपे हे, ते द्रव्य लोकालोक व्यापी है। धर्मीरितकाय, अधर्मीस्वकाय, अने आकाशास्तिकाय आ गणे एकवीजामां मळी गयेलां है। ज्यां सुधी आ जण द्रव्यो है, त्यां सुधी लोक है, अने ज्यां केवळ आकामास्तिकाय है, अने वीजुं कांइ नथी, ते अलोब है।

चोथुं पुद्गळास्तिकाय द्रव्य छे. आ पुद्गळतुं बी-नुं नाम परमाणु पण कहेवाय छे. घडो, वहा, विगेरे पदार्थी परमाणुओना समूहथी बनेला छे, अने तेथी तेओ तेनां कार्य छै. तेओने पण पुद्गळज कहे छ. एक पर-माणुमां एक वर्ण, एक रस, एक गंध, अने बे स्पर्श रहेला छे. तेनुं वने छं कार्य ए तेनुं छिंग छे. परमाणुमां वळी एवी खुवी छे के, एक वर्णथी बीजो वर्ण, रसथी बीजो रस, गंधथी बीजो गंध, अने स्पर्शेथी बीजो स्पर्श थइ जाय छे. परमाणु द्रव्य-वस्तुरुपे अनादि तथा अनंत छे, अने पर्यायरुपे आदि तथा अंत सहित छे. परमाणुओनां जे कार्य छे, तेओमां कोइ प्रवाहथी अनादि अनंत छे, अने कोइ आदि तथा अंत सहित छे. आ जगतमां जेटलाः जडरूपे देखाय छे, ते वघां परमाणुनां कार्य छे. जे पुद्-गळ द्रव्य समुचयरुपे एकठुं थाय, तो ते द्रव्यमां, काळो, लीलो, रातो, पीळो, अने घोळो-ए पांच वर्ण छे तीखो, कडवो, कषायेलो, खाटो, अने मीटो-आ पांच रस छे. सुगंध, अने दुर्गंध आ वे गंध छे. खरखरो, सुंवाळो, हळवो, भारे, टाढो, उनो, चीकणो, अने छुखी-ए आट स्पर्धे छे. ते पुद्गळोमां एकवीजाना मेळापथी जातजातना. वर्ण विगेरे थइ जाय छे, ते पुद्गळोमां अनंत शक्तिओ तथा अनंत स्वभाव छे. द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव-इ-त्यादि निमित्तोना मळवाथी ते पुर्गलोनां विचित्र पन परिणाम थाय छे.

पाचबुं काळ द्रव्य छे, तेतुं स्वरुप आगळ कहेवामां आव्युं छे.

साराश प्रश्नी.

१ जैन शासनमां केटलां द्रव्य गणाय छे ? २ छ द्रव्य कयां ? ते गणावो ३ पांच अजीव द्रव्यनां नाम आपो. ४ धर्मास्तिकाय द्रव्यमां शेनो दाखला छ ? ते कहा. ५ धर्मास्तिकाय द्रव्यनो शो स्वभाव छे १ ६ धर्मा-स्तिकायने लइ जीव तथा पुद्गळ शुं करी शके छे ? ७ अ-धर्मास्तिकायनुं स्वरूप शुं छे १ ८ अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुर्गळने केवी सहाय करे छे ? ९ अधर्मा-स्तिकायनो दाखले। आपी समजावोः १० आकाशास्ति-काय द्रव्य जीव तथा पुर्गळने शुं करे छे १ ११ ते द्रन्य केवुं छे ? तेतुं विशेष विवेचन करोः १२ आलोक पयां सुधी छे, अने अलोकमां क्युं द्रव्य छे १ १३ पुद्-गळास्तिकावतुं वीजुं नाम शुं छे ? १४ परमाणुओनां कार्य क्या बदायों कहेबाय छे १ १५ एक परमाणुमां वर्ण, रत, गंध, अने स्पर्श केटला छे १ ने कही। १७ प-रमाणुनां वीजी शी खुबी छे ? ते जणाबी. १८ परमाणु अनादि तथा अनंत क्यारे छे, अने आदि नधा अंत सहित नयारे छे १ ते समजाना १९ परमाणुओनां कार्य अनादि तथा अनंत क्यारे होच छे, अने आहि नधा अंत सहित क्यारे होय छ ? २० पुद्गळ द्रव्यमां वर्ण, रस, गंध अने स्पर्श केटला केटला छे ? ते गणाबोः २१ पुद्गळोमां शक्तिओ केटली छे, अने स्वधाव केटला छे ? २२ द्रव्य, क्षेत्र, काळ केटला छे, अने भाव विगेरे निमित्तो मळवाथी पुद्गळोमां श्रुं थाय छे ? २३ पांचमुं द्रव्य क्युं ? ते कहो।

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

विवेचन, अपेक्षा कारण, संचार, स्थिरता, अवका-गं, लोकालोक, लोक, अलोक, परमाणु, कार्य, द्रव्य, अनादि, अनंते, पर्याय, प्रवाह, समुचय, अनंत स्वभाव, निमित्त, विचित्र परिणाम.

पाठ ३७ सो.

३ पुण्य तत्व.

पुण्य तत्व ए त्रींजं तत्व छे. जेनाथी पोते शुभ मक्तातिबंडे करेलां कर्म जीवोने सुख आपे छे, ते पुण्य फाहेबाय छे. आ पुण्य उपार्जन करवानां नव कारण छे. १ पात्रने अञ्चलुं दान आपवाथी, २ तर्ण्याने पाणी पा-वाथी, ३ नागाने ओढवा वस्त्र आपवाथी, ४ घर विना- नाने, ५ रहेवा स्थान आपवाथी, ६ सुवा वेसवाने आ-सन आपवाथी, ७ सुणी जनने देखी मनमां संतोप तथा हर्ष मानवाथी, ८ सुणी जननी वचनवडे प्रशंसा करवाथी, अने कायाथी सेवा करवाथी अने ९ सुणीजनने नमस्कार करवाथी, आ नव प्रकारनां कारणथी प्राणी पुण्य डपा-जन करे छे. अहीं पात्रने दान आपवामां वे प्रकार छे. एक पात्रदान, अने वीजुं अनुकंपादान. जे पात्रने दान आपवामां आवे, ते पात्रदान कहेवाय छे. तेवुं दान पुण्य तथा मोक्ष वंनेनुं कारण थाय छे, अने कोइ पण दीन दुःखी प्राणी होय, तेने अनुकंपाथी आप, ते अनु-कंपादान कहेवाय छे. आ अनुकंपादान अवस्य एकछा पुण्यवंधनुं हेतु थाय छे.

सारांचा प्रश्लो.

१ पुण्य तत्व ए केटलामुं तत्व छे ? २ पुण्य ए-टले शुं ? ३ पुण्य उपार्जन करवानां केटलां कारण छे ? ४ दानना केटला प्रकार छे ? ५ पात्रदान अने अनुकंपादान बंनेयां शो तकावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी जमजूनी आपवी.

धुभ प्रकृति, उपार्धन, गुणीवन, प्रशंसा, पात्र, अनुशंपा.

पाठ ३८ मो.

पुण्य बांधवा विषे कविता.

चोपाइ.

षुण्य बंधनी छे नव रीत, एथी थाये पुण्यमां प्रीत.	Ş
भुख्या जनने अन्ननां दान, तरष्या जनने जळनां पान.	२
रहेवाने आपे छे स्थान, स्रुवा माटे शय्या दान₊	ą
उद्याडाने वस्त्र अपाय, मनमां सारा संकल्प थाय₊	8
स्तुति करे शुभ वचने नित, कायाथी सेवे धरी पीत.	فو
नमन करे छे पूज्यने आप, ए नव रीते पुण्यनी छापः	Ę

पाठ ३९ मो.

पुण्य भोगवयाना वेतालीशः प्रकार-भाग १ लोः

उपरना पाठमां कहेली नव रीतीथी माणस पुण्य उपार्जन करे छे, पण ते पुण्यने केवी रीते भोगववां ? ते प्रकार जाणवा जोइए. ते पुण्य भोगववाना वेतालीश प्रकार छे. जे पुण्यना उदयथी जीव ज्ञाता भोगवे, ते शातावेदनीय नामे पहेलो मकार छे जेना उदयधी जीव क्षत्रि आदि उंचा कुळमां उत्पन्न याय छे, ते उच*ः* गोत्र नामे वीजो प्रकार छे। जेना उदयधी जीव मनुष्य गतिमां उत्पन्न थाय, ते मनुष्य गति नामे त्रीजो मकार छे, जेम बळद् बांको चाछतो होय, तेने नाथ घालीने सिद्धो चलाववामां आवे, तेम जीव बक्रगतिए वीजी ग--तिमां जतो होय, तेने सीद्धो उपजवाने स्थाने जेथी प-होंचाडवामां आवे, ते आनुपूर्वी कहेवाय छेः मनुः ण्यनी गति अने मप्तुयनी आनुपूर्वीने मनुष्यदिकः यहे छे ए मनुष्यानुषूची नामे चोथो पकार छे. जेना उदयधी देवतानी गति माप्त थाय, ते देवगति नाम पांचमो प्रकार छे। ते पछी देवानुपूर्वी नामे छहो प्रभार है। आ देवगति अने देवानुपूर्वी ते यंनेने सुरिद्यम यहे छे. जेना उद्यधी पंचेद्रियपणुं भाम थाय,

१ ए केपुलीर अगाउ राम बर्मनी प्रकृतिना नेद है.

त पंचेद्रिय जाति नामे सातमो प्रकार छे. जेना उद-यथी औदारिक शरीरने योग्य एवां पुद्गळेाल्लं ग्रहण करीने तथा तेने शरीररुपे परिणमाबीने जीव पोताना प्रदेशनी साथे पळवे, ते औदारिक नामकर्म नाम भाठमो प्रकार छे. जेना उदयधी वैक्रिय शरीरने योग्य एवां पुद्गळोतुं ग्रहण करी तथा तेने शरीरपणे परिणमा-मावीने जीव पोताना प्रदेशनी साथे मेळवे, ते वैक्रिय ञारीर नामे नवमा प्रकार छे. आ वैक्रिय शरीरना औषपातिक अने लिब्ध प्रत्यिक एवा वे भेद छे. औपपातिक वैक्रिय शरीर देवताने तथा नारकीने होय छ, अने लब्बि पत्यिक वैक्रिय बरीर तिर्थेच तथा लिब्बिनंत मनुष्येन होय छे. जेना उदयथी प्राणी चौद पूर्वधारी मुनिराज तीर्थकरनी ऋदि विगरे जोवाने अर्थे एक हाथ प्रमाण देहें धारण करे, ते आहारक चारीर नामे दयमो प्रकार है, जेना उदयथी आहारतं पचावनार अने तेजोछेक्याना हेतुरुप शरीर धारण करे, ते तेजस्य अरीर नामे अगीयारमो प्रकार छै कर्मनां परमाणु जे आत्माना प्रदेशनी साथे मळ्या छे, ते शरीरज कार्सण दारीर नामे वारमो प्रकार छे. जेना उदयथी औदारिक अंग उपांग पाप्त थाय, ते औदारिक अंगो-पांग नामे तेरमा प्रकार छे. शरीरना वे हाथ, वे खभा, एक पीठ, एक माथुं, एक उदर अने एक हृदय-ए आठ अंग कहेवाय छे, अने आंगळां विगेरे उपांग कहवाय छे.

तेवीन रीते जेना उद्यथी विक्रिय अंगे।पांग माप्त थाय, ते चैकिय अंगोपांग नाम चौदमो प्रकार के जेना उ-द्यथी आहारक अंगोपांग प्राप्त थाय, ते आहारक अंगोपांग नामे पंदरमो प्रकार के बाकीना तजस अने कार्यण शरीरने अंगोपांग नथी।

दारांश पक्षी.

१ पुण्य भोगदवाना केटला प्रकार छे ? २ शाता वेदसीय, उच गोत्र-ए वे प्रकार समजावोः ३ आनुपूर्वी एटले शुं १ ने दासलाधी समजादों ४ महुप्यद्विक अने छुरहिक कोतुं नाम ? ते कहो. ५ पंचेंद्रिय जातिनो प्रकार समनाबो. ६ ऑद्यारिक विगेरे पांच शरीरना प्रकार सम-जावोः ७ वंशिय शरीरना केटला भेद थाय ? ८ ऑप-पातिक वैक्षिय क्रीर कोने होय छे ? ९ छव्धि मत्यिक वैक्षिय शरीर कोने होय छे १ १० आहारक शरीरवाळी माणी धं जोड़ मने ? ११ नेजस् शरीरभी थुं भड़ सने ? १२ कार्यण घरीरथी शुं धइ दाके १ १२ अंग केटलां होय ? ते गणावोः १४ उपांग कयां ते वहोः १५ औं-दारिक अंगोपांन, वैक्रिय अंगोपांन अने आहारक अंगो-पांग-ए त्रणे प्रकार समजाबों। १६ क्या शरीरने अंगों-पांग नधी. ते वटी.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शाता, वक्र गति, आनुपूर्वी, मनुष्यद्विक, सुरद्विक, परिणमावी, प्रदेश, लिब्धवंत, चौद पूर्वधारी, तेजोलेश्या, कर्मनां परमाण, अंग, उपांग, लिब्ध, प्रत्यिक, औप-पातिक.

पाठ ४० मो

पुण्य भोगववाना वेताळीश प्रकार—भाग २ जोः

वज्र एटले खीली, रुषभ एटले पाटो अने नाराच एटले वे पासा मर्कट वंध, अर्थात् तेनापर पाटो अने ते उपर खीली; आतुं नाम वज्ररूषभनाराच नामे संघयण कहेवाय छे, अने तेने संस्कृतमां संहनन कहे छे, जेना उद-यथी प्राणी पोताना शरीरमां आ वज्ररूपभनाराच नामनुं पहेलें संहनन प्राप्त करे, एटले तेना शरीरनो वांधो तेवो मजबूत थाय, ते वज्ररूपभनाराच नामे सोलमो प्रकार छे, सम एटले सरखं, चतुरस्र एटले चोरस एवं संस्थान एटले आकार ते समचतुरस्र नामे पहेलं संस्थान कहेवाय छे, अर्थात् पर्यकासन (पलोंटी) करी वेसतां चारे वाज सरखी आकृति थाय, अने पोताना आंगल प्रमाणे एकसो ने आट अंगुल प्रमाण शरीर थाय, तेनं संस्थान, जेना उदयथी

प्राणी तेवा संस्थानने प्राप्त करे, ते समचतुरस्य संस्थान नामे सत्तरमा प्रकार छै। जेना उदयधी शरीरनो रंग सारी एटले घोलो, रातो के पीलो घाय, ते शुभ वर्ण नामे अदारमो प्रकार छे. जेना उदयधी सुगंध धाय, ते शुभ गंध नामे ओगणीशमो प्रकार छे. जेना उद्यधी शरीरमां सारो रस प्राप्त थाय. ते द्युभ रस नामे वीशमा प्रकार छे. जेना उद्यथी शरीरमां सारो स्पर्श प्राप्त थाय, ते द्वाभ स्पर्श नामे एकवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरतं वजन लोढानी जम भारे नहीं, तेमज आकढाना क्नी जेम इळकुं पण नहीं, एटले मध्यम रीतनं वजन प्राप्त थाय, ते अगुरू लघु नाम कम नाम वावीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणी गेमे तेवा यळवान्ने पण जीत-वाने समर्थ धाय, ते पराचान नाम कर्म नाम देवीशमा प्रकार छे। जेना उदयथी सुखेथी श्वासोच्य्वास टर् शकाय ते श्वासोच्छ्यास नाम कर्म नाम चोवीशमा पकार छ। जेना उद्यर्था चंद्रनां विवनी जेम शीतळता उत्पन्न करनार तेजांयुक्त शरीरनी प्राप्ति याय, ते डचोत नाम कर्म नामे छवीशमा प्रकार छे। जेना उदयधी रूपभ तथा इंसनी जेंग सारी जातनी चालवानी इक्ति माप्त याय, ते झुभग्व गित नाम सलावीशमा प्रकार है. जेना उद्यंथी पाणी सुतारनी जेंग पोताना अंगना सर्व अवयव योग्य स्पटे गोट-ववानी शक्ति धरावे. ने निर्माण नाम कर्म नांप अ-ट्याबीसमी प्रशास रेट

सारांचा प्रश्लो.

१ वज, रुषभ अने नाराच ए शब्दोना जूदाजूदा अर्थ करी बताबी २ संघयण एटले शुं ? अने तेने संस्कृतमां शुं कहे छे १ र सम, चतुरस्र अने संस्थान ए शब्दोना जूदाजूदा अर्थ करो. ४ पर्यकासन एटले शुं ? ५ सम चतुरस्र संस्थानवाळा शरीरतुं प्रमाण केटला आं-गळतुं थाय ? ६ शुभ वर्ण, शुभ गंघ, शुभ रस अने शुभ स्पर्श, ए चार प्रकार विषे शुं समज्या ? ते स्पष्ट रीते समजावो. ७ अगुरु लघु नाम कम एटले गुं? ८ जेना उदयथी पाणी गमे तेवा वळवान्ने पण जीती शके, ते प्रकारनुं शुं नाम १ ९ श्वासोच्छ्वास नाम कर्मथी शुं थाय १ १० जेमां प्राणीने चंद्रनां विंव जेवो शीतळ मकाश थाय छे, ते मकारनुं शुं नाम १ ११ शुक्ष ख गति अने निर्साण नाम कर्मनो अर्थ समजावो

िशिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वज्ज, रूपभ, नाराच, संघयण, संहनन, पर्कट वंध, सम, चतुरस्त्र, संस्थान, पर्धकासन, मध्यम रीत, श्वासी-च्यास, विंव, तेजोयुक्त, दृपभ, हंस, अत्रयव.

पाठ ४१ मो.

पुण्य भोगववाना वैताळीश प्रकार—भाग ३ जो. जेना उद्यथी जीव त्रस विगेरे दश प्रकृतिने प्राप्त फरं, ते असद्शक नाम कम कहेवाय छ, तेमां त्रस विगरे दश प्रकार आवे छे. जेना उदयधी प्राणीने वेइंद्रिय विगरे शरीरनी प्राप्ति थाय, ते अस नाम कर्म नाम ओगणत्रीशमो प्रकार छे. जेना उद्यधी जीवने वाद्र शरीरनी पाप्ति थाय, ते चाद्र नाम कर्स नाम जीशमा मकार छे. जे शरीर देखावामां आवे, ते बादर कहेवाय छै जेना उदयथी जीव पोतपोतानी पर्याप्ति पूरी करे, ते पर्याप्ति नाम कर्म नामे एकत्रीशमो प्रकार छ जना उद्यधी जुदांजुदां शरीर प्राप्त थाय, पण अनंता जीवनी वर्षे एक शरीर पामे नाह, ते प्रत्येक नाम कर्म नामे वत्री-शमो प्रकार छे। जेना उद्यधी जीव दांत विगरे अवय-वोनी द्रवता मेळवे, ते स्थिर नाम कर्म नाम तेत्रीशमो मकार है. जना उद्यंधी जीवने शरीरना सर्वे अवयव सारा होय, अथवा नाभिनी उपरनुं बरीर सार्व होय, ते शुप्त नाम कम नांग चोत्रीशमो प्रकार छे। जेना उद-यथी माणस सर्वने भिय थाय, ने स्तानारय नाम कर्म नाम पांत्रीत्रमी प्रवार है. जना उद्यर्था वाणीमां काय-लना जेवी मधुरता श्रोबः ने सुस्वर नाम फर्म नाम ल्बीशमी भवार लें. जेना इद्यंधी माणमना दचन ही-

कमां माननीय थाय, ते आदेच नाम कर्म नामे साडत्रीशमो प्रकार छे जेना उदयथी लोकमां यश-कीर्ति
थाय, ते यशोनाम कर्म नामे आडत्रीशमो प्रकार छे जेना उदयथी जीवने देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते
स्तुरायुष्य रूप नामे ओगणचाळीशमो प्रकार छे जेना
उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते नरायुष्य
क्प नामे चाळीशमो प्रकार छे जेना उदयथी तिर्यंचना
आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते तिर्यंचायुष्य रूप नामे एकताळीशमो प्रकार छे, अने जेना उदयथी प्राणीने त्रियुचनना पूज्यपणानी प्राप्ति थाय, ते तीर्थंकर नाम कम्
नामे वेंताळीशमो प्रकार छे

सारांश प्रश्नो.

१ त्रसद्शक नाम कर्म एटले शुं १ २ त्रस विगेरे दश कया १ ते गणावो ३ वादर एटले केवुं शरीर १ ४ पर्याप्ति नाम कर्म अने प्रत्येक नाम कर्म विपे समजावो ५ सौभाग्य नाम कर्म, सुस्वर नाम कर्म अने यशोनाम कर्म विपे समजावो ६ जेना उद्पर्था मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, जेना उद्यथी त्रिस्त्रवनना पूज्यपणानी प्राप्ति थाय, जेना उद्यथी प्राप्त सर्वने प्रिय थाय, ते प्रकार क्या १ तेमनां नाम आपा

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

दश प्रकृति, बादर, पर्याप्ति, स्थिरता, नाभि, प्रिय, मधुरता, माननीय, तिर्यच, त्रिश्चवन, पूज्यः

पाठ ४२ मो

पाप तत्त्वः

जे अशुभ प्रकृतिरुप कर्ष जीवोने दुःख आपे, ते पाप कहेवाय छे, अथवा जे आत्माना आनंद रसने पीवे एटले भस्म करे, ते पाप कहेवाय छे। ए पाप पुण्यथी विपरीत छे। ए पापथी नरक विगेरे नटारां फळ मळे छे, तेथी ते अशुभ कहेवाय छे। पुण्यनी जेम पापनो संबंधा पण आत्मानी साथे रहेलो छे। सुख तथा दुःख जुदांजुदां अनुभववामां आवे छे, तेथी तेमनां कारणरुप पुण्य तथा पाप पण स्वतंत्रपणे अंगीकार करवा योग्य छे। एकछं। पुण्य के एकछं पाप के एकछं पुण्य पाप मिश्र मानवं योग्य नथी।

आ पाप अहार प्रकारे वंधाय छे, अने व्याशी प्रकारे भोगवाय छे. १ प्राणातिपात—कोइनी हिंसा करवी, २ मृषावाद—खोडुं वोलवुं, ३ अदत्तादान—चोरी करवी, ४ मैथुन—ब्रह्मचर्य न राखवुं, ५ परिग्रह राखवो, कमां माननीय थाय, ते आदेय नाम कम नामे साइ-त्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी लोकमां यश-कीर्ति थाय, ते यशोनाम कम नामे आडत्रीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी जीवने देवताना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते सुरायुष्य रूप नामे ओगणचाळीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते नरायुष्य रूप नामे चाळीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी तिर्यचना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, ते तिर्यचायुष्य रूप नामे एक-ताळीशमो प्रकार छे, अने जेना उदयथी प्राणीने त्रिश-चनना पूज्यपणानी प्राप्ति थाय, ते तिर्थिकर नाम कम नामे चेंताळीशमो प्रकार छे.

सारांश प्रश्नो.

१ त्रसद्शक नाम कर्म एटले शुं १ २ त्रस विगेरे दश कया १ ते गणावो ३ वादर एटले केवुं शरीर १ ४ पर्याप्ति नाम कर्म अने प्रत्येक नाम कर्म विषे समजावो ५ सौभाग्य नाम कर्म, सुस्वर नाम कर्म अने यशोनाम कर्म विषे समजावो ६ जेना उदयथी मनुष्यना आयुष्यनी प्राप्ति थाय, जेना उदयथी त्रिश्चवनना पूज्यपणानी प्राप्ति थाय, जेना उदयथी माणस सर्वने पिय थाय, ते प्रकार क्या १ तेमनां नाम आपं।

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

दश प्रकृति, बादर, पर्याप्ति, स्थिरता, नाभि, प्रिय, मधुरता, माननीय, तिर्थेच, त्रिश्चवन, पूज्यः

पाठ ४२ मो

पाप तत्त्व.

जे अशुभ प्रकृतिरुप कर्ष जीवोने दुःख आपे, ते पाप कहेवाय छे, अथवा जे आत्माना आनंद रसने पीवे एटछे भस्म करे, ते पाप कहेवाय छे. ए पाप पुण्यथी विपरीत छे. ए पापथी नरक विगेरे नटारां फळ मळे छे, तेथी ते अशुभ कहेवाय छे. पुण्यनी जेम पापनो संबंध पण आत्मानी साथे रहेलो छे. सुख तथा दुःख जुदांजुदां अनुभवनामां आवे छे, तेथी तेमनां कारणरुप पुण्य तथा पाप पण स्वतंत्रपणे अंगीकार करवा योग्य छे. एकछं पुण्य के एकछं पाप के एकछं पुण्य पाप मिश्र मानवुं योग्य नथी.

आ पाप अढार प्रकारे वंधाय छे, अने व्याशी प्रकारे भोगवाय छे. १ प्राणातिपात—कोइनी हिंसा करवी, २ मृषावाद—सोटुं बोलवुं, ३ अदत्तादान—चोरी करवी, ४ मैथुन–ब्रह्मचर्य न राखवुं, ५ परिग्रह राखवो, ६ क्रोध करवो, ७ मान-अभिमान राखवुं, ८ माया-कपट करवुं, ९ छोभ करवो, १० राग करवो, ११ द्वेष राखवो, १२ कछह-कजीयो करवो, १३ अभ्याख्यान-आळ च- डावबुं, १४ पेशुन्य-चुगछी करवी, १५ रित अरित-भीति अप्रीति करवी, १६ परपरिवाद-बीजानी निंदा करवी, १७ ग्राया मुषावाद-कपटथी खोडुं बोछवुं, अने १८ मिथ्यात्व शस्य एटछे मिथ्यात्वरुप शस्य राखवुं, ए अहार पकारे पाप बंधाय छे.

सारांदा प्रश्नोः

१ पाप एटले शुं १ ते समजावोः २ पाप कोने कहेवाय १ ३ पापथी शुं फळ थाय १ ४ पापना आत्मा- नी साथ कोनी माफक संबंध छे १ ५ पुण्य तथा पाप कोना कारण छे १ ६ पाप केटले प्रकारे बंधाय छे १ अने केटले प्रकारे भोगवाय छे १

शिक्षके नीचेना शन्दोनी समजूती आपवी.

अशुभ प्रकृतिरुप, आनंद रस, पुण्य पाप मिश्र, प्राणातिपात, मृपावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, माया, कलह, अभ्याख्यान, पैथुन्य, रित अरित, परपरिवाद, माया मृदावाद, मिध्यात्यशस्य.

पाठ ४३ मो.

पाप भोगववाना प्रकार-भाग १ लो.

पापने भागववाना व्याशी भकार छे दरेक पा-णीने उपर कहेला अढार प्रकारे बांधेछं पाप भागववुं पडे छे. पहेलां बानावरणीयना पांच प्रकार कहे छे. पांच प्रकारना ज्ञानने जे आच्छादन करे, ते ज्ञानावरणीय पाप कमें कहेवाय छे. जेना उदयथी पांच इंद्रिय था मननी मारफत नियत (निश्चयवाळी) वस्तुनुं ज्ञान थाय छ, एवा मतिज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते मति-्ज्ञानावरणीय नामे पहेलो प्रकार छे. जेना उदयथी शास्त्रने अनुसारे ज्ञान थाय छे, एवा श्रुतज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते श्रुतज्ञानावरणीय नामे वीजो प्रकार छे. जेना उदयथी इंद्रिय विगेरेनी अपेक्षा विना आत्मद्रव्यने--साक्षात्रुणी द्रव्यने जाणवानुं ज्ञान थाय छे, एवा अवधि ज्ञानमुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते अवधि ज्ञानावरणीय नामे त्रीजो प्रकार छे. जेना उद-यथी संज्ञि पंचेंद्रियना मनोगत भावने जाणवानुं ज्ञान थाय छे, एवा मनःपर्यव ज्ञानतुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते मनःपर्यव ज्ञानावरणीय नामे चोथो मकार छे. जेना उदयथी उपर कहेला चार ज्ञान रहित एकछं निरावरण

१ आ ब्याशी प्रकार कर्मनी प्रकृतिना भेद जाणवां.

ज्ञान थाय छे, एवा केवळ ज्ञाननुं जेनाथी आच्छादन थाय, ते केवळ ज्ञानावरणीय नामे पांचमो प्रकार छे.

जे आड़ं आवे, ते अंतराय कम कहेवाय छे, तेना पण पांच प्रकार छे पोताना घरमां देवा योग्य वस्तु छतां, तथा दानतुं फळ जाणतां छतां जेना उदयथी कोइने आपी शकाय नहीं, ते दानांतराय नामे छहो प्रकार छे सारो दातार होय, अने तेना घरमां आप-वातुं होय, अने मागनार डाह्यो होय, ते छतां पण जेना उदयथी मागेली वस्तु मळे नहीं, ते लाभांतराय नामे सातमो प्रकार छे.

पोते जुवान होय, सारुं रूप होय, अने भोग क-रवा योग्य वस्तुनी प्राप्ति थइ होय, ते छतां पण जेना उदयथी ते भोगवी शकाय नहीं, ते भोगांतराय, अने उपभोगांतराय नामे आदमो अने नवमा प्रकार छे। पोते जुवान, निरोगी, अने वळवान छतां पण जेना उ-दयथी पोतानी शक्ति फोरवी शकाय नहीं, ते वीर्योत-राय नामे दशमो प्रकार छे।

द्शनावरणीय कर्मना नव प्रकार छे, तेमां चार प्रकार द्शनना, अने पांच प्रकार निद्राना छे, जे सा-मान्य उपयोग, ते द्शन कहेवाय छे, जेथी आंखे करी रुपनुं सामान्यपणे ग्रहण थाय छे, एवा चक्षद्शननुं जेमां आच्छादन थाय, ते चक्षुद्शीनावरणीय नामे अगीया-

रमो प्रकार छे. चक्षु विना बीजी चार इंद्रिया तथा यने करी पोतपोताना विषयनुं सामान्यपणे जेनाथी ग्रहण थाय छे, तेवा अचक्षुर्दर्शनतुं जेना उदययी आच्छादन थाय, ते अच्छक्षद्वीनावरणीय नामे बारमो प्रकार छे. जेमां सामान्य रीते रुपी द्रव्यतुं मर्यादाथी ग्रहण थाय छे, एवा अवधि दर्शनतुं जेना उदयंथी आच्छादन थाय, ते अवधि द्रीनावरणीय नामे तेरमे प्रकार छे. जेमां सामान्य रीते बघी वस्तुओ देखी शकाय छे, एवा केवळ दर्शनतुं जेना उदयथी आच्छादन थाय, ते केवळ द्शीनावरणीय नामे चौदमो पकार छे हवे पांच पकार निद्राना कहे छे. जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी सुखे जाग्रत अवस्थानी पाप्ति थाय, ते निद्रारूप नामे पंदरमो प्रकार छे. जेना उदयथी निद्रावस्था थइ गया पछी दुखःरुप जाग्रत अवस्थानी प्राप्ति थाय, ते निद्रा निद्रारुप नामे सोळमो पकार छे. जेना उदयथी चेसतां तथा उठतां निद्रा आव्या करे, ते प्रचलारूप नामे सत्तरमो प्रकार छे. जेना उदयथी हरतां फरतां पण निद्रा आवे, ते प्रचला प्रचलारुप नामे अहारमो पकार छे. जेना उदयथी दिवसे चिंतवेछं काम रात्रे निद्रा वखते जाग्रतनी पेठे थाय, ते थीणन्दीरुप नामे ओगणी-श्रमो प्रकार छे. आ थीणद्धीरुप निद्राने संस्कृतमां स्त्या-नर्द्धि कहे छे. ए निद्राना समये प्राणी वासुदेवना

अर्घा बळवाळो थाय छे, अने ते जीव नरकगामी

सारांश प्रश्नो.

१ पाप भोगववाना केटला प्रकार छे ? २ ते केवे पकारे वांधेछं पाप भोगववुं पडे छे ? ३ ज्ञानाव-रणीय कर्म एटले शुं ? ४ मतिज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञाना-चरणीय, अने मनःपर्यवज्ञानावरणीयना अर्थ समजावोः ५ शास्त्रने अनुसारे जे ज्ञान थाय छे, तेनुं शुं नाम ? ६ एकछं निरावरण ज्ञान शेमां थाय छे ? ते कहो. ७ अंतरायनो अर्थ शुं ? ८ अंतराय केटला प्रकारना छे? ९ दानांतराय, उपभागांतराय, अने वीर्यातराय विपे समजावो. १० जेना उदयथी मागेली वस्तु मळे नहीं, ते केवो अंतराय १ ११ जुवानवय, रुप, अने भोग्य वस्तु मळी होय, ते छतां भागवी शकाय नहीं, ते केवा अंत-राय कहेवाय ? १२ दर्शनावरणीय कर्पना केटला प्रकार छे ? १३ निद्राना प्रकार केटला छे १ तेनां नाम आपो. १४ चक्षुर्द्शनावरणीय, अवधि दर्शनावरणीय, अने अचक्षु-र्दर्शनावरणीय विषे समजावाः १५ जेमां सामान्य रीते वधी वस्तुओ देखी शकाय, ते क्युं दर्शन कहेवाय छे ? १६ दर्शन एटले शुं ? तेनो अर्थ समजावो १७ निद्रारुप, पचलारुप, अने निद्रा निद्रारुप विषे समजावो १८ दिवसे

चिंतवेछं काम रात्रे निद्रा नखते जाग्रतनी पेठे थाय, तेवी निद्रानुं शुं नाम छे ? १९ थीणद्धी निद्राने संस्कृतमां शुं कहे छे ? २० थीणद्धी निद्रावाळा माणसमां केटछं वळ आवे छे ? २१ केवी निद्रावाळो नरकगामी होय छे ?

Entonin affirma manight resemble note

शिक्षके नीचेना शन्दोनी समजूती आपवी.

आच्छादन, नियत, अनुसारे, अपेक्षा, साक्षात्, रुपीद्रव्य, आत्मद्रव्य, निरावरण, अंतराय, फोरवी, सा-मान्य, उपयोग, चक्षु, मर्यादाथी, निद्रावस्था, जाग्रत अवस्था, वासुदेव, नरकगामी.

पाठ ४४ मो.

पाप भोगववाना प्रकार—भाग २ जो.

जेना उदयथी प्राणी स्वरुपवान तथा धनवान छतां नीच कुळने विपे उत्पन्न थाय, ते नीच गोत्ररूप नाये वीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी प्राणीने दु:खनोज अ-सुभव थाय, ते अञ्चाता वेदनीय नाये एकवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी वीतरागनां वचनथी विपरीत सदहणा धाय, ते सिध्यात्व सोहनीय नाये वावीशयो प्रकार छे. सहहणाने संस्कृतमां अद्धा कहे छे.

हवे स्थावर दंशकना दश प्रकार कहेवामां आवे छे. जे ताहाह, ताप विगेरेथी पीडाय, तोपण त्यांथी खसी शके नहीं, ते स्थावर कहेवाय छे. जेना उदयथी एवं स्थावरपणुं प्राप्त थाय, ते स्थावर नाम नामे त्रेवीशमो शकार छे. जेना उदयथी दृष्टिए न देखाय, एवा सर्व छोकमां व्यापी रहेला सूक्ष्मपणानी प्राप्ति थाय, ते सूक्ष्म नाम नामे चोवीशमो प्रकार छे. आ सूक्ष्म ते पृथ्वी विगेरे पांच सुक्ष्म समजवा. जेना उदयवी पोताने योग्य एवी पर्याप्ति पूरी कर्या विना मरण पामे, ते अपर्याप्त नाम कर्म नाम पचीशमो पकार छे. जेना उदयथी अनंता जीव वचे एक औदारिक श्ररीरनी प्राप्ति थाय, एवी निगोद अवस्था मळे, ते साधारण नाम कर्म नाम छवीशमो प्रकार छे. जेना उदयथी शरीरमां दांत विगेरे अवयवो स्थिर रहे नहीं, ते अस्थिर नाम कर्म नामे सत्यावीशमा प्रकार छे. जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय. एटले पग विगेरेना स्पर्शथी वीजाने रोष थाय, ते अशुभ नाम कर्म नामे अठ्या-वीशमो प्रकार छे. जेना उद्यथी माणस वधाने अळला-मणो लागे, ते दौभीग्य नाम कम नामे ओगणत्रीशमो मकार छे. जेना उदयथी कानने अप्रिय लागे, एवा स्वर नीकळे, ते दुःस्वर नाम कर्म नाम त्रीशमो पकार छे. जेना उदयथी लोकोने विषे तेनुं वोलवुं कोइ मान्य करे नहीं, ते अनादेय नाम कर्म एवा नामे एकत्रीशमो प्रकार

छे. जेना उदयथी लोकमां अपकीर्त्ति थाय, कोइ यग बोले नहीं, ते अयदा नाम कम नामे बत्रीशमो प्रकार छे. आ स्थावर दशक कहेवाय छे. पुण्य तत्वना त्रस दशकथी आ तहन विपरीत छे.

सारांश प्रश्नो.

१ नीच गोत्र अने भिध्यात्व मोहनीय एटले शुं १ ते समजावो २ जेना उदयथी पाणीने दुःखनोज अनुभव थाय, ते शुं कहेवाय ? ३ सदहणा एटळे शुं ? अने तेने संस्कृतमां शुं कहे छे ? ४ स्थावर दशक कया, ते एकंदर नाम साथे गणाबी ५ स्थावर एटले शुं ? ६ स्थावर नाम, अपर्याप्त नाम, अस्थिर नाम, दौर्भाग्य नाम, अने अनादेय नाम, ए तिषे समजूती आपो ७ जेना उदयथी दृष्टिए न देखाय, एवा सूक्ष्मपणानी माप्ति थाय, ते कयो पकार १ ८ जेना उदयथी निगोद अवस्था प्राप्त थाय, ते कयो प्रकार ? ९ जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अंगनो भाग सारो न होय, ते कयो प्रकार? १० जेना उदयथी कंठनो स्वर अभिय लागे, ते कयो प्रकार ? ११ जेना उदयथी लोकमां अपकीत्तिं थाय, ते कयो प्रकार ? १२ प्रण्य तत्वना त्रसद्शक अने आ स्थावर दृशकनी वचे शो तफावत छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

स्वरूपवान्, धनवान्, अनुभव, वीतराग, सद्दरणा, श्रद्धा, पर्याप्ति, औदारिक, निगोद अवस्था, रोप, मान्य, अपकीर्त्ति, विपरीतः

पाठ ४५ मो.

पाप भोगववाना प्रकार-भाग ३ जो.

(नरकत्रिक अने पचवीश कषाय.)

नरकतुं आयुष्य, नरकनी गति अने नरकनी अतुपूर्वी ए त्रण नरकञ्जिक कहेवाय छे. जेना उदयथी ए त्रणे प्राप्त थाय, ते नरकत्रिक नामे तेत्रीश, चोत्रीश अने पांत्रीश्रमो प्रकार छे. सामान्यथी सीळ कपाय अने नव नोकपाय एम मळीने पचवीश कपाय कहेवाय छे। अनं-तीं तुर्वधीना चार भेद, अमलाख्यानीयना चार भेद, भत्याख्यानीयना चार भेद, अने संज्वलना चार भेद, एम मळीने सोळ कपाय कहेवाय छे, अने वाकीना नव नोकपाय एम वधा मळीने पचवीश कपाय कहेवाय छे. जेना उद-यथी अनंत संसार वंधाय, एवा क्रोध, मान, माया अने लोभ, ए चार जावज्जीव सुधी कायम रहे छे, तेओ सम्यक्तवने आववा देता नथी, अने छेवटे जीवने नरकमां पहोंचाडे छे. आ चार अनंतानुवंधीमां क्रोध पर्वतनी

लींटी जेनो छे, मान पाषाणना थांभला जेनो छे, माया वांसना मूळ जेनी छे, अने लोभ कीर्मजना रंग जेनो छे; आ चार अनंतानुवंधीना आ प्रमाणे चार प्रकार थाय छे. अनंतानुवंधी कोध ए छन्नी राखो प्रकार छे, अनंतानुवंधी मान साडन्नी राखो प्रकार छे, अनंतानुवंधी माया आ-डन्नी राखो प्रकार छे, अने अनंतानुवंधी लोभ ओगण-चाळी राखो प्रकार छे.

जेना उदयथी जीव थोडं पण प्रत्याख्यान पामें नहीं, ए अप्रत्याख्यानीय कपाय कहेवाय छे. अप्रत्याखानीय एवा क्रोथ, मान, माया, अने छोभ एक वर्ष छुधी कायम रहे छे, तेओ देशिवरितपणाने आववा देता नथीं, अने छेवटे तिर्थवनी गतिने आपे छे. ते क्रोध छुकाएला तळावनी रेला जेवो छे, मान हाडकांना थांभ-ला जेवो छे, माया मेंडाना शींगडा जेवी छे, अने लोभ नगरनी खाळना कादव जेवो छे. आ चार अप्रत्याख्यानीय काय वालीकामो प्रकार थाय छे. अप्रत्याख्यानीय क्रोध चालीकामो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय मान एकतालिकामो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय मान लिकामो प्रकार छे, अप्रत्याख्यानीय माया चेंता-लिकामो प्रकार छे, अने अप्रत्याख्यानीय लोभ तेंताली-क्रामो प्रकार छे, अने अप्रत्याख्यानीय लोभ तेंताली-क्रामो प्रकार छे.

जेना उद्यधी सर्व विरित्तरूप प्रत्याख्यानतं आच्छा-दन पइ जाय, ते प्रत्याख्यानीय कपाय कहेवाय छे प्र-त्याख्यानीय एवा क्रोध, मान, माया, अने होभ ए चार मास सुधी टके छे, सर्व विरित्रिष चारित्रनो तेओ नाश करे छे, अने छेवटे मनुष्य गित अपावे छे तेओमां क्रोध रेतीनी लींटी जेवो छे, मान काष्ट्रना थांमला जेवो छे, माया बळदना मूत्रनी रेखा जेवी छे, अने लोभ गाहानी मळीना रंग जेवो छे. आ चार प्रत्याख्यानीय कषायना चार भेद पडे छे, तेमां प्रत्याख्यानीय क्रोध ए चुमाली-श्रामो प्रकार छे. प्रत्याख्यानीय मान ए पीस्तालीशमो प्रकार छे, प्रत्याख्यानीय माया ए छेतालीशमो प्रकार छे, अने प्रत्याख्यानीय लोभ ए सुडतालीशमो प्रकार छे.

जेना उदयथी चारित्र धारण करनारने पण थोडुंक तपावे, ते संज्वलन कषाय कहेवाय छे. संज्वलन एवा जोध, मान, माया, अने लोभ-ए चार भेद छे. तेओ एक पखवाडीआ छुधी रहे छे, यथाख्यात चारित्रने आ-वरण करे छे, अने देवतानी गतिने आपे छे. ए क्रोध पाणीनी रेखा जेवो छे, मान नेतरना थांभला जेवो छे, माया वांसनी छाल जेवी छे, अने लोभ हलदरना रंग जेवो छे. तेओमां संज्वलन क्रोध ए अडतालीकामो मकार छे, संज्वलन मान ए ओगणपचाकामो पकार छे, संज्वलन माया ए पचाकामो पकार छे, अने सं-ज्वलन लोभ ए एकावनमो प्रकार छे. आ प्रमाणे सोल कपायना सोल प्रकार थाय छे.

ज कपायने सहचारी एटेल कपायनां कारण हाय,

ते नोकषाय कहेवाय छे. तेना नव प्रकार थाय छे. जेना उदयथी हास्य, रित, अरित, शोक, भय, अने दुगंछा ए छ वानां उत्पन्न थाय, ते हास्य षट्क कहेवाय छे. हास्य कोइ निमित्ते अने निमित्त विना एम वे प्रकार छे. आ हास्य विगेरे छनां नाम उपरथी छ प्रकार थाय छे, एटले बावन, जेपन, चोपन, पंचावन, छ-एपन, अने सत्तावन एटला प्रकार थाय छे.

जेना उदयथी स्त्री भोगववानी इच्छा थाय, ते पुरुप वेद कहेवाय छे. आ वेद घासना अग्नि जेवो छे, ते
पुरुपवेद नामे अष्टावनमो मकार छे. जेना उदयथी
पुरुप भोगववानी इच्छा थाय, ते स्त्रीवेद कहेवाय छे.
आ वेदने वकरीनी लींडीओना अग्निनी उपमा अपाय
छे, ते ओगणसाठमो प्रकार छे. जेना उदयथी स्त्री
अने पुरुप वंने भोगववानी इच्छा थाय, ते नपुंसकवेद
कहेवाय छे. ते शहेर सळगी उठयुं होय, ते अग्निना जेवो
छे, ते साठमो प्रकार छे. आ प्रमाणे नोकपायना नव
भेद कहेवामां आंव्या.

सारांश प्रश्नो.

१ 'नरकत्रिक ' एटले शुं १ २ वधा मळीने कपाय केटला छे १ ३ नोकपाय केटला होय १ ४ नो-कपाय एटले शुं १ ५ नोकपाय शिवायना कपाय केटला छे १ ६ मुख्य सील कपाय कया १ ते गणावी ७ अ-

नंतानुवंधी कषायधी शुं थाय ? ८ अनंतानुवंधी कषाय क्यां सुधी रहे ? ९ तेओथी सम्यक्त्वने शुं थाय ? १० अनंतानुवंधी चारे कषायो कोना जेवा छे १ ते स-जावो. ११ अनंतानुवंधी चारे कषायो केटलामा प्रकारी छे ? १२ अपत्त्याख्यानीय कषाय एटछे शुं ? १३ अप-त्याख्यानीय कषाय क्यां सुधी रहे छे ? १४ तेओ होय, तो शी नुकशानी थाय, अने केवी गतिमां लइ जाय ? १५ अप्रत्याख्यानीय कपाय कोना जेवा छे, ते दरेकना जुदा जुदा दाखला आयोः १६ अप्रत्याख्यानीय चारे कषायो कइ संख्याना प्रकारो छे १ १७ प्रत्याख्यानीय कपाय एटले शुं १ १८ मत्याख्यानीय कपाय क्यां सुधी टके छे ? १९ प्रत्याख्यानीय कषाय केवां चारित्रनो नाश करे छे, अने केवी गति अपाने छे ? २० प्रत्याख्यानीय कषाय कोना जेवा छे १ ते दाखला आपी समजावी २१ ते केटली संख्याना प्रकारो छे ? २२ संज्वलन कपाय एटले शुं ? २३ ते कपाय क्यां सुधी रहे छे ? २४ तेओ केवा चारित्रने अविरण करे छे, अने केवी गति आपे छे ? २५ संज्वलन कपायना वधा दाखला आपो. २६ नोकपाय एटले शुं ? २७ हास्य पट्क एटले शुं ? ते छ क्या ? ते गणाबी २८ हास्यना केटला पकार छे ? २९ वेद केटला ? ते गणायो, अने तेमनां लक्षणो कहो. २० पुरुपवेद, स्त्रीवेद, अने नपुंसकवेदने केवा केवा अग्रिनी उपमा आपी छे ? ते जणावीन

विक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

नरकत्रिक, नोकषाय, अनंतानुवंधी, किमींज, देश विरति सर्व विरति, अमत्याख्यानीय, मलाख्यानीय, सं-ज्वलन, यथाख्यात चारित्र, सहचारी, हास्य षट्क, निमित्त.

पाठ ४६ मो.

पाप भोगववाना प्रकार-भाग ४ थो.

जेना उदयथी तिर्यचनी गति प्राप्त थाय, ते तिर्घ-च गति नामे एकंसठमो प्रकार छे. जेना उदयथी तिर्थ-चनी आनुपूर्वी प्राप्त थाय, ते तिर्धेचानुपूर्वी नामे वासटमी मकार छे. जेना उदयथी पृथ्वीकाय विगेरे पांच स्थावर जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय, ते एकेंद्रिय जाति नाम त्रेसटमो पकार छे. जेना उद्यथी वेइंद्री जीवोनी जातितुं शरीर पाप्त थाय, ते बेइंद्रिय जाति नामे चोसउमो प्रकार छें जेना उदयथी जुं, माकड, विगेरे तेरेंद्रिय जीवनी जातिनुं शरीर प्राप्त थाय, ते तेरेंद्रिय जाति नामे पांस-उमो मकार छे. जेना उद्यथी वींछी आदिक जीवोनी जातिना शरीरनी प्राप्ति थाय, ते चडरेंद्रिय जाति नामे छासडमो पकार छे. जेना उदयथी उंट तथा गधेडाना जेवी नडारी गति मळे, ते अशुभ विहायो गति नामे

सडसठमो प्रकार छे. जेना उद्यथी पोतानां जीभ, दांत विगेरे अवयवोमां हरस, रसोळी प्रमुख अवयवोथी पोतेन हणाय, ते उपघात नाम नामे अडसटमो प्रकार छे. जेना उदयथी अमगस्त वर्ण चतुष्क एटले काळो, नीलो, अशुभ वर्ण, अशुभ गंध, तीखो, कडवो, अशुभ रस अने भारे, वरसट, जीत, छखो अशुभ स्पर्ज, ए चार प्राप्त थाय, ते ओगणोतेर, सीतेर, एकोतेर अने बोंतेर, एम चार प्रकार थाय छे. जेना उदयथी अप्रथम संघयण एटले पहेली संघयण विना पांच संघयण प्राप्त थाय, ते पांच प्रकार थाय छे. जेना वे पासाए मर्कटबंध तथा जपर पाटो होय, ते रुषभनाराच संघयण नामे त्रींतेरमो प्रकार छे. जेने वे पासे केवळ मर्कटवंध होय, ते नाराच संघयण नामे चुंमोतेरमो प्रकार छे. जेने एक पासे केवल मर्कटबंध होय, ते अर्धनाराच संघयण नामे पंचोतेरमो मकार छे. ज्यां मांहोमांहे हाडकांने एक खीलीनो वंध होय, ते कीलिका संघयण नामे छोतरमो पकार छे. जेमां खीली विना केवल मांहोमांहे अडकी अमस्तां रह्यां होय, ते छेवहं संघयण नामे सत्योतेरमो प्रकार छे. जेना उदयथी पहेला शिवाय बीजा पांच संस्थाननी प्राप्ति थाय, ते अप्रथम संस्थान कहेवाय छे. जेमां वड वृक्षनी माफक नाभिनी एपर सारां लक्षण होय, अने नाभिनी नीचे सारां लक्षणो न होय, ते न्यग्रोध परिमंडळ संस्थान नामे अठ्योतेरमो प्रकार छे. ज्यां नाभि नीचेनुं अंग

सारं अने नाभि उपरतुं अंग नटारं होय, ते सादि संस्थान नामे ओगणाएशीमो प्रकार छे. ज्यां पेट विगेरे सारां लक्षणवाळां होय, अने हाथ, पग, माथुं अने केड विगेरे प्रमाण वगरनां कुघाटां होय, ते वासन संस्थान नामे एशीमो प्रकार छे. जेमां हाथ, पग, माथुं, केड विगेरे प्रमाणवाळां अने पेट विगेरे प्रमाण रहित होय, ते कुच्ज संस्थान नामे एकाशीमो प्रकार छे. जेमां वधा अवयव अशुभ होय, ते छुंडक संस्थान नामे ज्याशीमो प्रकार छे. आ प्रमाणे पाप तत्वना ज्याशी प्रकार थाय छे.

सारांचा प्रश्नोः

१ तिर्धेच गाति अने तिर्धेचानुपूर्वी एटले शुं १२ एकेंद्रिय विगरे केटली जातिओं छे १ ते समजावोः ३ इंट
तथा गधेडाना जेवी नटारी गति मळे, ते प्रकारनुं नाम
शुं १ ४ शरीर अवयवोमां हरस, रसोळी विगरे अशुभ
अवयवो थाय, ते कयो प्रकार १ ५ अप्रशस्त वर्ण चतुष्क
एटले शुं १ ते वधा प्रकार विषे समज्ज्ती आपोः ६ अपथम संघयण एटले शुं १ ७ जेना वे पासाए मर्कटवंथ
तथा उपर पाटो होय, ते केवी संघयण १ तेनुं नाम आपोः
८ नाराच अने अर्धनाराच संघयणमां शो तफावत छे १
९ छेदडुं संघयण केवी रीते होय १ ते कहो। १० ज्यां
मारामांटे एटकांने एक खीळीनो दंध होय, ते संघयणनुं

नाम शुं १ ११ अमथम संस्थान एटले शुं १ १२ नाभिनी नीचे नटारां लक्षणो होय, अने नाभिनी उपर सारां ल-क्षणो होय, ते केंबुं संस्थान १ १३ जेमां वधा अवयव अशुभ होय, ते कयुं संस्थान १ १४ सादि संस्थान, वामन संस्थान अने कुट्ज संस्थाननां लक्षणो आपो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अप्रशस्त वर्ण चतुष्क, संघयण, मर्कटवंध, कीलिका न्यग्रोध परिमंडळ, वामन, कुब्ज, हुंडकः

पाठ ४७ मो.

पाप तत्व विषे कविता.

मनहर.

हिंसा करे जीवतणी मृपावाद वोले वली, चोरी करे शीलतणो भंग करे आपथी; परिग्रहतणो करे संग्रह लोलुप वनी, हृदयमां धारे नित्य कोधने अमापथी; मान राखे मनमांहि मायाथी कपट करे, लोभतणे वश रही आते ललचाय ले; राग अने द्रेप धरी पक्षपात घणो करे, कलहथी कचवाट करतो दुभाय ले. वीजापर आळ नाखी मनमांही मकलाय,
चाडी करी चित्तमांहे अति हरखाय छे;
रित अरित धरीने खोटां काम करे घणां,
परतणी निंदा करी पेटमां धराय छे;
माया मृपावाद करी अनीतिने आचरतो,
मिध्यात्वतुं शल्य धरी धर्मथी धराय छे;
अहार प्रकार ए छे पापकेरा वंधतणा,
एथी अंध वनी जीव पापथी भराय छे.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ती आपवी.

संग्रह, लोखप, अमाप, पक्षपात, कलह, शल्य, अंध.

पाठ ४८ मो.

आश्रव तत्व.

जेनाथी जीवने विषे कर्म आवे, ते आस्त्रव फहेवाय छे जेम तळावमां पाणी आवे, तेम जीवरूप तळावमां जेनाथी कर्मरूप पाणी आवे, ते आस्त्रव कहे-वाय छे आ आश्रव पुण्य तथा पापना वंधनो हेत् होगाथी वे प्रकारे छे. तेओना अधिक अने न्यूनपणाधी घणा भेद थइ शके छे. शुभ अशुभ एवां मन, वचन, अने कायाना व्यापाररूप आश्रवनी सिद्धि पोताना आत्मामां स्वसंवेदन एटले स्वानुभव विगेरेथी प्रत्यक्ष छे, अने बीजाओमां मात्र वचन तथा कायाना व्यापारनी सिद्धि प्रत्यक्षथी छे, अने बाकीनाओनी सिद्धि तेना कार्यथी उत्पन्न थता अनुमानथी तथा आगमधी जणाय तेवी छे.

जेम तळावमां गरनाळाथी पाणानी आवक आवे छे, तेम जीवरुप तळावमां कर्मरुप पाणी इंद्रियरुप पांच गरनाळामांथी आवे छे, एथी करीने मूळ भेदनी अपेक्षाए प्रथम पांच इंद्रियोज आश्रवनां पांच कारण थाय छे. वळी मिध्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अने योग ए पांच पुनर्वधक जीवना ज्ञानावरणीय विगेरे कर्मनो वंध थवामा हेतुरुप छे, तेओने जैन मतमां आश्रव कहे छे. ते आश्रवना पांच इंद्रिय, चार कपाय, पांच अव्रत, पचवीश क्रिया, अने त्रण योग-एम वेंतालीश उत्तर भेद थाय छे. असत् देव, असत् ग्रुरु, अने असत् धर्म-तेने विषे सत् देव, सत् गुरु, अने सत् धर्मनी जे रुची, ते मिथ्वात्व कहेवाय छे। हिंसा विगरेथी जे न निवर्त्तवुं, तेने अविरति कहे छे। मदिरा विगेरेनी जेम असर, ते प्रमाद कहेवाय छे. कोध, मान, माया, अने लोभ ए कपाय कहेवाय छ, अने मन, वचन, तथा कायानों व्यापार तेने योग कहे छे।

सारांश प्रश्ना.

१ आश्रव एटले शुं १ २ आश्रवने दाखलो आपी समनावा. ३ आश्रवना मूळ केटला प्रकार छे १ ४ आ-श्रवनी सिद्धि तेना भेदमां केवी रीते थाय छ १ ५ मूळ भेदनी अपेक्षाए आश्रवनां कारण केटलां छे, अने ते क्यां १ ६ ज्ञानावरणीय कर्मनो वंध थवामां शो हेतु छे १ ७ ते हेतुने शुं कहे छ १ ८ आश्रवना वंतालीश उत्तर भेद केवी रीते थाय १ ते गणाको ९ मिध्यात्व, अवि-रित, प्रमाद, कवाय, अने योग-ए एांचनां लक्षणो शुं १ ते समजावो

दिक्षिके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

व्यापार, स्वसंवेदन, स्वातुभव, प्रत्यक्ष, अनुपान, मूळ भेदः अपेक्षाए, ज्ञानावरणीय, उत्तर भेदः

पाठ ४९ मो.

पांच इंद्रिय अने चार कपाय.

आ शरीरमां पांच इंद्रियो होय छे. इंद्रियोना छुदा छुदा विषयो होय छे. जेनायी स्पर्शनुं झान याय, ने स्पर्शनोदिय पहेवाय छे, जेनाथी खाटो, खारो, मीटो विगरे रसनो स्वाद छेवाय, तेने रसनेंद्रिय कहे छे, जेन्नाथी सारी अने नटारी गंध छइ शकाय, तेने घाणोंद्रिय कहे छे, जेनाथी दरेक दृश्य वस्तु देखी शकाय, तेने चक्षुइंद्रिय कहे छे, अने जेनाथी शब्द संभळाय, तेने आंत्रेंद्रिय कहे छे, आ पांच इंद्रियो द्रव्यक्षे चामडी, जीभ, नासिका, आंख, अने कान एवा नामथी ओ-ळखाय छे.

हवे चार कषायनां छक्षण कहेदामां आवे छे. जेनाथी प्राणी सचेतन के अचेतन वस्तु उपर कोइ निमित्ते अथवा निमित्त विना गुस्सो करे, ते क्रोध नामे पहेलो कपाय छे. मृदुता-कोमळतानो जे अभाव ते आन नामे वीजो कषाय कहेवाय छै ते यानना मद् अने खान एवा प्र-कार छे. प्राप्त थयेली वस्तुओथी जे अहंकार थाय, ते मद कहेवाय छे, अने वस्तु प्राप्त थइ न होय, ते छतां जे अहंकार थाय, ते सान कहेवाय छे. १ जातिमद, २ कुळमद, ३ वळमद, ४ रूपमद, ५ ज्ञानमद, ६ छाभ-मद, ७ तपमद, अने ८ अैश्वर्ययद-एय मदना आठ प्र-कार छे " हुं सारा मोसाळनो भाणेज छुं, " एम पो-तानी माताना पक्षनो एटले मोशाळनो मद करे, ते पहेलो जातिमद् कहेवाय छे. " भारा पितानुं कुळ दंचुं छे, " एम पोताना पिताना पक्षनुं अभिमान करे, अने वीजा-ओनी ते वायतमां निंदा करे, ते वीजो कुळसद कहे-वाय छे. पोताना वळतुं अभिमान करे, अने वीजाना

वलनी निंदा करे, ते त्रीजो चळमद कहेवाय छे. पोताना रूपनो गर्व करे. अने बीजाना रूपनी निंदा करे,
ते चोथो रूपमद कहेवाय छे. पोताने महाज्ञानी माने,
अने बीजाने तुच्छ युद्धि माने, ते पांचमो ज्ञानसद
कहेवाय छे. " मारा जेवो कोइ तपस्वी नधी," एम
तपनो गर्व राखे, ते छहो तपमद कहेवाय छे. पोताने
मोटो भाग्यवान माने, अने बीजाने निर्भागी माने, तेने
सातमो लाभमद कहे छे. पोताना अंश्वर्यमुं एटले पोतानी टकुराइनुं अभिमान करे, अने बीजाने तृण समान
गणे, ते आठमो अश्वर्यमद कहेवाय छे. आवी रीते
मानना पण मकार थइ शके छे.

जीव बीजाने ठगवा वास्ते जे जे विचारी करे, ते माया नामे त्रीजो कपाय छे. जेनाधी अधिक वस्तु प्राप्त करवानी जीवने लालच थाय, ते लोभ नामे चोयो फपाय छे.

आ प्रमाणे पांच इंद्रियो. अने चार कपाय ए नव भेद आश्रवना याय छे.

सारांश प्रभा.

१ इंद्रियो फेटली रोच १ २ पांच इंद्रियोनां नाम आपो, अने नेनां लक्षण आपो. ३ कपाय फेटला छ ? ४ जोधनुं लक्षण शुं ? ५ मानना केटला भेद छे ? ६ मान अने मदमां शो फेर छे ? ७ मद केटला प्रका-रनो छे ? ८ आठे मदनां नाम आपो. ९ मान केटला प्रकारनो छे ? १० जीव बीजाने ठगवा वास्ते जे विचारो करे छे, ते कषायनुं शुं नाम छे ?

िशिक्षके नीचेना शब्दोनी समजुती आपवी.

विषय, स्पर्श, द्रव्यरुपे, सचेतन, अचेतन, निमित्त, मृदुता, कोमळता, अभाव, महाज्ञानी, तुच्छगुद्धि, तपस्वी, तृण समान

पाठ ५० मो.

आठ मदनो त्याग करवा विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भला सौ भवी अंतरे वात लेजो, नहीं मद करी जीवने वंघ देजो; नहीं मातृना पस्थी मान पामा, नहीं कुलमदे गर्वधी नित्य जामो. नहीं बळतणुं मान रे दित्त धारो, यशो निर्वेळा सद्य ए वात धारो; कदि रुप पामा रुडां कर्मयोगे, यशों ने गिरि गर्वना भाग्य भोगे. कदि ज्ञानधारी वनो पूर्ण सारा, न रहेशो मदे शानना भेग प्याराः बन्या जो कदि भाग्यना छाभवाळा, तदा छोडजो गर्वना सर्व चाळा. Ę तपस्पा कहं सर्वधी हुंज सारी, फरे अन्य ते सर्वदा छे नटारी; तपस्या तणो गर्च एवो न धारी, नधी मार्ग ते धर्मनो सर्व सारो. अभागी गणी अन्यने में हुदेधी, बनो दुरीणी लाभना ते मदेयीः यदि चित्त अंश्वर्यनो गर्व राखो, तदा पर्वनां दुष्पळो सच चाखो. गण्या पदतणा आ वधा आड भेदो, करी दूर ते कमेने नित्य छेदोः करे चिचपी जे सदा ए विचारी, धरों ने कड़ी गर्वने धारनारों.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

भवी, अंतरे, मातृना, निर्वळा, गिरि, भाग्यभोगे, अन्य, हदेथी, दुर्गुणी, अैश्वर्य, दुष्फळो.

पाठ ५१ मो.

पांच अव्रत-भाग १ लो.

आश्रव तत्वना वेंतालीश प्रकारमां पांच अव्रत आवे छे। पांच व्रतथी जे विपरीत, ते पांच अव्रत कहेवाय छे। कोइ पण जीवना दश प्राणोनो वध करवो, ते जीव-हिंसा नामे पहेलुं अव्रत कहेवाय छे। मृपावाद—जुड़ं वोलवुं, ते बीजुं अव्रत छे। अदत्तादान—वीजानी वस्तु धोरी लेवी, ते त्रीजुं अव्रत छे। व्रह्मचर्यनो त्याग एटले मैथुन हुं सेववुं, ते मैथुन नामे चोथुं अव्रत कहेवाय छे। नवविध परिग्रहनो संचय करवो, ते पांच प्रं परिग्रह अव्रत कहेवाय छे।

पहेला जीवहिंसा अव्रतना चार भागा छे १ द्रव्यधी हिंसा, भावधी नहीं, २ द्रव्यथी हिंसा नहीं, पण भावधी हिंसा, ३ द्रव्यथी अने भावधी हिंसा, अने ४ द्रव्यथी अने भावधी हिंसा, अने ४ द्रव्यथी अने भावधी हिंसा, नहीं।

साधूने समाचारी, मतिलेखना करतां, मार्गमां विद्वार फरतां, नदी प्रमुख उतरतां, नावमां वेसी नदी ओळंगतां, नदीमां तणाइ जतां एवां साध्वी विगेरेने बद्दार काढनां, वरपाद वरसतां, धंढील जतां, वरसादमां ग्लान साधु-ओनी मात्राने परठवतां, गुरुना शरीरने व्याधीने प्रसंगे, तथा धाक लागवाधी पगचंपी करतां ने हिंसा थाय, ते द्रव्यहिंसा पहेवाय छे; तथा श्रावकोने जिन मंदिर व-नावतां, जिन पूजा करतां, साधिमं वात्सल्य, तीर्ध यात्रा, रथ यात्रा, अहाइ महोत्सव, मतिष्टा, अने अंजनशङाका परवां, अने गुरुनी सन्मुख सांपैधुं करी जतां, इत्यादि फर्त्तव्य करतां ने हिंसा याय छे, ते सर्वे द्रव्यहिंसा छे; परंतु भावहिंसा नधी. कारण के आ हिंसा मसंगे साधु तथा श्रावकनां परिणाम चणांज सारां होय छे, माठां अध्यवसाय नधी, अने उपयोगधी प्रवर्त्तन छे, तेथी ते द्रव्यहिला छे. आदी हिंसामां पाप अन्य अने निर्जरा मणी होय है.

वीजा भागामां द्रव्यथी हिंसा न होय, पण भावधी होयः जेमके जे हुरुप उपरथी छांत देखाता होय, पण तेना अंताकरणना अध्यवसाय पणा मलीन अने हिंसामय होय हे, ते पोतानां इद्यमां अनेक मकारे जीवहिंसा फरवानां गामनो संकल्य वियल्य क्यों करे छे. जो के ते हिंसा यरने नथीं, तेथी द्रव्यथी हिंसा नथीं. परंतृ तेना अध्यवसाय हिंसामय हाकाथी ते भावधी हिंसा है,

आवी भावहिंसा करनारने अनंतकाळ सुधी आ संसारमां भ्रमण करवुं पढे छे.

त्रीजा भागामां द्रव्यथी अने भावथी वंनेथी हिंसा रहेली छे इंद्रियोना विषयोमां, तेमज कषायमां अति छुव्ध यह जीवहिंसा करे, कसाइ बने, शिकार करवा जाय, विश्वासघात विगेरे जीव जाय तेवां काम करे, अने तेनाथी लाभ थता जोइ मनमां आनंद माने, ते द्रव्य अने भावथी—वंनेथी हिंसा छे, आवी हिंसाथी संसारमां भ्रमण अने दुर्गति प्राप्त थाय छे.

चोथा भागामां द्रव्यथी अने भावधी—वंनेथी हिंसा होती नथी। आ भागो शून्य छे, आवा भागावाळो कोइ पण जीव संसारमां होतो नथी।

सारांश प्रश्नो.

१ पांच अवत शेमां आवे छे १ २ अवत एटले छे १ ३ जीवहिंसा एटले छे १ ४ मैथुन एटले छे १ ते सम-जावो ५ पहेला अवत जीवहिंसाना केटला भांगा छे १ ६ पहेला भांगामां साधु अने श्रावकने द्रव्यहिंसा केवी रीते थाय १ ते समजावो, अने दाखला आपो. ७ द्रव्य-हिंसामां पाप केटलुं लागे १ अने निर्जरा थाय के नहीं १ ८ भावहिंसानो दाखलो आपो ९ भावहिंसा कर्याधी केवुं फळ थाय १ १० द्रव्यथी अने भावधी हिंसा केवी कहेवाय १ अने तेवी हिंसाथी थुं फळ याय १११ चोथो भांगो केवो छे १ चोया भांगावाळो कोइ जीव होय के नहीं १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

वध, मैथुन, समाचारी, प्रतिलेखना, विहार, नाव, थंडील, ग्लान, मात्रा, परठवतां, साधिमेवात्सल्य, तीर्थयात्रा, रथयात्रा, अद्वाइमहोत्सव, प्रतिष्टा, अंजनशलाका, कर्त्तव्य, अध्यवसाय, उपयोग, पवर्त्तन, अल्प, निर्जरा, शांत, मलीन, हिंसामय, संकल्प विकल्प, अति छुब्ध, शून्य.

पाठ ५२ मो.

पांच अव्रत भाग २ जो.

बीजा अव्रत मृषावादना पण उपर प्रमाणे चार भांगा यह शके छे कोइ साधु रस्तामां चाल्या जता होय, तेमनी आगळ जंगळनी गायो तथा हरण विगेरेनुं टोळं प्रसार यह चाल्युं गयुं होय, ते वखते ते टोळानी शोध करतो कोइ शीकारी शख छइ चाल्यो आवे, ते शीकारी पेळा जीवोनो शीकार करवा वास्ते साधुने पुछे के, तमे अहींथी कोइ जानवरोने जतां जोयां छे ? साधु तेनो

उत्तर नहीं आपतां मौन रहे, एटले ते शीकारी जवाब मेळववा सारु साधु उपर हुमलो करे, अने मारे; त्यारे साधु कहे के, में ते जानवरोनां टोळांने जतां जायां नथी। जो के साधुनुं आ बोलवुं द्रव्ये जुठुं छे, परंतु भावे जुठुं नथी; जे इंद्रियोना भोगने वास्ते तेमज छोभ विगेरे कषायने लीधे जुढुं बोले, ते भावथी जुढुं कहेवाय छे. अहीं तो साधुनुं जुडुं वोलबुं निरपराधी प्राणीओनी द्या वास्ते थयेछं छे, तेथी वास्तविक रीते ते मृषावाद नथी. आ अवत मुषावादनुं पहेलुं भांगुं छे. कोइ मनुष्य मुख्यी तो कांइ बोलतो नथी, पण बीजाने उगवा वास्ते मनमां अनेक जातना जुटा विकल्प करे, आ द्रव्यथी मृषावाद नथी; परंतु भावथी मृषावाद छे. आ वीजा अव्रत मृषावादनुं बीज़ं भांगु छे. कोइ माणस मुखयी असत्य वचन बोले छे, अने अंतःकरणमां पण छळ कपट करवाना मळीन अध्य-वसाय छे, आ द्रव्ययी अने भावथी मृपावाद छे. आ अत्रत मृषावादनुं त्रीजुं भांगुं छे. चोथुं भांगु पूर्वनी जेम शून्य छे.

पूर्वनी जेम अदत्तादान एटळे चोरी करवाना त्रीजा अत्रतना पण चार भांगा थाय छे कोइ स्त्री शीळवती होय, तेना शीळनो भंग करवाने कोइ दुष्ट राजा तेने पकडीने पोताना कवजामां राखे

आ खबर कोइ धार्मिक पुरुपना जाणवामां आवतां ते स्त्रीनां जीळतुं रक्षण करवा वास्ते ते धर्मी पुरुप हींमत करी, ते स्त्रीने राजाना कवजामांथी राज्य वाहेर छइ जाय तो व्यवहारथी ते पुरुषे राजानी आज्ञा भैगरुप चोरी अथवा स्त्रीनी चोरी करी छे, परंतु वास्तविक रीते चोरी नथी

कोइ पुरुष पोताना घरमां द्रव्य राखी घरनां द्वार बंध करी परदेश गयेल छे, पछवाडे गाममां चोरनो उपद्रव थयों ते परदेश गयेला माणसतुं द्रव्य चोराइ जशे, एम तेना फोइ हितेच्छु पुरुषने लागवाथी रात्रिने समये ते परदेश गयेला पुरुषना घरनां द्वार खोली, तेतुं सघलं द्रव्य ले, अने ज्यारे ते पाछो परदेशथी घर आवे, त्यारे तेने पाछुं आपवानी बुद्धिशी ते पोताना घरमां राखे आ दृष्टांतमां बीजानुं द्रव्य तेनी रजा शिवाय तेना क्वजामांथी लड़ लेवाथी ते द्रव्यथी चोरी थाय छे, परंतु तेना हृदयमां बद्धातनो अभाव होवाथी भावथी चोरी यती नथीं. आ त्रीजा अत्रतनो पहेलो भांगो छे।

कोइ पुरुष चोरी करतो नथी, परंतु चोरी करवाना अध्यवसाय तेना मनमां थया करे छे, ते द्रव्यथी चोरी नहीं, पण भावथी चोरी छे. जे श्री वीतराग सर्वज्ञ परमात्मानी आज्ञाना भंग करनारा छे, तेओने भावचोर कहेला छे कोइ पुरुष चोरी करे, अने चोरी करवानो अध्यवसाय पण राखे, ते द्रव्यथी अने भावथी चोरी छे चोथो भांगो पूर्वनी जेम शून्य छे.

सारांदा प्रश्नो.

१ बीजा अवत मृषावादना केटला भांगा छे १ २ पहेला भांगानं हष्टांत आपो. २ बीजा अने त्रीजा भांगा विषे दाखला साथ समजावो. ४ त्रीजा अवत चोरीना केटला भांगा छे १ ५ चोरीना पहेला भांगा उपर जे जे दष्टांत होय ते कहो. ६ कोइ पुरुष परदेश गयेला बीजा माणसनं धन चोराइ न जाय, तेवा हितविचारथी लइने पोताना चरमां राखे, ते कयो भांगो कहेवाय १ ७ भावचोर कोने कहेवाय १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

मौन, वास्तविक, विकल्प, अध्यवसाय, शीलवती, भंग, जपद्रव, हितेच्छु, अभाव, वीतराग, सर्वज्ञ, परमात्माः

पाठ ५३ मो.

पांच अवत-भाग ३ जो.

चोथा अव्रत अव्रह्मचर्य (मैथुन) ना पण उपरनी जेम चार भांगा थाय छे. कोइ साध्वी जळमां इवती होय, तेने देखी कोइ साधु तेने वाहेर काढवाने वास्ते पकडे, तेमज कोइ गृहस्थ, पढी जती कोइ स्त्रीने तेना रक्ष- णने मांट पकडे, तेवा पसंगोमां पकडवुं ते स्पर्शवडे द्रव्यथी
मैथुन छे, परंतु भावथी नथी; ते पहेलो भांगो छे बीजा
भांगामां कोइ पुरुष स्त्रीने भोगवतो नथी, परंतु तेना
मनमां स्त्री सेवन करवानी अभिलाषा बहुज रह्या करे छे,
ते द्रव्यथी मैथुन नहीं, परंतु भावथी मैथुन छे. त्रीजा
भांगामां स्त्रीनी साथे जे इच्छापूर्वक मैथुन करवुं, ते
द्रव्यथी अने भावथी मैथुन छे. चोथो भांगो पूर्वनी जेम
शुन्य छे.

पांचमा अत्रत परिग्रहना पण चार भांगा छे का-योत्समें रहेला कोइ मिनना गळामां कोइ माणस हार विगेरे आश्रूषणो पहेरावी जाय, ते जोइने बीजा अजाण्या माणसो तेमने परिग्रहवाळा धारे, पण मिनने ते पदार्थ उपर परिग्रहनी बुद्धि नथी, तेवा प्रसंगमां द्रव्यथी परिग्रही कहेवाय, ते भावथी परिग्रही नथी, ते पहेलो भांगो छे

कोइ पुरुष पासे एक कोडी पण नथी, परंतु तेने द्रव्य मेळववानी बहुज अभिलाषा रह्या करे, ते भावधी परिग्रही छे, द्रव्यथी नहीं त्रीजा भांगामां धन पण पासे होय, तेना उपर मूर्छा होय, अने धन मेळववानी अभिलाषा पण रह्या करे, ते द्रव्यथी अने भावधी परिग्रही छे. चोथो भांगो शून्य छे.

सारांश प्रश्लो

१ चोथा अव्रतना केटला भांगा छे १ २ पहेला भांगानो दाखलो समजावो ३ बीजा अने त्रीजा भांगाने दाखला साथे समजावो ४ पांचमा अव्रतना केटला भांगा छे १ ५ तेना पहेला तथा बीजा भांगाने दाखला साथे समजावो.

शिक्षके निचेना शब्दोनी समजूती आपवी. अब्रह्मचर्य, इच्छापूर्वक, कायोरसंगी, आभूषणः

पाठ ५४ मो

त्रण योग अने पचवीश क्रिया—भाग १ लो.

आश्रव तत्त्वना त्रण योगथी वीजा त्रण प्रकार थाय छे. श्रुभ अश्रुभनी अंदर मनने जोडवुं, ते पहेलो मनो-योग कहेवाय छे. श्रुभ अश्रुभनी अंदर वचनने जोडवुं, ते बीजो वचनयोग कहेवाय छे, अने श्रुभ अश्रुभनी अंदर कायाने जोडवी, ते त्रीजो काययोग कहेवाय छे.

आश्रव तत्वना वीजा पचवीश प्रकार पचवीश क्रि-याओधी थाय छे. कायाने जयणा विना पवर्त्तावतां जे छागे, ते काायिकी नामे पहेली क्रिया कंहेवाय छे. आ कायिकी किया वे प्रकारनी छे. अनुपरता कायिकी किया अने अनुपयुक्त कायिकी क्रिया। अति दुष्ट एवा मिध्या-द्रिष्ट जीव मन वचननी अपेक्षा विना बीजा जीवने पीडा थाय, तेवो कायानो उद्यम करे, ते पहेलो प्रकार छे, अने जे प्रमादी संयमी उपयोग विना अनेक कर्तव्यरुपे कायानो व्यापार करे, ते बीजो प्रकार छे.

कसाइ विगेरे शस्त्रथी बीजा जीवोनो घात करी, पोताना आत्माने नरक गतिमां जवानो अधिकारी करे, ते आधिकरणिकी नामे बीजी क्रिया छे, अथवा अधि-करण एटले घरनां उपकरणोथी जे जीवनो नाश करे, ते पण आधिकरणिकी किया कहेवाय छे. आ आधि-करणिकी क्रियाना वे प्रकार छे. एक संयोजना, अने बीजी निवर्त्तना. झेर, फांसी, धनुष्य, यंत्र, तछवार विगेरे जीवहिंसा करवानां शस्त्रोने जीवोने मारवा वास्ते संयोजन करे, एटले जोडीने एकटा करे, जेम धनुष्यनी साथे तीर जोडे, ए विगेरे वधा संयोजना आधिकर-णिकी क्रियामां आवे छे. तळवार, तोमर, शक्ति, तोप, अने वंधुक, विगेरेने नवां सरस बनाववां, ए निवर्त्तना आधिकरणिकी क्रियामां आवे छे. जीव एटले पाणी, अने अजीव एटले खुंटो, कांटो, पध्थर, विगेरे-ते बंनेनी उपर द्वेष करे, ते प्राद्वेषिकी नामे त्रीजी किया छे. पोताना हाथेथी तेमज बीजाने हाथे जीवोने मार मारी परिताप उपजाववो, ते परितापनिकी नामे चोथी क्रिया

छे. ते क्रियाना वे भेद छे. स्त्री, पुत्र विगेरेना वियोगधी दुःखी थइ जे पोताने हाथे छाती तेमन मस्तक कूटबुं, ते स्वपरितापना नामे पहेलो भेद छे, अने पुत्र तथा शि-ष्यने मार मारवो, ते परपरितापना नामे बीजो भेद छे. जे पोताना तथा बीजाना जीवने हणवो हणाववो, ते प्राणातिपातिकी नामे पांचमी किया छे. पोताने हाथे पोतानो घात करवा, जेमके क्रवामां पडी मरबुं, प-र्वत उपरथी गरी पडवुं, अग्निमां झंपलाववुं, अने शेर खावुं, ए बधी आत्मघातनी क्रिया ते पहेलो भेद छे, अने कषायने वश थइने बीजा एकेंद्रिय प्रमुख जीवनो घात करवा, ते बीजो भेद छे, जेथी पृथ्वीकाय विगेरे छकायना जीवोने। उपघात थाय, तेवा खेती प्रमुख का-र्यनो आरंभ करवो, ते आरंभिकी नामे छद्दी क्रिया छे. धन, धान्य विगेरे नव प्रकारना परिग्रह मेळवतां तथा तेनी उपर मोह करतां जे किया लागे, ते पारिग्रहिकी नामे सातमी किया छे. माया-कपटथी बीजाने उगबुं, ते माया प्रत्ययिकी नामे आठमी क्रिया छे। जिन वचन-पर श्रद्धा न राखतां, विपरीत प्ररुपणा फरवाथी जे क्रिया लागे, ते मिथ्या दुर्शन प्रत्यियकी नामे नवमी किया छे. अविरतिए करी पचखाण छीधा विना सर्व खावा पीवानी वस्तुनो केमां न्याग निह, एवा जे असं-यती रहेतां क्रिया लागे, ते अप्रत्याख्यानिकी नामे द्शमी किया छे. घोडा विगेरे जीव तथा रथ प्रमुख अ.

जीवोने जोवा वास्ते जवुं, ते द्रष्टिकी नामे अगीयारमी क्रिया छे. रागने वश थइने जे पुरुष, स्त्री, गाय, बळद, अने वस्न विगेरे जीव अजीव सुकुमार वस्तुने स्पर्श कर-वाथी जे किया लागे, ते स्पृष्टिकी अथवा पृच्छिकी नामे बारमी क्रिया छे. बीजाने घेर हाथी, घोडा, वस्न, विगेरे उमदा वस्तु जोइ, 'ए वस्तु एनी पासे केम होय, 'एवं चितववाथी जे क्रिया छागे, ते प्रातित्यकी नामे तेरमी क्रिया छे. जीव एटले पोताना घोडा विगेरेने जीवा आ-वेला लोकोने मशंसा करतां जोइने जे हर्ष लाववो ते, अने अजीव एटछे घर, आभूषण, वस्न, विगेरे जोवा आवेला लोकोने प्रशंसा करतां जोइने हर्ष लाववो ते, अथवा द्ध, दहीं, घी, अने तेलनां पात्र उघाडां मुकवाथी तेमां जे त्रस जीव आवी पडे, तेनी हिंसाथी जे क्रिया छागे, ते सामंतोपनिपातिकी नामे चौदमी क्रिया छे. जीव एटले मनुष्य विगेरे तथा अजीव एटले पथरा वि-गेरेने फेंकवा, ते नैशस्त्रिकी नामे पंदरमी किया छ, अथवा वीजाओए उपदेश करेलां पापमां जे घणा काळ पवर्त्ते, अने ते पापनी भावथी अनुमोदना करे, ते पण नैशिक्तकी नामे पंदरमी किया कहेबाय छे पोताना हाथथी जे पापनी किया करे, ते स्वहस्तिकी नामे सोळमी क्रिया छे.

सारांश प्रश्नो.

१ योग केटला १२ मनोयोग, वचनयोग, अने काययोगनां लक्षणो कहो। ३ आश्रव तत्वना प्रकारीमां जे क्रियाओ गणेली छे, ते केटली छे ? ४ कायिकी किया एटले शुं १ ५ कायिकी कियाना केटला भेद छे १ ६ अनुपयुक्त कायिकी क्रियानो अर्थ समजावो. ७ आ-धिकरणिकी क्रियानो अर्थ शो ? ते समजावो ८ संयो-जना अने निवर्त्तना विषे समजूती आपो ९ जीव तथा अजीव उपर द्वेष करे, ते कइ क्रिया कहेवाय ? १० स्व-परितापना अने परपरितापना ए कइ क्रियाना भेद छे ? ११ माणातिपातिकी क्रियाना केटला भेद छे १ १२ जेमां पृथ्वीकाय विगेरे छकायना जीवोनो उपघात थाय, अने तेथी जे क्रिया लागे, ते क्रियानुं शुं नाम १ १३ परि-ग्रहिकी अने अमत्याख्यानिकी कियानो अर्थ शुं ? १४ वीजाने कपटथी ठगवुं, ए कियानुं नाम शुं ? १५ जिन वचनपर श्रद्धा न राखतां विपरीत प्ररुपणा करवाथी कइ क्रिया लागे ? १६ जीव अजीव सुकुमार वस्तुने स्पर्श करवाथी कइ किया लागे ? १७ द्रष्टिकी अने पातित्यकी क्रियानो अर्थ शुं ? १८ पोताना हाथथी जे पापनी किया करे, ते क्रियानुं नाम शुं १ १९ जीव अजीन वस्तुने फेंकवाथी कड़ क्रिया लागे ^१

जिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ती आपवी.

शुभ, अशुभ, जयणा, मिध्याद्रष्टि, अपेक्षा, पमादी संयमी, कत्त्रच्य रुपे, व्यापार, उपकरणो, यंत्र, संयोजन, तोमर, शक्ति, द्वेष, परिताप, आत्मघातनी, विपरीत म-रुपणा, सुकुमार,

पाठ ५५ मो

त्रण योग अने पचवीश क्रिया-भाग २ जो.

श्री अरिइंत भगवाननी आज्ञा उछंदन करी, पोन्तानी बुद्धिथी जीवाजीव विगेरे पदार्थ प्ररुपणा करवाथी जे किया लागे, ते आज्ञापनिकी नामे सत्तरमी क्रिया छे. बीजानां अछतां माठां आचरणने प्रकाश करी, तेनी पूजानो नाश करवो, तेथी उत्पन्न थयेली जे किया लागे ते, अथवा कांइ सचित के अचित वस्तु विगेरे विदारवाधी जे किया लागे, ते चैदारणिकी नामे अढारमी किया छे. आभोय एटले उपभोग, तेथी जे विपरीत होय, ते अनाभोग कहेवाय छे. तेनाथी जे क्रिया लागे, अथवा देख्या विना तेमज मार्जन कर्या विना भींत के जमीन विगेरे उपर शरीर नाखवाथी जे क्रिया लागे, ते अनाभोगिकी नामे ओगणीशमी क्रिया छे. परमेश्वरे कहेल

जे करवा योग्य विधिओ, तेमांनी कोइ पोताने तथा कोइ परने हितकारी छे, तेवी विधिओयां ममादने लड़ अनादर करवा, ते अनवकांक्षाप्रत्यायिकी नामे वांशमी किया छे. प्रयोग एटले मन, वचन, अने कायानी व्यापार, दोडवुं, चालवुं, विगरे कायानो व्यापार, हिंसाकारी कठोर तथा 'जुढुं वोलवारुप वचननो व्यापार, अने वीजानी इपी तथा अभिमान विगेरे मननो व्यापार, ए त्रण व्यापार करवाथी जे किया छागे, ते प्रायोगिकी नामे एकवी-ज्ञमी क्रिया छे, जेणे करीने विषयनुं ग्रहण थाय, ते समुदान एटले इंद्रिय कहेवाय छे. तेनो देशथी अने स-र्वथी उपघात करवा जेमके आदेश आपीने नीभाडा वि-गेरे हिंसानां काम कराववां, ते समुदान नामे वावी-शमी किया छे. याया—कपट तेमज लोभथी जे क्रिया करवामां आवे, ते प्रेखप्रत्यायिकी नामे त्रेवीशमी किया छे. क्रोध तथा माने करीने जे थाय, ते देपप्रत्ययिकी नामे चोवीशमी किया छे. चालवाथी जे किया लागे, ते इर्यापथिकी नामे पचवीशमी क्रिया छे. आ पचवीश कियाओमां केटलीएक क्रियाओ आपसमां सरखी जणाय छे, तोपण ते सूक्ष्म रीते सरखी नथी, एम समजवुं,

ं सारांश प्रश्नो.

१ आभोग एंटले शुं, अने अनाभोग एटले शुं ?

२ अनाभागथी जे किया लागे, ते कियानुं शुं नाम छे ? २ आज्ञापनिकी अने वैदारणिकी किया एटले शुं ? ते समजावो १४ कपट अने लोभधी जे किया करवामां आवे, ते कियानुं शुं नाम ? ५ परमेश्वरे कहेल विधिओ-मां प्रमादथी अनादर करवी, ते कह कियाओ कहेवाय ? ६ प्रयोगिकी अने ससुदान किया विषे बरावर सम-जावो ७ द्वेषप्रत्यधिकी अने इयोपिथिकी कियानो अर्थ शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

ड्छंघन, प्ररूपणा, अछतां, विद्यार्डं, उपयोग, मा-र्जन, विधि, हितकारी, अनादर, व्यापार, समुदान, उपघातः

पाठ ५६ मो

आश्रव तत्व विषे कविताः

दोहरा.

जेथी आवे कर्पजळ, जीव सरोवरमांय, ते आश्रवतुं सर्वेथी, छक्षण श्रेष्ट गणाय. तेना वेय प्रकार छे, अशुभ अने शुभ नाम,
मनवच काया योगथी, जाणो ते अभिरामः २
इंद्रिय पांच कषायनी, संख्या छ वळी चार,
अन्नत पांचे जाणवां, त्रण योग छे सारः ३
कियातणी पचवीश छे, संख्या आगम सार,
वेंतालीश भेदो कहा, ए आश्रव आधारः ५

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कर्मजळ, जीव सरोवर, वच, अभिराम, आग-म सार.

पाठ ५७ मो.

संवर तत्व.

नव तत्वोमां आ संवर तत्त्व छहं तत्व छे. सं-वरनो अर्थ रोकवुं थाय छे. उपर कहेळा आश्रव तत्वथी जीवनी अंदर आवनारां नवां कमींने जे रोकी शके, ते संवर कहेवाय छे. ते संवरना एकंदर सत्तावन भेद थाय छे. पांच समिति, त्रण ग्रिति, दश प्रकारना यित धर्म, दार भावना, वावीश परीपह, अने पांच प्रकारनां चारित्र, ए मळीने सत्तावन भेद थाय छे. ते संवरना द्रव्य अने भाव एवा वे भेद पडे छे। जे नवां कर्मनुं रोकावनुं, ते द्रव्यसंवर कहेवाय छे। समिति विगेरेथी जे शुद्ध उपये।गरुप द्रव्यपणुं परिणामने पामे, अने तेथी करीने आत्माना परिणाम भाव कर्मना रोधक थाय, एटले रोकनार थाय, ते भावसंवर कहेवाय छे।

सारांश प्रश्नो.

१ संवर तत्व केटलामुं तत्व छे १२ संवर शब्दनो अर्थ शो १ ३ संवर तत्वना भेद केटला छे १४ संवरना एकंदर भेद गणावो ५ द्रव्यसंवर अने भावसंवर शुं १ वे समजावो ६ भावसंवरमां आल्मानां परिणाम केवां थाय १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ती आपवी.

समिति, गुप्ति, यतिधर्म, भावना, परीषद्द, चारित्र, शुद्ध जपयोग, परिणाम, भावकर्म, रोधक.

पाठ ५८ मो.

ं संवर तत्वना सतावन भेद्र

पांच समिति अने त्रण गुप्ति.

शास्त्रने अनुसारे शुभने चेष्टा करवी, ते सामिति फहेवाय छे, ते समितिना पांच भेद छे. इयी समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदाननिक्षेपणा समिति, अने पारिष्टापनिका समिति—एवा तेनां जुदां जुदां नाम छे. जवा आववाने विषे जयणापूर्वक उपयोग राखवो, ते इर्या समिति कहेवाय छे. पवित्र जैन मुनि घणी संभाळथी चाक्रे छे, त्रस तथा स्थावर जीवोने अभयदान आपवाने तेओ हमेशां इयी समिति राखे छे, इयी समितिथी वर्त्तनारा मुनि जीवोनी तथा पोतानी रक्षाने माटे पगना अंगुडाथी चार हाथ प्रमाण भूमिने आगळ देखीने चाले छे. आ प्रमाणे इयी समिति राख्या छतां कदि कोइ जीव मरी जाय, तोपण बहुज शुभ उपयोग राखनारा साधुने हिंसानो वंध थतो नथी वचन वोलवागां जे सारी रीते उपयोग राखवो, ते वीजी भाषा समिति कहेवाय छे. भाषा समितिने साचवनार पुरुष पाप सहित अने कठोर भाषा बोले नहीं. " तुं धूर्त छे, तुं कामी छे, अने हुं राक्षस छे. " आवा नटारा शब्दो, तेना मुखमांथी नीकळता नथी. बीजाने मुखदायक, अत्प, घणा

प्रयोजनने साधनार, अने संदेह विनानां वचनो जे वोलवामां आवे, ते भाषा समिति छे बेंतालीश प्रकारनां दूषणोथी रहित, एवा आहार विगेरेने ग्रहण करवा, ते त्रीजी एषणा समिति छे. एषणाना अर्थ इच्छा थाय छे. एषणा समितिवालो पुरुष निर्दोष अने शुद्ध आहारनी गवेषणा करे छे. बेसतां, उठतां, अने कोइ चीज लेतां के मुकतां पुंजवानो उपयोग राखवो, ते चोथी आदान निक्षेपणा समिति कहेवाय छे.

विष्टा, मूत्र, थुंक, बडखा, शरीरनो मेल, वस्न, अन्न अने पाणी जे शरीरने उपयोगना न होय, ते सर्व जीव विनानी भूमिमां परठवे, तेवा उपयोगने पांचमी पारिष्टापनिका समिति कहे छे.

मन, वचन, अने कायाना योगने गोपववा, ते गुप्ति कहेवाय छे, ते मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, अने कायगुप्ति, एवा त्रण पकारनी छे. जे मनने गोपववुं, ते पहेळी मनोगुप्ति छे, जे वचनने गोपववुं, ते वीजी वचनगुप्ति छे, अने जे कायाने गोपववी, ते त्रीनी कायगुप्ति छे.

उपर कहेल पांच समिति अने त्रण गुप्ति, ए आठ बोल चारित्रनो निर्वाह करवाने मोट माता समान छे, तथी तेने बास्त्रमां अष्टमवचनमाता एवा नामधी कहेवाय छे.

सारांश प्रश्नाः

१ समिति एटले शुं १ २ समितिना केटला भेद छे १ ३ विष्टा, सूत्र, विगेरेने जीव विनानी भूमिमां परठववां, ते समितिनुं शुं नाम १ ४ जवा आववाने विषे जयणापूर्वक उपयोग राखवों, ते कइ समिति १ ५ एपणा समिति अने भाषा समिति एटले शुं १ ६ कोइ चीज लेतां के सूकतां पुंजवानो उपयोग राखवों, ते कइ समिति १ ७ गृप्ति एटले शुं १ ८ ग्रिप्तेना केटला भेद छे १ ९ प्रवचननी माता कोण कहेवाय छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

चेष्टा, जयणा, पाप सहित, कठोर, धूर्त, सुखदायक, अरुप, मयोजन, एपणा, गवेशणा, विष्टा, प्रठवे, समिति, गुप्तिः

पाठ ५९ मो.

संवर तत्वना सतावन भेद्र

द्श प्रकारनो यति धर्म.

संवर तत्वना सतावन भेद्मां दश प्रकारनो यति

धर्म आवे छे यतिधर्म अथवा मुनिधमना दश प्रकार छे कदि पोतामां सामध्ये होय, अथवा न होय, तोपण बी-जानां दुर्वचन सहन करवां, तेनां जे परिणाम राखवां, ते पहेलो क्षमाधर्म छे. नम्र थइ अभिमाननो त्याग करवो, ते बीजो साद्वधंस छे मन, वचन अने कायानी क्कटिलतानो त्याग करवा, एटले निष्कपटपणे रहेवुं, ते त्रीजो आर्जन धर्म छे. बाहेर अने अंदर्थी तृष्णा के लोभनो त्याग, ते चोथो खुक्तिधर्म छे. रस विगेरे धातु अथवा आठ प्रकारनां कर्म, जेनाथी भस्म थाय, ते अनशन विगेरे तप, ते पांचमा तपोधक छे. तप धर्मधी इच्छानो निरोध थाय छे. आश्रवने त्याग करवानी जे रुत्ति, ते छहो संयमधर्भ हे. प्राणातिपात विगेरे पांच-मांथी विराम पामवुं, पांच इंडियोनी निबह करवो, चार कषायने जीतवा, अने त्रण दंडनी निरुत्ति, ए सत्तर भेदे संयमधर्म कहेवाय छे. सत्य बोलवुं, एटले मृषावादना त्याग करवा, ते सातमो सत्यधर्म कहेवाय छे. सं-यम रित्तमां कलंकनो अभाव, ते आठमो शौचधर्म कहेवाय छे. आ शौचधर्मने बीजी रीते पण वर्णवेलो के बेंतालीश दोषथी रहित भात पाणा विगेर आहार लेवे!; ते द्रव्यथी शौच कहेवाय छे, अने आत्माना जे शुद्ध अध्यवसाय एटले कषाय विगेरेथी रहित एवां शुद्ध परिणामनी दृद्धि, ते भाव शौच कहेवाय छे; अथवा मन, वचन, अने काया शुद्ध राखवां, संयमने विषे तिरतिचा-

रपण वर्त्तं, तथा जीव अदत्त, स्वामि अदत्त, गुरु अ-दत्त, अने तीर्थकर अदत्त, ए चार प्रकारनी चोरीनो त्याग करवो, ते पण शाँच कहेवाय छे. सर्व जातना परिग्रहनो त्याग करवो, एटछे सर्व उपरयी मूर्छा उतारवी, ते नवमो अकिंचनधम कहेवाय छे. नव प्रकारतं औदारिक, अने नव प्रकारतं वैकिय संबंधी मैश्रुननो त्याग करवा, तेने दशमो झ्रह्मचर्यधम कहे छे. आ दश यति-धर्मना गुणने जे धारण करे, ते खरेखरा यति घहे-चाय छे.

सारांश प्रश्लो

१ पति धर्म केटला मकारनो छे, अने ते दश भेद कया तत्वना छे ? २ क्षमाधर्म अने मुक्तिधर्म विषे समजाबो ३ जेमां नम्न थइ अभिमाननो त्याग करवामां आवे, निष्कपटपण वर्त्तवामां आवे, ते यिधर्मनां नाम ग्रुं १ ४ तपोधर्म अने शौचर्षमनां लक्षण कहो ५ तपो धर्मथी श्रं थाय छे ? ६ आश्रवने त्याग करवानी हित्ति करवी, ते क्यो यितधर्म ? ७ मुपावादनो त्याग करवी, ते धर्म क्यो १ ८ संयम धर्म केटला प्रकारनो छे ? ते प्रकार कहो ९ आर्क्सचनधर्मनो अर्थ समजावो १० शौच-धर्ममां शौच एटले श्रं १ ते समजावो ११ शौचना के-टला भेद छे १ १२ द्रव्य शौच अने भाव शौच एटले शुं ? ते समजावो १३ औदारिक अने वैक्रिय संबंधी मैथुन केटला प्रकारतुं छे ? ते कही १४ खरेखरी यति कोण कहेवाय ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सामर्थ्य, दुवेचन, परिणाम, नम्र, कुटिलता, रस विगेरे धातु, निरोध, निग्रह, त्रण दंड, कलंक, अध्य-वसाय, दृद्धि, निरतिचारपणे, जीव अदत्त, स्वामि अदत्त, शुरु अदत्त, तीर्थकर अदत्त, मूर्छा, औदारिक, वैकिय.

पाठ ६० मो.

ब्रह्मचर्य-नव गुप्ति.

अथवा

नव वाड.

१ वस्ति, २ कथा, ३ आसन, ४ इंद्रिय, ५ कु-ट्यांतर, ६ पूर्व किडानुं स्मरण, ७ मणीत भोजन, ८ अतिमात्राहार, अने ९ विभूषण, आनव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति कहेवाय छे, दरेक मुनिए आ नव गुप्ति सहित ब्रह्मचर्य राखदं जोइए, जे ए नव गुप्तियी शीळ पाळे, ते खरेखर साधु कहेवाय छे. ज्यां दैवी अने मानुषी ए वे प्रकारनी स्त्री पत्यक्ष के मूर्तिरुपे रहेती न होय, ज्यां पशु एटले तियचणी, गाय, कुतरी, पाडी, घोडी, वकरी के घेटी विगेर रहेती न होय, अने ज्यां नपुंसक रहेता न होय, तेवी वस्तीमां साधुए रहेवुं जोइए. जे वस्तीमां स्त्री, पशु, अने नपुंसक रहे, ते स्त्रीपशु पंडकवाळी वस्ती कहेवाय छे. नपुंशकतुं बीजुं नाम पंडक छे. जो ते त्रणेनी वस्तीमां साधु रहे, तो तेओनी काम विकारनी चेष्टा देखवाथी ब्रह्मचारी साधुना मनमां विकार उत्पन्न थवाथी ब्रह्मचर्यने वाधा थाय छे. आ ब्रह्मचर्यनी वस्ति नामे पहेळी गुण्त (वाड) छे.

एकली स्त्रीन उद्देशीन कथा कहेवी, तथा स्त्रीओनीज कथा कहेवी, ए साधुने योग्य नथी। कारण के ए कथा राग उत्पन्न करवानो हेतु छे. ब्रह्मचर्यवाळा साधुए स्त्रीना देश, जाति, कुळ, वेप, भाषा, गति, विलास, हावभाव, चेष्टा, हसवुं, लीला, कटाक्ष, स्नेह, रित अने कलह के श्रृंगारनी कथा साधुए करवी न जोइए, जो तेवी कथा करे, तो ग्रानिनुं मन विकार पामे छे. आ कथा ब्रह्मचर्यनी वीजी गुष्ति (वाह) छे।

स्त्रीओनी साथे एक आसनपर मुनिए वेसवुं नहीं, तथा जे आसन उपरथी स्त्री उठी होय, ते आसन अथवा स्थानमां वे घडी मुधी साधुए वेसवुं नहीं; कारण के, त्यां बेसवाथी स्त्रीतुं स्मरण थाय छे, तेमज स्त्रीना वेसवाथी शय्या, अथवा आसन मलीन थवाथी स्त्रीना स्पर्शवाला आसन विगेरेथी विकार उत्पन्न थाय छे. आ आसन नामे त्रीजी ग्रिप्त कहेवाय छे.

स्त्रीओनां अंग, उपांग ने नेत्र फाडीने जुवे नहीं। किंदि हिंछ पडी जाय, तो "वाह! केवी सुंदर छे १ " एवं चितवन करे नहीं. आ इंद्रिय नाम चोथी गुप्ति कहेवाय छे।

ज्यां दीबाल, तही, के कनातने अंतरे स्त्री पुरुष मैथुन सेवन करतां होय, तेमज तेओना अवाज संभळाता होय, त्यां ब्रह्मचारी साधुए रहेवुं नहीं आ क्रुटयंतर नाम पांचमी गृप्ति छे.

पूर्वे गृहस्थ अवस्थामां स्त्रीनी साथे जे विषय भोग क्रीडा करी होय, तेनुं स्मरण साधुए करनुं नहीं जो स्मरण करे, तो विषय सेववानी इच्छा थाय आ पूर्व-क्रीडा नामे छही गुप्ति छे.

अति चीकाशवाळा, मीठा, दुध, दहीं विगेरं धातु पुष्ट करनार पदार्थोनो निरंतर आहार करवे। नहीं जो तेवो आहार करे, तो वीर्यनी दृद्धि थवाथी विकार उत्पन्न थाय छे, अने तेथी वखते विषयनी इच्छा धाय छे. आ प्रणीत नामे सातमी गुप्ति छे. कदि छली भिक्षा होय, तोपण साधुए प्रमाणथी अधिक खाबी नहीं; कारण के, हद उपरांत खाबाथी पण विकार उत्पन्न थाय, अने शरीरने ज्ञाडा विगेरेनी पीडा थई पढे छे. आ अतिमात्राहार नामे आठमी ग्रिप्त छे.

स्नान, विलेपन अने धूपे करी शरीरने सुंदर करवुं, नख समारवा, दांत साफ करवा, केशमां तेल नाखवुं, कपाळे तिलक करवुं, आंखमां काजळ सारवुं, सुकोमळ करवा वास्ते हाथ, पग विगेरे शरीरना अवयवने तेल अथवा साबुधी मसळवां—आ प्रमाणे शरीरनो शणगार न करे, आ विभूषणादि नामे नवमी सुप्ति छे

आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा माटे छे, तेथी साधु सिवाय वीजा ब्रह्मचारीए पण आ नव वाढ साचववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ ब्रह्मचर्यनी केटली ग्रिप्त छे ? २ ग्रिप्त एटले शुं ? ३ नव ग्रिप्तनां नाम आपो १४ वस्ती नामनी ग्रिप्तिमी स्त्रीना केटला प्रकार लेवा ? ५ स्त्री, पशु, अने पंडक ए शुं १ ते समजावो. ६ स्त्रीओनी साथे एक आसनपर वेसचुं, ते कइ ग्रिप्त ? ७ कथा नामनी ग्रिप्ति विपे समजावों ८ केवी दीवाल तही के कनात होय, त्यां साधुए न रहेवुं ९ इंद्रिय अने क्रीडा ए वे गुप्ति विषे समजावों १० धातुपुष्ट करनार पदार्थोंनो आहार करवों नहीं, ते गुष्तिनुं नाम थुं १ ११ शरीरने शणगारवुं नहीं, ए गुष्तिनुं नाम थुं १ १२ अतिमात्राहार अने पूर्वक्रीडा ए वे गुष्ति विषे समजावों १३ आ नव वाड कोनी रक्षा माटे छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

कुटचांतर, प्रणीत, अतिमात्राहार, मानुषी, तिंधवणी, पंडक, नधुंसक, ब्रह्मवारी, उद्देशीने, विलास, हावभाव, विष्ठा, लीला, कटाक्ष, रित, कलह, श्रृंगार, शय्या, अंग, उपांग, धातुपुष्ट, निरंतर, वीर्य, विलेपन.

पाठ ६१ माः

(संवर तत्वना खतावन भेद.)

षार भावना.

वार भावनाना वार मकार छे, अने ते संवर तत्वना सतावन भेदमां गणाय छे. १ अनित्य भावना, २ अश्वरण

भावना, ३ संसार भावना, ४ एकत्व भावना, ५ अन्यत्व भावना, ६ अशुचि भावना, ७ आश्रव भावना, ८ संवर भावना, ९ निर्जरा भावना, १० लोक स्वभाव भावना, ११ बोधि दुर्छभ भावना, अने १२ धर्म भावना—आ वार भावनाओं कहेवाय छे. छक्ष्मी, यौवन, कुटुंब, परिवार तथा आयुष्यने दर्भना अग्र भाग उपर रहेला जळनां टीपांनी जेम अनित्य के अस्थिर भाववा, ते पहेळी अनित्य भावना कहेवाय छे. आ संसारमां जन्म, जरा अने मरणना भयथी बचाववाने एक धर्म शिवाय वीज़ं कोइ शरण नथी। आ प्रमाणे जे भावबं, ते वीजी अदारण भावना छे. जे माता ते ह्वी थाय, ह्वी ते माता थाय, पिता ते पुत्र थाय पुत्र ते पिता थाय, इत्यादि संसारनी विचित्रतानो आ जीवे अनुभव कर्यो छे. आ प्रमाणे जे भाववुं, ते त्रीजी संसार भावना है. आ जीव संसारमां एकलो आन्यो छे, ने एकलो जरे, एवं धारबुं, ते चोथी एकत्व भावना छे. आत्मा ज्ञान स्वरुप छे, अने शरीर जह छे, माटे तेओ एक वीजाथी जुदा छे, आत्मा शरीर नथी, अने शरीर आत्मा नथी, आत्माथी शरीर, धन तथा सगांवहालां विगरे अन्य-जुदां छे, आधी रीते भावद्यं, ते पांचमी अन्यत्व भावना छे. रस, रुधिर, मांस, हाडकां, वीर्य, अने परु विगेरे अश्वचिथी भरेंछं आ शरीर छे, तथा पुरुष, अने स्त्रीने आश्रीने ते शरीरना नव तथा वार द्वार सदा यहां करे

छे; तेथी ते बारीर कोइ दिवस शुचि एटले पवित्र थतुं : नथी. आ गपाणे भाववुं, ते छठी अद्युचि भावना छे. पांच इंद्रिय, चार कपाय, पांच अव्रत, त्रण योग, अने पचवीशः किया - एवाः भेद्शीः कर्म वंधाय छे, तेमज दया दान विगरेथी अभ कर्म अने विषय कपाय विगरेथी अशुभ कर्म वंधाय छे. आ प्रमाणे जे भाववुं, ते सातमी आश्रव भावना छे. जे जे संवर आदरवायी जे जे आश्रव रोकाय, ते ते संवरने आदरवा, अने आश्रदने रोकवा, ते आठमा संवर भावना छे. जेम संकीर्ण स्थानकना योगथी केरी पाके छे, तेम बार प्रकारना तपे करीने कर्मने पचाववुं, एटले पूर्वे करेलां कर्मने साडवुं, ते रुपी निर्जरा सकाम तथा अकाम, एम वे प्रकारे छे एवी जे भावना भाववी, ते नवमी निर्जरा भावना छे। आ चौद राजलोक केंद्र उपर वे हाथ दइ, वंने पग पसारीने उभेला पुरुषना जेवा आकारवाळो छे, ते पट्द्रव्यरुपे छे. पूर्वना पर्याय नाश पामे, नवा पर्याय उत्पन्न थाय, अने द्रव्यपणे निश्चळ, एम खत्पाद, व्यय तथा ध्रुव स्वरुप छे. जे लोकतुं नीचेतुं तळीयुं उंघा वाळेला चपणा जेवुं, मध्य भाग ज्ञालर जेवो, अने उपरनो भाग मृदंगना जेवो छे. वळी ए लोक शासतो छे. आ भ्याणे जे भावना करवी, ते दशमी लोक स्वरूप भावना छे. जीदने आ संसा-रमां भमता अनंता पुद्गल परावर्त्त थइ गया, तेमां अ-नंत वार चक्रवर्ती विगेरेनी समृद्धि गली, तथा यथा

प्रष्टितकरणने योगे करी, तथा अकाम निर्जरावहे पुण्यना भयोगथी मनुष्यभव, आर्यदेश, निरोगी काया, अने धर्मना अवणनो योग प्राप्त थयो, तोपण सम्यक्त्व पाम्बं अति दुर्छभ छे, एवी जे भावना भाववी, ते अगीयार्मी योधि दुर्छभ भावना छे. दुःखे तरी शकाय एवा आ संसार सम्रद्रमांथी तारवाने वाहाण समान एवो ते श्री जिन प्रणीत क्षमा विगेरे दश प्रकारनो शुद्ध धर्म, तथा द्राप्त, दर्शन अने चारित्र ए त्रण रत्नरूप धर्म पामवो दुर्छभ छे, तथा ते धर्मना साधक अरिहंत विगेरे पण आ संसारमां पामवा दुर्छभ छे. आ प्रमाणे जे चितववुं, ते वारमी धर्म भावना कहेवाय छे.

उपर कहेली बार भावना. तथा पांच महाव्रतमां दरेक व्रतनी पांच पांच एम पचीश, अने मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, अने उपेक्षा—ए बधी बीजी भावनाओने पण शुद्ध हृद्यवढे प्रमाद छोडीने भावनी जोइए.

सारांश प्रश्नी.

१ भावना केटली छे १ २ ते भावना कया तत्वमां गणाय छे १ ३ वार भावनाओनां नाम आपो १ आ संसारमां जीव एकलो आव्यो छे, अने एकलो जेशे एम धारवुं, ते कई भावना कहेवाय १ ५ दर्भना अग्र भाग

उपर रहेला जळना टीपानी जेम सर्व आनित्य धारतुं, ते कइ भावना कहेवाय १ ६ अशरण भावना अने एकत्व भावना विषे समजावीः ७ जे जे संवर आदरवाथी आश्रव रोकाय, ते ते संवरने आदरवा, अने आश्रवने रोकवा, ते कइ भावना कहेवाय १ ८ शरीर अने आ-त्माने जुदा जुदा मानवा, ते कइ भावना कहेवाय ? ९: अद्युचि भावना अने आश्रव भावनानुं स्वरुप कहीं. १० बार प्रकारनां तपथी कमेने पचाववां, ए कइ भावना कहेबाय ? ११ आ संसाररुप समुद्रने तारनार दश प्रका-रनोः धर्म तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररुप त्रण प्रकारनों धर्म छे एम चितवबुं, ते कइ भावना कहेवाय १ १२ लोक स्वरुष भावना, अने बोधि दुर्लभ भावना विषे समजावो. १३ आ बार भावना शिवाय बीजी कड़ भावना भाववी ओहए है

ंशिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी-

योवन, दर्भ, अग्रभाग, अनित्य, अस्थिर, जरा, विचित्रता, ज्ञानस्वरुप, रुधिर, रस, वीर्य, अश्वाचि, नव द्वार, बार द्वार, संकीर्ण स्थानक, निर्जरा, सकाम, अकाम, पद् द्रव्य, पर्याय, निश्चळ, उत्पाद, व्यय, ध्रुव स्वरुप, चपणा, मृदंग, पुद्गळ परावर्च, यथा मद्यतिकरण, श्री जिन मणीत, साधक, मैत्री, ममोद, कारुण्य, उपेक्षा.

पाठ ६२ मो.

बार भावना विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भली भावना भावजो जे अनित्य, . रहुं सर्वे आ विश्वमां सर्वे रीते; वरो धर्वतुं शरण जे एक सारुं, बीजं सर्व छे ते विना जे अकारं.

· जुवो भवतणो भेद केवो विचित्र, विचारो हदे भावथी भव्य पित्र; अहो आःभवे एकला सर्व आच्या, जवानुं हवे एकछा तेह भाव्याः

ंस्वरुपे जुवो आत्मनुं रुप भारी, 👯 🤫 जुदुं ते शरीरे हदे ल्यो विचारी; पर मांस ने हाडकां वीर्य अदि, अशुचि भर्युं आ वषु गंधनादी. ३

सदा भावजी आश्रवी कर्म वंघे, शुभाशुभ दिवेके करी सर्व संघेः वळी रोक्रजो आश्रवो संवरेथी, घणो हाभ ते भावनाने धरेथी.

तपस्या करी कर्म सर्वे तपात्रो, खरी निर्जरा भावना तेह भावो; करो इत पचलाण चित्ते विचारी, ... वळी पाप आलोयणा टेक धारी.

हदे चौद आ राजलोके विचारी, वधी आकृति लोकनी चित्त धारो; हदे बोधि छे दुर्लभा एम मानो, मळयो जन्म मासुप्यनो ते प्रमाणो.

पछी धर्मनी भावना नित्य भावो, समा आदि ने भेद ते नित्य गावोः धरो भावना बार-ते भव्यराज, धर्यु जाणनो धर्मनुं सिद्ध काजन

शिक्षके नीचेना शब्दोनी, समजूति आपवी.

अनित्ये, भवतणो, विचित्र, भन्य, आत्मनं, भारी, हदे, आदि, अशुचि, वपु, गंधमादी, कर्मवंधे, राजलाके, आकृति, बोधि, दुर्लभा, क्षमाआदि, भन्यराज.

पाठ ६३ मो.

[संवर तत्वना सत्तावन भेद.]

बाबीश परिषह.

संवर तत्वना सत्तावन भेदनी अंदर बाबीश परिषद्द पण गणाय छे सर्व पकारे कर्मनी निर्जरा करवाने माटे जे सहन करवुं, ते परिषह कहेवाय छे, ते परिषहना वावीश प्रकार छे। भ्रुखयी उत्पन्न यती वेदनाने सहन करवी, ते पहेलो क्षुघा परिषद्द कहेवाय छे. तरस लागवाथी थती वेदनाने सहन करवी, वे बीजो पीपासा परिषद्ध छे. टाढथी यती बेदनाने सहन करवी, ते त्रीजो शीत परिषद्द छे. ताप लागवाथी यती आतापना-पी-ढाने सहन करवी, ते चोथो उष्ण परिषष्ट छे. ढांस, मच्छर, जू, मांकड विगेरेना ढंसने समभावे सहन करवी, ते पांचमा दंशा परिषद्द छे जुना वस होय तो, तेथी खेद न पामे, अने नवां वस होय तो, तेथी हर्प न पामे, ते छठो अचेलक परिषह छे टाढ, तडको विगेरेना संभवथी जे अरति-अणगमो उत्पन्न थाय, तेने सहन करवी, ते सातमो अरित परिषह छे. स्वीओनां अंग, उपांग तथा हावभावने देखी पोताना मनेन स्थिर राखवुं, ते आठमो सी परिषद् छे आलस छोडी

गामागाम विहार करवो, अने जे कष्ट सहन करवुं, ते नवमो चर्या परिषद्द छे। शून्य घर तथा स्पन्नान विगेरेमां कायोत्सर्ग विगेरे किया करतां सिंह प्रमुखनो भय थतां, जे **टरवुं नहीं, ते दशमो निषिधिका परिषह** छे. चढतां, उतरतां, उंची, नीची, शीतळ, उष्ण, कोमळ, अथवा कठण भूमि उपर आसन के शय्या पामी उद्देग धरे नहीं, पण सारी रीते ते दुःख सइन करे, ते अगीयारमी दाय्या परिषद्द कहेवाय छे. क्रोधनां वचन सांभळीने सांखी रहेवां, ते बारमा आकादा परिषद छे कोइ लपडाक, पादु, चानुक, तथा लाकडीनो घा करे, अथवा वध करे, पण पोते जरा पण रोप न लावतां सम परिणामे सहन करे, ते तेरमो वध पारिषह छे. पोते राजा के चक्रवर्त्ति होय, पण संयम छाने निच, के उंच कुळमां भिक्षा छेवा जतां लज्जा न पामे, ते चीदमी याचना परिषद्द छे. कांइ पण चीजनी याचना करे, अने ते चीज गृहस्थना घरमां होय, ते छतां ते न आपे, तोपण उद्देग न पामे, अनिष्ट चितवे नहीं, बोले नहिं पण ते समता भावे सहन करे, ते पंदरमो अलाभ परिषह छे कोइ पण रोग उत्पन्न यतां, तेनी अति बेदना याय, तोषण आर्च ध्यान करे नहीं, अने ते सारी रीते सहन करे, ते सोळगो रोग परिषष्ठ छे. जमीनपर डाभ विगेरेनी शय्या उपर सूतां, तेना अप्र भाग भाकावाधी ज वेदना थाय, तेन सारी रीते सद्दन करे, ते सत्तरमो

तृणस्पर्ध परिषद्द छे, तेने मागवी भाषामां तणफास परिषद्द पण कहे छे. शरीरे पसीनाना संयोगे मेल थाय, अने तेथी करीने शरीर गंधाय, तोपण स्नाननी इच्छा न करे, अथवा तेथी कंटाळीने एवं न चिंतवे के, " हुं क्यारे आमांथी छुटुं ? " आवा कष्टने सहन करवुं, ते अहारमो मल परिषद्द छे. आदर सत्कार मळवाथी चत्कर्ष न आणे, अने न मळवाथी खेद न पामे, त ओगणीयमो सत्कार परिषद् छे. बाह्मनं ज्ञान विशेष होवाथी कोइना पश्चनो उत्तर, तरतः आपवानी सिक्तः होय, तेथी बहु मान अने पोताना जय देखी गर्व धरे नहीं, अने तेना अभावे खेद धरे नहीं, ते वीशमी प्रज्ञा परिषद्द छेन् पोतानामां शास्त्र के तत्वनुं ज्ञान न होय, तेथी दिनता धरे नहीं, पण " मारे ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय छे, ते भोगववाथी अथवा तुप आचरवाथी दूर थशे. " एवं धारी उद्देग राखे नहीं, ते एकवीशमी अज्ञान पारिषह छे.

उपर कहेला अज्ञानने लीधे शाख़नी ज्ञीणी वातोमां कि समजण पड़े नहीं, तेथी देव, गुरु, अने धर्मनी उपर अश्रद्धा राखे नहीं, तथा शाख़मां इंद्र विगेरे सम्यग् दृष्टि देवता छे, एव संभळाय छे, पण ते प्रत्यक्ष नजरे देखाता नथी, यादे ते हशे के नहीं होय, तेयो वहेंग न लावे, तथा अन्य मितिओनी समृद्धि के सिद्धिनी उनि ति जोइ, तथा तपस्यानां कृष्ट देखी मृह वनी न जाय, ते वात्रीश्रमो सम्यक्त्य परिषद्ध छे.

आ बाविश परिषद्दोंने समभात्रे सहन करवा, ते

सारांश प्रश्लो.

१ परिषह क्या तत्वमां गणाय छे, अने ते केटला छे ? २ पश्चिह एटले ग्रं ? ३ सून्य यर के साजान विगेरेमां कायोत्सर्ग चिगेरे क्रिया करतां सिंहादिकनी अय थाय, तथापि हर्षुं नहीं, ते कयो परिपह ? ४ गायोगाय विहार करवातुं कष्टे बेठे, ते कयो परिपह छे ? ५ क्षुधा परिषद, अने पीपासा परिषद विषे समजाबो. ६ स्तीनां अंगोपांग देखी यनने स्थिर राखवुं, ते कयो परिषह ? ७ ताढ, तहका विगेरना संभवधी अणगशो थाय, ते कयो परिषद ? ८ शीत परिषद्द, अने उप्ण परिषद्द विषे समजानो, ९ अचेलक परिषद्, इंश परिषद्, शब्या परि-षद, अने आक्रोश परिषद्दनां लक्षण कहा. १० आदर के सत्कार मळवाधी उत्कर्ष न आण, अने ते न मळ-वाधी खेद व पांपे, ते कयो परिषह ? ११ याचना प-रिपद, अलाभ परिपद, तुण स्पर्श परिषद विषे समजाबोन १२ तणफास परिषद्द ए कड़ भाषानी शब्द छे ? १३ व-ध परिषद, निषिधिकी परिषद, प्रशा परिषद, अने सम्द-बत्व परिषह विषे समजावो.

शिक्षके नीचेना घाव्दोनी समजूती आपवी.

वेदना, आतापना, दंश, अरति, श्रुन्य घर, सम परिणाम, अनिष्ट, आर्त्तध्यान, बहुमान, **उन्नति**-

णह ६४ मो.

बाबीचा परिषद्द विषे कविता-अजंगी छंदः

क्षुधा कष्ट वेठे खरी टेक राखी, भलो संजमे धर्मनो स्वाद चाखीः पिपासार तेणुं ते सह कष्ट भीते, अहो धन्य छ साधुने सर्व रीते.

सहे शीतने सर्वदा प्रेम धारी, करे वांछना बस्ननी नै विहारी³; ् न इच्छे कदि अग्निनो ताप पीते, अहा धन्य छे साधुने सर्व रीते।

> फरे सूर्यना तापयां मध्य काळे४, फदि ते नहिं चरणमां चर्म घाले;

१ भुरः. २ तृपा. ३ विहार करनारा, ४ मध्यान्हकाळे. ५ टा–उपान,

न इच्छे कदि वायु पंखानी रीते, अहे। धन्य छे साधुने सर्व रीते नडे मच्छरो मांकडो डांस जंतु, निवारे न ते जे सहे छे परंतुः न धारे कदि आर्तता? आप चिक्ते, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. धरे फाटलां तुटलां बस्न अंगे, 🔑 न च्हाहे रुडा ते वधारे उपंगे; सदा एपणा? धर्मने आप जीते, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. अभावो४ वने संयमे वर्त्तता जोः सहे ते वधुं राखीने भेपता जो, वधुं ते सहे जे नडे सर्व रीते, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. έ विछेकि कदि अंगनां अंग सारां, रहे स्वस्थ चिचे गणी ते नटारां: न मोहे कदि राग रंगे सुगीते ६, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. 6 विहारो करे सर्वदा सर्व गामे. वनी आलमु ते धकी ने विरामेण;

९ प्राणी, २ आर्ष्यान, ३ इन्छ धर्म, ४ क्षति, ५ सी, ६ सा-स रीते, ७ विराम पाम नहीं.

बधे नित्य चर्या करे एक रीते, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. 6 करे काउसग्गादि शून्य स्मशाने, सुणे गर्जना सिंहनी सद्य काने; हमे नहीं कदि तोय मृत्युनी भीते, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. ς सहे नित्य शय्यासने १ कष्ट भारे, नईं कोधना वाक्ययी खेद घारे; डगे नहीं कदि मारथी दुःख वीते, अहो धन्य छ साधुने सर्व रीते. ξo नहीं याचनाथी हदे आप छाजे, मळेळाभ नहीं तो स्वचित्ते र दासे। शहे वेदना रोगनी शांत चिचे, 2.3 अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. कदि अंगमां डाभ ने घास वागे, तथापि नहीं खेदथी चित्त जागे; सहे मेल दुर्गंध अंगे मुरीते, अहो धन्य छे साधुने सर्व रीते. १२ नहीं आदरे इपने चित्र धारे, अनादर यकी खेदने नहीं वधारे;

९ चर्चा परीपह. २ शय्या-मंथारो अने आतन उपर वेसवाधी 3 पो-ताना चित्तमां.

रहे नित्य पानापपाने । सुशीते,
अहा धन्य छे साधुने सर्व रीते । १३
नहीं पूर्ण प्रज्ञार धकी गर्व जामे,
नहीं अल्प बुद्धि धरी खेद पामे;
सहे कष्ट अज्ञानमुं । तेज रीते,
अहा धन्य छे साधुने सर्व रीते । १४
अश्रद्धा न राखे धरी न्हेम चित्ते,
न छोभाय जे अन्यना धर्मवित्ते ।
परिषह पुरा धारतां ते सुरीते,
अहा धन्य छे साधुने सर्व रीते । १५

शिक्षके नीयेना शन्दोनी समजूती आपवी, तथा कवितामां पावीश परिषद अनुक्रमे आप्या छे, ते समजाववाः

क्षुपाकष्ट, विपासा, शीत, वांच्छना, मध्यकाले, चर्म जंत, आर्चता, एपणा धर्म, ताजो, अंगना, स्वच्छ चित्ते सुगीते, विरामे, चर्चा, स्मशान, शय्यासने, स्वचित्ते मानापमाने, प्रता, अश्रद्धा.

[े] ४ मान, रूपमान, २ मुद्धिः ३ ग्रहान परिषद्धः ४ धर्मर ग्रन्थमाः

तेना असंख्यता स्हम खंड करीने दशमे गुणठाणे उपशमावे, अथवा क्षपक होय, ते खपावे, ते दशमा गुणठाणतुं नाम अने चारित्रतुं नाम पण खुद्धम संपराय छे. आ स्हम संपराय चारित्रना विद्युद्ध मानसिक अने संविल्ड मानसिक एवा वे भेद थाय छे; जे श्रेणी चढता होय तेने विद्युद्ध मानसिक चारित्र होय छे, अने जे उपश्चम श्रेणीथी पडता होय, तेने संविल्ड मानसिक चारित्र होय छे.

पांचमुं यथाख्यात चारित्र कहेवाय छे, ते चा-रित्रमां सर्व प्रकारे कषायने। अथाव होय छे. तेना छाछ-स्थिक अने कैचलिक एवा बे भेद छे. छद्यावस्थामां रहेळा उपशिकिन अगीयारमे गुण ठाणे, अने क्षपकने वारमे गुणठाणे छाद्यस्थिक चारित्र होय छे. केवळीने तेरमे, अने चौदमे गुणठाणे केवलिक चारित्र होय छे. ए चारित्र एवं प्रभाविक छे के, तेनाथी सहवर मोक्षनी पाप्ति थाय छे.

आ पांच मकारना चारित्रने घारण करनारा साधु पण पांच मकारना थाय छे. चालता पंचम काळमां प-हेलां वे मकारनां चारित्रने धारण करनाराज साधुओ छे, अने पाछळना जण मकारनां चारित्र विछेद पास्पा छे.

-

सारांश प्रश्ला.

१ चारित्रना केटला भेद छे १ २ पांच प्रफारनां चारित्रनां नाम आपो. ३ ज्यां ज्ञान, दर्शन, अने चा-रित्रनो लाभ थाय, ते चारित्रनुं शुं नाम १ ४ सामायिक चारित्रना केटला भेद छे ? ५ सावद्य योगना त्याग अने निरवद्य योगतुं सेवन करवुं, ते शुं कहेवाय, अने श्रावकने तथा साधुने ते केवी रीते होय १ ६ यधाख्यात चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे १ ते सम-जावो. ७ छाद्यस्थिक अने कैवछिक चारित्र कोना भेद छे, अने ते चारित्र केवी रीते होय ? तेनी वरावर सम-ज़ती आयो ८ जेमां सत्वर मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, ते कयुं चारित्र ? ९ उपशमिक अने क्षपकने केटलामे गुण-टाणे कयुं चारित्र होय छे ? ते कहो. १० छेदोपस्थाप-नीय चारित्र एटले शुं, अने तेना केटला भेद छे ? ते कहो। ११ नवा दीक्षा लीधेला शिप्यने बीजा तीर्धन आश्रीने जे चारित्र होय, तेवा चारित्रनुं शुं नाम ? १२ निरतिचार छेदोपस्थापनीय चारित्रनो दाखले आपो. १३ परिहार विशुद्धि चारित्र एटें शुं, अने तेना केटला भेद छे १ ते समजावो. १४ निर्विश मानसिक अने नि-विष्ट कायिक एटले शुं ? १५ जे श्रेणी चडता होय, अने जे डपशम श्रेणीयी पटता होय, ते कया चारित्रमां आवे छे ?

रिशक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

पवर्त्तन, देशविर्ति, सर्व विरित्ति, सावद्य योग, विरित्त योग, पूर्व पर्याय, मूळ गुण, प्रायश्चित, छज्जीव-णीया, अध्ययन, आ सेवक, कल्पमां, अनुचारी, उपशम श्रेणी, क्षपक श्रेणी, खपावतां, गुणठाणे, संख्याता खंड, सर्व पकारे, छद्मावस्था, उपशामिक, क्षपक, प्रभाविक.

पाठ ६६ भो।

७ निर्जरा तत्व.

निर्जरा तत्व ए नव तत्वमां सातग्रुं तत्व छे. जैनाथी जीवनी साथे वंधाएळां कर्मनो देशथी अने सर्वथी क्षय
थाय, ते निर्जरा कहेवाय छे. निर्जराना सकाम निर्जरा
अने अकाम निर्जरा एवा वे भेद छे. जे साधुओ तथा
आवको पुद्गळीक सुखनी इच्छा विना फक्त मुमुक्ष थइ,
मोक्षने माटे धर्म करे छे, तेमने सकाम निर्जरा होय छे,
अने वीजा अज्ञानी मिथ्यात्वी जीवोने अकाम निर्जरा
होय छे. कर्मनो पाक (नाश) पोतानी मेळे थाय छे,
तथा उपायथी पण कर्मनो नाश थाय छे. तेनी उपर
आंवानां फळ (केरी) मुं द्रष्टांत अपाय छे. जेम आंवामुं
फळ दृक्षनी ढाळी उपर रहे छं होय, ते छतां पोतानी मे-

ळेन पाकी जाय छे, अने कोट्स विगेरे पराळनी अंद्स दाखल करवाथी पण पाकी जाय छे, तेवीज रीते कर्म निर्जरा पण वे प्रकारे थाय छे. एकेंद्रिय विगेरे जे जीव छे, तेओने जहपणाने लड़ विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु टाह, तहको, वर्षाद, अग्नि, छेट्न, अने वंध विगेरे कष्ट भोगववाथी कर्मनी अकाम निर्जरा कहेवाय छे.

आ निर्जरा जे साधनधी धड़ शके, तेनुं नाम वप फहेवाय छे, ते तपना बार प्रकार छे:

सारांदा प्रश्लो

१ निर्जरा तत्व ए केटलामुं तत्व छ १ २ निर्जराः एटले छ १ ३ निर्जराना केटला भेद छ १ ४ सकाम निर्जरा अने अकाम निर्जरा एटले छ १ ५ अकाम निर्जरा केवा जीवोने थाय छ १ ६ निर्जरा जपर कछुं द्रष्टांत छ १ ते समजावो ७ सकाम निर्जरा विषे सम-जावो ८ तप एटले छ १ ९ तपना केटला भेट छ.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ती आपवी.

मुमुखु, कोद्रा, पराट, पाक, वर्षा, तपः

पाठ ६७ मो.

तप.

निर्जरा ए तपथी थाय छे. कर्मनी निर्जरा करवानुं मुख्य साधन तप छे. ते तपना बार भेद छे. छ प्रकारे बाह्य तप, अने छ प्रकारे अभ्यंतर तप-एम मळीने तपना बार भेद गणाय छे. १ अनशन, २ उणोदरी, ३ वृत्ति संक्षेप, ४ रस त्याग, ५ काय क्लेश, अने ६ संलीनता ए छ प्रकारतुं वाह्य तप कहेवाय छे. जेमां आहारनो त्याग एटले उपवास विगेरे करवामां आवे, ते अनदान नामे पहेळुं तप छे. जेमां आहार, वस्त्र, तथा राग द्वेपने ओछा करवामां आवे, ते उणोदरी नामे वीजं तप छे द्रव्य, क्षेत्र, काळ, अने भावे करी, आजीविकानो संक्षेप करवो, तथा अभिग्रह करवो, के नियम धारवा, ते चात्ती संक्षेप नामे त्रीजुं तप छे. विगय विगरेनो त्याग करवी, अने आंवील, नीवी प्रमुख करवां ते रस त्याग नामे चोथुं तप छे. लोच, तथा उत्कट आसन विगेरे करी कष्ट सहेबुं, ते काय क्लेश नामे पांचमुं तप छे.अंग तथा उपांग विगरेनुं संवरवुं—गोपन करवुं, ते संलीनता नामे छटुं तप छे.

आ छ प्रकारनां वाह्य तप कहेवाय छे. ते तपनी किया वाहरनी होवाथी तेनुं नाम वाह्य तप छे. वीजां छ प्रकारनां आभ्यंतर तप छे, कि धेला अपराधनी शुद्धि करवी, ते प्रायिश्चित नामे पहेलुं तप छे.
गुणवंतनी भक्ति करवी, तथा आशातना टालवी, ते
विनय नामे वीजुं तप छे. आचार्य विगेरेने आहार
विगेरे लावी आपवा, तथा तेमनां अंग चांपवां,
ते वैयावृत्य नामे त्रीजुं तप छे. भणवुं, भणाववुं, संदेह
दूर करवो, भणेलाने फरी संभारवुं, अर्थ चिंतववो, अने
धर्मीपदेश करवो, ते स्वाध्याय मामे चोथुं तप छे. आर्त
तथा रौद्रध्यानने निवारवुं, अने धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान ध्याववुं, ते ध्यान नामे पांचमुं तप छे. कर्मना
क्षय माटे कायोत्सर्ग करवो, ते कायोतसर्ग नामे छठुं
तप छे.

आ छ प्रकारना आभ्यंतर तप कहेवाय छे, ते तपनी किया अंदरनी होवाथी तेतुं नाम आभ्यंतर तप छे

आ वंने पकारना तपना साधनथी प्राणी कर्मनी निर्जरा करी शके छे; आथी करीने ते वार प्रकारनां तप निर्जरा तत्वनी अंदर गणवामां आव्या छे.

सारांश प्रश्ना.

१ निर्जरा श्रेनाथी थाय छे १२ तपना केटला

भेद छे ? ३ आभ्यंतर अने बाह्य तपना केटला केटला भेद छे ? ४ अनशन अने उणोदरी तपनुं लक्षण शुं ? ५ लोच, अने उत्कट आसनथी कष्ट सहेवुं, ते कयुं तप कहेवाय ? ६ आंबील तथा नीवी विगरे करवां ते नयुं तप ? ७ हित्त संक्षेप अने संलीनता तप विषे समजावी ८ बाह्यतप एटले शुं ? ९ प्रायश्चित अने विनय तपमां शुं थाय छे ? १० आत्त तथा रौद्र ध्यानने निवारवुं, अने धर्म तथा शुक्ल ध्यान ध्यावुं, ते कथुं तप ? ११ स्वाध्याय अने वैयाहत्य तप विषे समजावी १२ आभ्यंतर तप एटले शुं ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ति आपवी.

साधन, वाह्य, आभ्यंतर, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव, आजीविका, संक्षेप, अभिग्रह, नियम, विगय, आंवील, नीवी, उत्कट आसन, संवरवं, गोपन, शुद्धि, आशातना, वैयाद्यत्य, संदह, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्षध्यान, शुक्ल-ध्यान, क्षयः

पाठ ६८ मो.

तप षिषे कविता.

दोहरा.

सर्व कर्मनी निर्जरा, तप करवाथी थाय; ते तप बार प्रकारतुं. साधन श्रेष्ट गणाय-पकार छे छो वाह्यना, आभ्यंतरना तेमः शुद्ध हुदे ते सेववा, थाय निर्जरा जेम. २ ज्यां जपवास करी रहे, ते अनशन कहेवाय; खानपान ओछां करे, डणोदरीज गणाय. 3 नियम धरी संक्षेप ज्यां, द्वतितणो जा थाय; ए द्वत्ति संक्षेपने, नाम तप कहेवाय. X तजीविगय रसनो करे, त्याग महा तप तेहः उत्कट आसन लोचथी, काय क्लेश तप जेहर ષ્ ज्यां गोपन छे अंगनुं, ते संकीन गणाय; एह वाह्य तप जाणवा, षट् भेदे ते थाय. Ę आभ्यंतर तप ते कहे, जेना अंदर यागः तेना पण छे। भेद छे, आपे निर्जर योग. 9 कीधेला अपराधनी, शुद्धि करवी जेह; ते पायश्वित जाणवुं, तेमां नहीं संदेह.

भक्ति जे गुणवंतनी, विनय कहे तप तेह;
सेवा वैयावृत्य छे, सर्वोत्तम तप जेह. ९
भणवुं तथा भणाववुं, ए स्वाध्याय गणाय;
धर्म शुकलनुं ध्यान ते, ध्यानतणुं तप थायः १०
कर्म क्षय उद्देशथी, दिलमां धारी लाग;
करे काय उत्सर्गने, जाय कर्मनो डागः ११
तप आ बार प्रशारनुं, भविजन सेवे नित्य;
थाय कर्मनी निर्जरा, धर्म तणी ए रीतः १२

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शुद्ध हृदे, संक्षेप, वृत्तितणो, विगयरस, उत्कट आ-सन, संलीन, निर्जर योग, कर्मक्षय उद्देशथी, उत्सर्ग, काय, लाग

पाठ ६९ मो.

वंध तत्व.

नव तत्वोमां वंध तत्वेन आटमुं तत्व कहे छे, जेम दूध अने पाणी एकटां थइ मळी जाय, तेम जीवना प्र-देश अने कर्मना धुद्गळो परस्पर मळे, ते वंध कहेवाय छे. आ वंध शब्दनो अर्थ वंदीवान् थाय छे; जेम केदमां पडेलो केदी स्वतंत्र रही शकतो नथी, तेम आत्मा ज्ञा-नावरणीय, विगेरे कमना वंधथी स्वतंत्र रही शकतो नथी ए वंध तत्वना चार भेद छे. प्रकृति वंध, स्थिति वंध, अनुभाग वंध अने प्रदेश वंध, एवां तेमनां नाम छे.

स्वभावपणे जे कर्मनुं परिणमवुं, ते पहेलो प्रकृति-वंध कहेवाय छे कर्मना कालना परिमाणनो जे निश्चय, ते वीजो स्थितिवंध छे तीत्र अने मंद विगेरे रसपणे जे कर्मनुं परिणमवुं, ते त्रीजो अनुभागवंध कहेवाय छे, अने कर्म पुद्गलोना प्रदेशना समुदायनुं जे एकठुं थवुं, ते चोथो प्रदेशवंध कहेवाय छे.

आ चारे वंधने स्पष्ट रीते समजवाने माटे एक छा-डवातु द्रष्टांत आपवामां आवे छे. सुंठ, पीपर, अने मरीनो बनावेलो एक लाडवो होय, ते जुदा जुदा स्व-भावने धारण करे छे. सुंठ, पीपर, अने मरी ए श्रिकटु कहेवाय छे. जे वस्तु ते त्रिकटुथी बनेली होय, तेनो स्वभाव वायुने हरण करवानो छे, तेवीज रीते शीत द-व्यथी बनेली वस्तुनो स्वभाव पित्तने हरण करवानो छे, तथा अरडुसो अने क्षार विगेरे वस्तुनो स्वभाव कफने हरवानो छे; तेज प्रमाणे कर्मनो पण जुदो जुदो स्वभाव छे. कोई कर्मनो ज्ञानावरण स्वभाव छे, तो कोइनो द-दर्शनावरण स्वभाव छे, आतुं नाम प्रकृतिवंध क-हेवाय छे. हवे कोइ छाडवो एक दिवस रही बगडी जाय छे, कोइ वे दिवस, कोइ चार दिवस, कोइ आठ, कोइ दश, कोइ पखवाडीयुं, अने कोइ एक मास सुधी रहे छे, अने पछी बगडी जाय छे. तेवीज रीते कोइ कमनी स्थिति अंतर्भुहूर्त्त सुधीनी होय छे. कोइनी प्रहर, दिवस, पखवा-डीयुं, मास, अने छेवटे सीत्तेर कोटाकोटी सागरोपम सुधीनी होय छे. ज्यां सुधीनी स्थिति होय, त्यां सुधी फळ आपीने नाश पामे छे, आनुं नाम स्थीतिबंध क-हेवाय छे.

जेम कोइ लाडवानो रस कडवो होय छे, कोइनो मीठो होय छे, अने कोइनो कपाएको होय छे, तेवी रीते कोइ कर्मनो रस ओछुं वधतुं छुख आपे छे, अने कोइ कमनो रस ओछुं वधतुं दुःख आपे छे। आ संसारमां जीवोमां जे जे अवस्था देखाय छे, ते ते अवस्था भेद कमना रसथीज देखाय छे। कर्मना रसने अनुभाग पण कहे छे, आनुं नाम रसर्वंध कहेवाय छे।

जेम कोइ लाडवो वजनमां पांच तोलानो होय छे, कोइ पाशेरनो, कोइ अडधा शेरनो, अने कोइ शेरनो होय छे, तेम कोइ कर्मना प्रदेश गणत्रीमां थोडा होय छे, अने कोइना घणा होय छे, आनुं नाम प्रदेशयंध कहेवाय छे.

सारांचा प्रश्नो.

१ बंध तत्व ए केटलाग्रं तत्व छे ? २ बंध एटले ग्रं १ ते दाखला साथ समजावो ३ बंध शब्दनो अर्थ ग्रं छे ? ४ वंध तत्वना केटला भेद छे ? ५ प्रकृतिबंध एटले ग्रं ? ६ कालनो जेमां निश्चय छे, तेने कयो वंध कहे छे १ ७ अनुभागवंधनुं स्वरूप समजावो ८ पुद्गलोना पदेशनो समुदाय ते कयो वंघ १ ९ चार वंध माटे लाडवानो दाखलो समजावो १० त्रिकड एटले ग्रं ? ११ चार वंधने लाडवानो दाखलो आणी जुदी जुदी रीते समजावो १२ अनुभागवंधनुं वीजं नाम ग्रं कहेन्वाय छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

प्रदेश, वंदीवान, परिणमवुं, तीव्र, मंद, रस, शीत द्रव्य, पित्त, क्षार, अंतर्भ्रहूर्त्त, प्रहर, कोटाकोटी, सागरोपम, अनुभाग, कर्मना प्रदेश

पाठ ७० मो.

वंध हेतु.

जेनाथी बंध थाय, ते बंधना हेतु कहेवाय छे, ते

हेतुना वे भाग छे. एक बंधना मूळ हेतु, अने वीजा वंधना उत्तर हेतु. बंधना सूळ हेतु चार प्रकारना छे, अने उत्तर हेतु सत्तावन प्रकारना छे. विध्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग-ए चार मूळ हेतु छे, तेना उत्तर भेद सत्तावन थाय छे. मिथ्यात्वना पांच भेद छे, अविरतिना बार भेद छे, कषायना पचीश भेद छे, अने योगना पंदर भेद छे, एवी रीते वधा मळीने सत्तावन भेद थाय छे. आ कर्मना बंधमां वादीओ जुदा जुदा छ विकल्प करें छे, ते वधा भिथ्या छे. मिथ्या कल्पना करवी, ते विकरप कहेवाय छे. पहेला विकरपमां तेओ एवी शंका उठावे छे के, प्रथम जीव निर्मळ हतो; एटले पुण्य पापना बंधथी रहित हतो. पछी तेने पुण्य पापनो वंध थयो छे. आ तेनी वात तद्दन थिथ्या छे. कारण के, निर्मळ जीव कर्मनो वंध करी शकतो नथी, तेमज कर्म विना ते संसारमां पण उत्पन्न थइ शकतो नथी। जो निर्मळ जीवने कर्मनो वंध थाय, तो पछी मोक्षना जीवने पण कर्मनो वंध थाय, तो मोक्षनोज अभाव थाय, माटे ए विकल्प तद्दन मिथ्या छे,

वीजा विकल्पमां वादी एवी वात करे छे के, कर्म पहेलां हतां, अने जीव पछीथी वन्यो छे. आ वात पण तदन मिथ्या छे; कारण के, जीव विना कर्म कोण कर्या हतां ? कर्जा विना कर्म थइ शकतां नथी.

त्रीजा विकल्पमां कहे छे के, जीव अने कमें एकज

साथे उत्पन्न थयां छे. आ वात पण संभवती नथी; जे वस्तु साथे उत्पन्न थाय, ते परस्पर कार्य अने कारण थइ शके नहीं, अने तेमां एवो विरोध आवशे के, जो कम जीवनां करेळां सिद्ध न थया, तो जीव कर्मनुं फळ पण भोगवशे नहीं.

चोथा विकल्पमां कहे छे के, जीव तो छे, पण जीवने कर्म नथी; आ वात पण मिथ्या छे जो जीवने कर्म न होंय, तो जीव सुख दुःख केवी रीते भोगवी शके ?

पांचमा विकल्पमां " जीव अने कर्म बंने नथी, " एम कहे छे आ विकल्प तो तद्दन असत्य छे; कारण के, " जीव अने कर्म बंने नथी, " एम कहेनारी कोण छे ? ते जीव छे के बीजो छे ?

छष्टा विकल्पमां जीव अने कर्म (माया) बंने स्वतः अनादि छे, एम कहे छे, आ कहेवामां पण विरोध आवे छे; कारण के जीवनी जेम कर्मनो पण कदापि नाश न थवो जोइए, अने जैनमां जीव तथा कर्मनो प्रवाहथी अनादी संबंध छे, पण जुनां कर्म नाश थतां जाय छे, अने नवां कर्म बंधातां जाय छे, माटे पुद्गछ द्रव्यरुपे कर्म नित्य छे, अने पर्यायथी अनित्य छे; ज्यारे जीव अने कर्मनो संबंध तहन नाश पामे छे, त्यारे जीव सोक्ष पामे छे, आ प्रमाणे छ विकल्प समजवाथी बंध

तत्वने माटे सारी समजण पडे छे, एथी करीने कर्मना वंधना जे हेतु छे, ते अवस्य जाणवा जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ वंध हेतु एटले शुं १ २ वंधना मूळ हेतु केटला छे १ ३ वंधना उत्तर हेतु केटला छे १ ४ उत्तर हेतुना वधा भेद संक्षेपथी गणावो ५ मिध्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग—ए चारेना केटला भेद छे १ ते जुदा जुदा गणावो ६ विकल्प एटले शुं १ ७ आ निर्मळ जीवने पुण्य पापनो वंध पछी लाग्यो छे, एम कहेबुं ते कयो विकल्प छे १ ८ जीजा विकल्पमां शुं आवे छे १ ९ कर्म पहेलां हतां, अने जीव पछीथी वन्यो छे, ए कया विकल्पमां आवे छे १ १० जीव अने कर्म वंने नथी, ए क्या विकल्पमां आवे छे १ १२ चोथा विकल्पमां शुं आवे छे १ १२ जीव अने कर्म वंने अनादि छे, एवी वात शेमां छे १ १३ जैन शुं माने छे १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

मूळ हेतु, उत्तर हेतु, मिध्यात्व, अविराति, कपाय, योग, मिध्या, कल्पना, निर्मळ, अनादिः

पाठ ७१ मो.

[बंधना उत्तर हेतुना सत्तावन भेद.]

मिथ्यात्व.

जे धर्मथी विरुद्ध होय, तेने सत्य मानवुं, ते मिध्यात्व कहेवाय छे, ते मिध्यात्वना पांच प्रकार छे. १ आभिग्रहीक मिध्यात्व, २ अनिभग्रहीक मिध्यात्व, ३ अभिनिवेश मिध्यात्व, ४ संशय मिध्यात्व, अने ५ अनाभोग मिध्यात्व—एवां नाम छे.

जे जीव एम जाण के, " जे कांइ हुं समज्यों छुं ते सत्य छे, बीजानी समज ठीक नथी " आवुं धा-रीने सत्य असत्यनी परीक्षा करवानी जे इच्छा थाय नहीं, तेमज ते सत्य असत्यनो निर्णय पण करे नहीं, जे मत पोते ग्रहण करेछो तेज सत्य छे, एम मानी छीधी वात न मुके, ते पहेछुं आभिग्रहीक मिध्यात्व कहेवाय छे.

जे जीव एम माने के, सर्व मतो सारा छे, सर्व मतोनी अंदर मोक्ष मळे छे. कोइ पण मतने नटारो क-हेवो न जोइए, बधा धर्मोने नमस्कार करवा, आ बीज़ं अनिभग्रह मिथ्यात्व छे.

जे जीव जाणीने जुड़े वोले, किंद अजाणथी कांइ भुल पढ़ी गइ होय, अने तेने जो कोइ विद्वान बतावे, तोपण ते ते वातनो कदाग्रह राखे, अभिमानथी पकडेली वातने छोडे नहीं, अने पोताना कपोळ कल्पित मतने नठारी युक्तिओथी सिद्ध करवा मथन करे, तेमज वादमां हारी जाय, तोपण पोतानो मत छोडे नहीं, ते त्रीजं अभिनि-वेशा मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीव श्री जिन भगवंते कहेला तत्वमां शंका करे, जैन तत्वनी गहन वात पोताना समजवामां न आवे, तथी तेमां वारंवार संशय कथी करे, ते चोथुं संशय मिथ्यात्व कहेवाय छे.

जे जीवने धर्म के अधर्म शी वस्तु छे १ एवो छ-पयोग न होय, ते पांचम्रं अनाभोग मिध्यात्व क-हेवाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ मिथ्यात्व एटछे शुं १ २ मिथ्यात्वना केटला भकार छ १ ३ अनिभग्रह मिथ्यात्व एटछे शुं १ ते समजावो १४ जेमां जीवने सत्य असत्यनी परीक्षा करवानी समजण न होय, अने जे पोते मान्युं होय तेज सत्य छ एम माने, ते केंचुं मिथ्यात्व १ ५ संशय मिथ्यात्व एटले शुं १ ६ जेमां जीवने पोते करेली भुलनो कदाग्रह थाय, अने तेने कपोळकल्पित युक्तिओथी सिद्ध करवा मथे,

ते केवुं मिथ्यात्व कहेवाय ? ७ अनाभाग मिथ्यात्वतुं छक्षण कहो।

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निर्णय, कदाब्रह, कपोलकल्पित, युक्ति, मथन, गहन, उपयोगः

पाठ ७२ मो.

(बंध हेतुना सत्तवन भेद.)

. अविरति अने कषाय.

जे हिंसा थाय तेवा काममांथी विराम न पामबुं, ते अविरित कहेवाय छे. ते अविरितना बार भेद थाय छे. पांच इंद्रिय, छठुं मन, अने छकाय मळी बार भेद थाय छे. पांच इंद्रियोने पोतपोताना विषयमां प्रवर्ताववी, कोइ पण पापमय वस्तुथी मननो निरोध करवी नहीं, अने छ जीव निकायनी हिंसामां अष्टित करवी, ते वधी मळीने बार प्रकारनी अविरित थाय छे.

कोध, मान, माया, अने लोभ—ए कषाय कहे-बाय छे. ते कषायना पचवीश भेद थाय छे. अनंतानु- वंधी कोध, मान, माया, अने छोभ, अपत्याख्यानी कोध, मान, माया, अने छोभ प्रत्याख्यानी कोध, मान, माया, अने छोभ अने लोभ अने संज्वलन कोध, मान, गाया, अने छोभ म-ए सोळ, तथा १ हास्य, २ रित, ३ अराति, ४ भय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ स्त्री वेद, ८ पुरुष वेद, अने ९ लपुंसक वेद—ए नव नोकषाय—ए पचनीन कपायना भेद कहेवाय छे, तेओ वधां संसारनी स्थितिनां मूल कारण छे.

सारांश प्रश्ना.

१ अविरिति एटले शुं १ २ अविरितना केटला भेद छे १ ३ अविरितिना बार भेद गणावो. ४ कपाय कया १ ते कहो. ५ कपायना केटला भेद थाय छे १ ६ फपा-यना पचवीश भेद गणावो.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

विराम, प्रवर्त्ताववी, पापमय वस्तु, निरोध, प्रवृत्ति, मूळ कारण.

पाठ ७३ मो.

(यंध हेतुना सत्तावन भेद.)

योग-भाग १ लो.

मन, वचन, अने काया—ए योगना त्रण प्रकार छे, ते योग बंधना हेतुमां गणाय छे. ते त्रण प्रकारना योगना उत्तर भेद पंदर थाय छे. मनोयोगना चार भेद, वचनयोगना चार भेद, अने काय योगना सात भेद, एवी रीते सर्व मळीने पंदर भेद थाय छे.

सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, मिश्र मनोयोग, अने व्यवहार मनोयोग—ए चार मनोयोगनां नाम छे। मनतुं बीजुं नाम अंतःकरण छे। तेमना द्रव्यमन अने भावमन एवा बे भेद छे मनोवर्गणानां पुद्गल ग्रहण करी ते पुद्गलोने चिंतन धर्मरुपे मनपणे परिणमावे ते द्रव्य मन कहेवाय छे, अने कर्मना क्षय उपशमशी ज मित ज्ञान छत्पन्न थाय, तेतुं नाम भावमन कहेवाय छे। तेवा ज्ञानशी आ बधो व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने व्यवहार सिद्ध थाय छे। वळी उपवारशी द्रव्य मन ज्ञाता थाय छे। इंद्रियना आवरण कर्मना क्षयोपशमशी ज मनोज्ञान उत्पन्न थाय, तेवहे परिणाम पामेळा आत्माने असर करवावाळी मनोवर्गणाना

संबंधधी जे कोई जातनुं वीर्य उत्पन्न याय, ते पण मन कहेवाय छे. तेवीज रीते वचननी वर्गणा अर्थात् परमाणु-ओनो समूह, तेनाथी परिणतिरुप कोई जातनुं सामध्ये उत्पन्न थाय, ते बचनयोग जाणवो मनोयोगना अने व-चनयोगना मळीने आठ प्रकार थाय छे.

मनीयोग कहेवाय छे. जेमके आ जीवादि पदार्थ द्रव्यक्षे नित्य छे, अने पर्यायक्षे अनित्य छे, एम अनेकांतपणे चितवबुं, ते सत्य मनोयोगनुं खरेखकं द्रष्टांत छे. तेनाथी विपरीतपणे चितवबुं, एटले जीवादि पदार्थनुं स्वरूप सत्य नथी, धर्म नथी, पुण्य नथी, पाप नथी, स्वर्ग नथी, अने नरक नथी, आम चितवबुं, ते असत्य मनोयोग कहेवाय छे. ते सत्य तथा असत्य चितवनने चचनक्षे वोल्जुं, ते सत्य वचनयोग तथा असत्य वचन योग कन्हेवाय छे.

कांइक सत्य अने कांइक असत्य चिंतववुं, ते मिश्र मनोयोग कहेवाय छे. जेमके, "आ गाममां आजे दश जन्म्या, तथा दश मुवा." आमां कांइक साचुं अने कांइक जुठुं छ, तेमज गायोना टोळांने देखीने चिंतववुं के, 'आ वधी गायो छे, 'पण तेमां चळद पण होय, आ मिश्र मनोयोग कहेवाय छे, अने ते प्रमाणे वचनथी बोलचुं, ते सिश्र चचनयोग कहेवाय छे, तथा कोइनी मागणी करवानुं चिंतवचुं. जेमके " १ हरिचंद्र अहीं आवे " दामोदर आ वस्तु आप, आम चिंतववाथी जिन वचन विरोधाय नहीं, तेथी असत्य पण नहीं, अने आराधक पण नहीं, तेथी सत्य पण नहीं, माटे आ चिंतववुं, ते व्यवहार मनोयोग कहेवाय छे, अने तेज प्रमाणे बोलवुं, ते व्यवहार चच-नयोग कहेवाय छे; एवी रीते मनोयोग तथा वचनयोगना आठ भेद थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ योगना केटला प्रकार छे १ २ योगना उत्तर भेद केटला थाय छे १ ते वधा गणावो. ३ मनोयोगना चार भेदनां नाम आपो. ४ मनतुं बीजुं नाम छुं १ ५ मनना केटला प्रकार छे १ ६ द्रव्यमन अने भावमननां लक्षण कहो. ७ मन ए शी वस्तु छे १ ते समजावो. ८ वचनयोग एटले छुं १ ९ मनोयोग अने वचनयोगना केटला प्रकार छे १ १० सत्य मनोयोग अने असत्य मनोयोग एटले छुं १ ते द्रष्टांत साथे समजावो. ११ सत्य वचनयोग अने असत्य वचनयोग विषे समजावो. १२ मिश्र मनोयोग एटले छुं १ ते दाखला साथे समजावो. १३ मिश्र मनोयोग थने भिश्र वचनयोगमां शो तफावत छे १ १४ व्यवहार मनोयोगनो दाखलो आपो.

१ हरिचंद्र शब्दना अर्थनी जरूर नथी.

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

उत्तर भेद, चिंतन धर्म, व्यपदेश, ज्ञाता, आवरण कर्म, मनोवर्गणा, वीर्य, परमाणुओ, सामध्ये, द्रव्यरूपे, नित्य, पर्यायरूपे, अनित्य, अनेकांतपणे, विरोधाय, आरायक,

पाठ ७४ मो.

योग भाग २ जो.

आत्माने निवास करवा जे पुद्गल द्रव्यथी घनेल अवलंबन, ते काययोग कहेवाय छे; जेम छद्ध के दुर्वल माणसने टेकारुप लाकडी होय छे, तेम आत्मान टेकारुप काययोग छे, तेना योगथी जीवने पोताना वीर्यनुं परि-णामरुप सार्थ्य होय छे. जेम अग्निना योगथी छपर रहेला घडामां रताश थाय छे, तेम कायाना करण संबंधथी आत्माना वीर्यनुं परिणाम थाय छे.

ए कायगोगना सात भेद छे. १ औदारिक काय-योग, २ औदारिक मिश्र काययोग, ३ वैक्रिय काययोग, ४ वैक्रिय मिश्र काययोग, ५ आहारक काययोग, ६ आहारक मिश्र काययोग, अने ७ कार्मण काययोग— आवा ते सात भेदनां नाम छे. पहला वे औदारिक काययोग अने ओदारिक मिश्र काययोग मनुष्य अने तिर्येचमां होय छे. त्रीजो वैकिय काययोग, अन घोथो वैकिय मिश्र काययोग, ते स्वर्गवासी देवताओमां होय छ, पांचमो आहारक काययोग, अने छहा आहारक मिश्र काययोग ते चौद पूर्वधारी साधुओमां होय छे, सातमा कार्मण काययोग जीव ज्यारे मृत्यु पामी बीजा भवषां जाय छे, त्यारे ते रस्तामां तेनी साथे रहे छे, तेमज ते समुद्धात अवस्थामां केवलीने होय छे.

कदि अहीं कोइ शंका करे के, ज्यारे कार्मण काय-योगने गणवामां आव्यो, तो पछी तैजस शरीरने छइने आठमो तैजस काययोग केम न थाय ? तेना जवाबमां कहेवातुं के, ते तैजस शरीर आहारतुं पाचन करवामां समर्थ छे, तेथी तेनो कामर्ण शरीरमां समावेश थइ जाय छे, माटे तेने जुदा काययोगमां गण्युं नथी.

आ प्रमाणे काययोगना सात भेद थाय छे, जे प्रथमना भेदनी साथे मेळवतां बधा मळीने योगना पंदर भेद थया मिध्यात्वना पांच, अविरतिना वार, कषायना पचीश, अने योग पंदर—एम एकंदर वंधना हेतुना सत्तावन उत्तर भेद थाय छे.

सारांश प्रश्नो.

१ काययोग एटले शुं १ ते समजानो २ काययोगने माटे जे जे दाखलाओं होय ते कही ३ काययोगथी जीवने केंचुं सामर्थ्य थाय १ ते कही ४ काययोगना सात भेदना नाम आपो ५ जीजो अने चोथो काययोग कोने होय छे १ ६ पहेलो अने बीजो काययोग कोने होय छ १ ७ जीवने सातमो कामण काययोग क्यारे थाय छ १ ८ समुद्धात अवस्थामां केंचलीने कयो काययोग होय छ १ ९ चौद पूर्वधारी साधुओने कयो काययोग होय १ १० स्वर्गनासी देवताओने कयो काययोग छे १ १ तैजस ज्ञरीरने माटे जुदो काययोग केम नथी १ १२ तैजस ज्ञरीरमां केवी जिक्त छ १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

निवास, अवलंबन, वीर्य, सामर्थ्य, करण संवंध, चौद पूर्वधारी, समुद्धात अवस्थामां, तैजस शरीर, पाचन,

पाठ ७५ मो.

धंध तत्त्व विषे कविता.

भुजंगी छंद.

भवे जंतुओं जे थकी कर्म बांधे, कहे बंधनुं तत्त्व ते कर्म सांधेः जुवो जेम पाणी मळे दूध साथे, मळे कर्मनां पुद्गलो तेम साथे. रहे जेम केदी पराधीन छाप, रहे जीव ते कमें आधीन आपः गण्या मूळ ते वंधना हेतु चार, वीजा उत्तरेर ते सतावंन सार. गणे आदि भिध्यात्वना भेद पांच, सदा ते थकी जीवने थाय आंच;४ वळी अविरतिना वधा भेद वार, वधे जे थकी जीवने कमें भार. कषायोतणा भेद पूरा पचीश, पडे भार संसारनो तेथी शीप;

९ आत्मा साथे. २ वीजा वंधना उत्तर हेतु सतावन छे. ३ प्रथम. ४ दु:ख. ५ माथे.

तेनी जै प्रस्पणा, ते पण मोक्षनी प्रस्पणा छे, कारण के जि मोक्ष छे, ते जीव पर्याय सिद्ध थयेछा जीवथी। जुदो नथी, जीवना पर्याय सर्वथा जीवथी भिन्न थइ शनकता नथी।

ते सिद्धोनुं स्वरूप नव प्रकारे कहेलुं छे, तेथी ते मोक्ष तत्त्वना नव नव भेद गणाय छे, ते भेदनी प्ररूपणा नव द्वारथी थाय छे. १ स्वत्पद प्ररूपणाद्वार, २ द्रव्य प्रमाणद्वार, ३ क्षेत्रद्वार, ४ स्पर्धानाद्वार, ५ कालद्वार, ६ अंतद्वार, ७ भागद्वार, ८ भावद्वार, अने ९ अल्प बहुत्वद्वार, आवां तेनां नाम छे.

मोक्षने विषे छतां पदनी जे प्ररुपणा, ते सत्पद्
प्ररुपणा नामे पहेलुं द्वार छे. आ द्वारमां छतां पदनी
परुपणा एवी रीते छे के, मोक्ष ए पद सत्पद छे, एटछे
छतुं पद छे; कारण के ते एक पद छे. आ जगतमां
जेटला एक पदवाची पदार्थों छे, ते वधा छतां छे, अने
जे पदार्थ वे पदवाची एटले वे पदवाला छे, ते छतां छे,
अने अछतां पण छे. जेम घट—[घडो] पट [वस्त]
ए एक पदवालां पद छतां छे, अने वंध्या पुत्र
[वांइणीनो पुत्र] अश्वश्रृंग (घोडानुं ज्ञींगडुं) आ
वधां वे पदनां नाम छे, ते अछतां छे, अने राजपुत्र
(राजानो पुत्र) केतकी पुष्प (केतकीनुं फुल) आ
वे पदवाला पदार्थ छतां पण छे, तेथी वे पदवाला पदार्थ

क्रोध, मान, माया अने छोभ—ए चारे कषाय पण सिद्धमां होता नथी; कारण के, ज्यारे चारे कषायनो नाश थाय, त्यारेज सिद्धावस्था मेळवाय छे.

मितज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अने केवळज्ञान—आ पांच प्रकारे ज्ञान छे, अने मितअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंग ज्ञान—आ त्रण प्रकारे अज्ञान छे. तेमां प्रथमना मित, श्रुत, अवधि अने मनःपर्यव—ए चार ज्ञानमां अने त्रण अज्ञानमां सिद्धपणुं होतुं नथी। एकला केवळज्ञानमांज सिद्धपणुं पमाय छे.

१ सामायिक, २ छेदोपस्थापनीय, ३ परिहार विश्विद, ४ सूक्ष्मसपराय, अने ५ यथाख्यात—आ पांच मकारनां चारित्र तथा तेनां मितपक्षी देशसंयम तथा असंयम—ए बघामांथी यथाख्यात चारित्रमांथी मोक्षे जवाय छे. बाकी चारमांथी जवातुं नथी.

१ चक्ष, २ अचक्ष, ३ अवधि अने ४ केवळ-आ चार दर्शनोमां पहेलां त्रण दर्शनोमांथी सिद्ध यवातुं नथी, मात्र केवळ दर्शनमांज सिद्धपणुं पमाय छे. १ कृष्ण, २ नील, ३ कापोत, ४ तेज, ५ पद्म, अने ६ शुक्ल—आ छ लेश्याओमांथी सिद्धपणुं पमातुं नयी. अलेशी भावे सिद्धपणुं पमाय छे.

दर्शनमांधी सिद्धपणुं पमाय ? २६ छ लेक्याओमांधी सिद्धपणुं पमाय के नहीं ? न पमाय तेनु शुं कारण छे ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

धर्म, धर्मी, प्ररुपणा, पर्याय, सत्पद, एक पदवाची न्यायथी, अवेदी, अकषायी, देशसंयम, असंयम

पाठ ७७ मो.

मोक्षतत्व भाग २ जो.

प्राणीनी भव्य अने अभव्य, आवी वे प्रकारनी अवस्था छे. बंने अवस्थामांथी भव्यमां मोक्ष छे, अभव्यमां नथी। १ क्षायिक, २ क्षयोपश्रम, ३ उपश्रम, ४ सास्वादन अने ५ वेदक—आ पांच सम्यवत्वना प्रकार छे। तेओना प्रतिपक्षी मिथ्यात्व अने मिश्र छे। तेओमांथी क्षायिक सम्यवत्व शिवाय बीजां चार सम्यवत्वोमांथी सिद्धपणुं न प्रमाय, तेमज जे मिथ्यात्व अने मिश्र छे, तेमांथी प्रण सिद्धपणुं होतुं नथी। कारण के, क्षायिक शिवायना वीजां सम्यवत्वो क्षयोपश्रम विगरे भावमां वर्त्तनारां छे, अने क्षायिक सम्यवत्व तेवुं नथी, माटे तेमां सिध्धपणुं प्रमाय छे,

संज्ञीमांथी मोक्षे जवाय छे, असंज्ञीमांथी जवातुं नथी। आहार त्रण प्रकारना छे। १ ओज आहार, २ छोम आहार, अने ३ प्रक्षेप आहार—एवां तेमनां नाम छे। आत्रण प्रकारना आहारमांथी सिद्धपणुं प्रमातुं नथी, अणा- हारीपणामां प्रमाय छे।

आ प्रमाणे सत्पद परुपणा नामे पहेळुं द्वार विस्ता-रथी जणावी, हवे वीजां द्वार संक्षेपथी कहेवामां आवे छे.

सिद्धना जीव गणत्रीमां अनंत छे, एम सिद्धना जीव द्रव्य विषे विचारवुं, ते द्रव्य प्रमाण नामे वीजुं द्वार छे. आकाशना एक देशमां सर्व सिद्धोतुं स्थान छे, ते आकाश देशनुं प्रमाण शुं छे ? धर्मास्तिकाय विगेरे पांच द्रव्य ज्यां सुधी छे, त्यां सुधी लोक छे, एवा लो-क आकाशना असंख्यातमा भागमां सिद्ध रहे छे. अर प्रमाणे सिद्धना अवगाहना क्षेत्र विषे विचारतुं, ते त्रीजुं क्षेत्रद्वार छे. जेटला आकाशना भागमां सिद्ध रहे छे, तेनाथी स्पर्शनानो भाग कांइक अधिक छे, एटले केटला आकाश मदेशने सिद्धना जीव फरशे एम विचारवं, ते चोथुं स्पर्शनाद्वार छे। एक सिद्धने आश्रीने सादि अनंतकाळ अने सर्व सिद्धने आश्रीने अनादि अ-नंतकाळ एटले सिध्धनो काळ आदि अनंत छे, एम कहेवुं, ते पांचमुं काळडार छे. सिध्धोनी वच्चे अंतर नधी, सर्व सिध्धो मांहोमाहे मळीने रहेल छे, तेमज फ-

होंय, तेंने शुं कारण ? ७ झायिक सम्यक्त्वनाः केटलाः भेद छे १ ८ शुध्ध अने अशुध्ध क्षायिक विषे समजावो. ९ भवस्य केवलीओने केवुं क्षायिक होय छे ? १० श्रे-णिक विगेरेने केवुं क्षायिक इतुं १ ११ सादि अने सपर्य-वसान एटले शुं १ १२ अशुध्य झायिकमां सिध्धपणुं केम न होय ? ते समजाबो १३ अपाय अने सत् द्रव्य-नो अर्थ शुं ? १४ शुध्ध क्षायिक सम्यक्त्व क्यारे थाय छे ? १५ संज्ञाना केटला मकार छे ? १६ कड़ संज्ञायी संज्ञी कहेवाय ? १७ व्यवहारमां केवा संज्ञीतं ग्रहण क-राय छ ? १८ केवो जीव संज्ञी कहेवाय छ, अने केवो जीव असंज्ञी कहेवाय छे १ १९ आहार केटला प्रकारना छे ? तेनां नाम आपो. २० त्रणे प्रकारना आहारमांथी सि-ध्यपणुं होय छे के नाहि १ २१ द्रव्य ममाणद्वारमां शेतुं चितवन याय छे १ २२ सिध्धना जीव केटला आकाशः प्रदेशने फरशे, एवा विचार कया द्वारमां छे ? २३ क्षे-त्रद्वारमां शुं विचारवानुं छे ? २४ सिध्योनी बच्चे अंतर नथी; ए विचार क्या द्वारमां छे ? २५ फालद्वारमां शेनो विचार छे १ २६ क्षायिक विगेरे पांच भावनांथी सि-ध्यना जीव कया भावे छे १ ए विचार कया द्वारमां आवे छे ? २७ भागद्वारमां शुं आवे ? ते सपजाबो २८ अं-तरद्वीरमां शेनो विचार करवानो छे १ ते कहा. २९ अल्दः वहुत्वद्वार विषे सारी रीते समजावी.

होंय, तें मुं शुं कारण ? ७ क्षायिक सम्यक्त्वनाः केंटलाः भेद छे १ ८ शुध्य अने अशुध्य क्षायिक विषे समजावी. ९ मवस्य केवलीओने केवुं क्षायिक होय छे ? १० श्रे-णिक विगेरेने केवुं क्षायिक इतुं १ ११ सादि अने सपर्य-वसान एटले शुं १ १२ अशुध्य क्षायिकमां सिध्धपणुं केम न होय ? ते समजाबो १३ अपाय अने सत् द्रव्य-नो अर्थ शु १ १४ शुध्ध क्षायिक सम्यक्त्व क्यारे थाय छे ? १५ संज्ञाना केटला मकार छे ? १६ कइ संज्ञायी संज्ञी कहेवाय ? १७ व्यवहारमां केवा संज्ञीनुं ग्रहण क राय छ ? १८ केवो जीव संज्ञी कहेवाय छ, अने केवो जीव असंज्ञी कहेवाय छे ? १९ आहार केटला पकारना छे ? तेनां नाम आपो. २० त्रणे पकारना आहारमांथी सि-ध्वपणुं होय छे के नहि ? २१ द्रव्य प्रमाणद्वारमां क्षेत्रं चितवन याय छे ? २२ सिध्धना जीव केटला आकाशः मदेशने फरशे, एवो विचार कया द्वारमां छे ? २३ क्षे--त्रद्वारमां शुं विचारवातुं छे ? २४ सिंघ्योनी बच्चे अंतर नथी; ए विचार क्या द्वारमां छे ? २५ कालद्वारमां क्षेत्रो विचार छे ? २६ क्षायिक विगेरे पांच भावगांधी सि-ध्यना जीव कया भावे छे ? ए विचार क्या द्वारमां आवे छे ? २७ भागद्वारमां शुं आवे ? ते समजाबो. २८ अं-तरद्वीरमां शेनो विचार करवानो छे १ ते कही, २९ अल्स बहुत्वद्वार विषे सारी रीते समजावी.

तीर्थंकर पदवी पामीने जे मोक्षे गयेला, ते जिन-सिद्धा नामे पहेलो भेद छे. सामान्य केवली थइने जे मोक्षे गया, ते अजिनसिद्धा नामे वीजो भेद छे. तीर्ध-करने केवळज्ञान उपज्या पछी जे मोक्षे गया, ते तीर्थ-सिद्धा नाभे त्रीजो भेद छे तीर्थकरने केवळज्ञान उपज्या पहेलां जे मोक्षे गया, ते अतिथिसिध्धा नामे चोथो भेद छे. गृहस्थना वेषमां रहीने मोक्षे गया, ते गृहस्यितंग सिध्धा नामे पांचमो भेद छे. योगी, संन्यासी अने ता-पस वगेरेना वेषमां रहीने मोक्षे गया, ते अन्यलिंग सिध्घा नामे छहो भेद छे. साधुना वेपे जे मोक्षे गया, ते स्वलिंग सिध्धा नामे सातमो भेद छे. स्रीवेद पाः मीने जे मोक्षे गया, ते स्त्रीलिंग सिध्धा नामे आउमो भेद छे. पुरुपवेद पामीने जे मोक्षे यया, ते पुरुषिंग सिध्धा नामे नवमा भेद छे. नपुंसकवेद पामीने जे मोक्षे ंगया, ते ^१नपुंसकलिंग सिध्धा नामे दशमो भेद छे. कोइ पदार्थने देखीने प्रतिवोध पामी जे मोक्षे गया, ते प्रत्येक बुध्ध सिध्धा नाम अगीयारमी भेद छे।

गुरुना उपदेश विना पोतानी मेळे जातिस्मरण वि-गेरेथी मितवोध पामी जे मोक्षे गया, ते स्वयंबुध्ध सिध्धा नामे वारमो भेद छे. गुरुनो उपदेश सांभळी वैराग्य पामी योक्षे गया, ते बुध्धयोधित सिध्धा नामे तेरमो भेद

९ पाउळधी धयेल, जन्मधी नहीं.

बुध्य सिध्य कोने कहेवाय ११५ एक समयने विषे एकज मोक्षे गया होय, ते केवा सिध्या कहेवाय ११६ बुध्यवोधित सिद्धा कोने कहेवाय ११७ अनेक सिध्या कोण १ ते कहे।

. शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

सामान्य केवळी, योगी, संन्यासी, तापस, जाति स्मरण.

ं वीर्जुं नाम अयोध्या छे, तेमां अजितनाथनो जन्म थयो हतो. तेमना पितानुं नाम जितशत्रु, अने मातानुं नाम विजयादेवी इतुं. जितशत्रु राजाने सुमित्र नागे एक भाइ हतो, तेने युवराज पद आपवामां आन्धुं हतुं. ज्यारे अजितनाथ विजयादेवी माताना गर्भमां आव्या, त्यार ते-मनी माताए चौद स्वमां जोयां इतां. तेमनो जन्म माघ शुदी आठमने दिवसे थयो हतो. तेमना सुतिकागृह अने जन्म वखतनी वधी जातनी कियाओ ऋपभदेव भगवंतनी पेठे करवामां आवी हती. आज समये जितशह राजाना भाइ सुमित्रनी वैजयंती नामनी स्त्रीयी एक पुत्रनी जन्म ययो हतो, तेनुं नाम सगर पाडवामां आब्युं हतुं. ते वंने कुमारी साथेज एछर्या इता, अने योग्य वये अभ्या-समां पण साधेन जोडाया इता. ज्यारे अजितनाय जु-वान थया, त्यारे तेमनो विवाह सैकडो राजकन्याओनी साथे थयो इतो. पोताना पिता जितशत्रु राजाना आग्रहथी प्रभुए ते विवाह स्वीकार्यों हतो। प्रभुनो विवाह कर्या पछी राजा जितशत्रुए तेमनी पासे दीक्षा लेवानी आहा मागी इती. अजितनाथे पिताने दीक्षा लेवाने खुशी साथे रजा आपी, एटले राजा जितशत्रुए मोटा उत्सवधी आजित स्वामीनो राज्याभिपेक कर्यो इतो।

अजितस्वामी राजा थया पछी तेमणे पोताना पि-तानो मोटा आढंबरथी दीक्षा महोत्सव फर्यो हतो राजा जितशत्रुने राज्यनी जेम अखंड व्रतनुं पासन करतां अनु-

करी, आत्म स्वरुपमां रहेबुं, के जिथी आ संसार सम्द्रनो पार आवे

आ प्रमाण ज्यारे अजितस्वामी वैराग्य पाम्पा, त्यारे सारस्वत विगेरे लोकांतिक देवताओए आवी जणान्युं के, भगवन् ! आप स्वयंबुद्ध छो, तेथी अमे आपने बोध आपवाने लायक नथी, तथापि एटलं मात्र याद आपीए छीए के, " आप धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो। " देवताओनां आवां वचनथी तरतज प्रभुनो वैराग्य दृद्धि पाम्यो, अने तेमणे सगर कुमारने बोलावी, आ प्रमाणे कर्तं

" त्रिय भाइ सगर ! मारी इच्छा आ संसाररण समुद्रने तरवानी थइ छे, इवे तमे आ राज्यने चळावो." प्रभुनां आवां वचनथी सगर कुमारना नेत्रमां आंम्र आवीं गयां, अने तमणे रोतां रोतां कत्यं, पूज्य वंधु ! आ श्रं बोछो छो ! में आपनो शो अपराध कयों छे, के जेथी मने जुदो पाडवानी आवी आज्ञा करो छो ! कदि में अपराध के अभिक्त करी होय, तो ते आपनी अपसन्नताने माटे न धवी जोइए; कारण के, पूज्य पुरुषो पोताना अभक्त के अपराधी शिश्रुने शिक्षा आपे छे, पण तेने छोडी देता नथी. स्वामी ! हुं तमारा चरणनी सेवा छोडीश नहीं ज्यारे तमे राजा थया हता, त्यारे हुं युवराज ययो हतो, तेम तमे व्रतधारी थशो, तो हुं तमारो शिष्प थइशा सगर कुमारनां आवां वचन सांभवी मुसूण

पछी भक्तिथी सुशोभित एवो सगर राजा मधुनी भक्तिपूर्वक स्तुति तथा नमस्कार करी तेत्रमां आंध्र पाडतो हळवे हळवे पोतानी राजधानीमां पाछो आन्यो हतो. अजित भगवाने दीक्षा छीधा पछी वीने दिवसे ब्रह्मदत्त राजाने घेरे भीरवढे छट तपतुं पारणुं कर्युं इतुं मधना पारणाना प्रभावधी ब्रह्मदत्त राजानां आंगणामां देवताओए साढावार कोड सोनैयानी, उंची जातनां वस्नोनी, सुगंधी जळनी अने पंचरंगी पुष्पोनी दृष्टि करी हती, तथा दुंदु-भिना नाद साथे " अहोदान, अहोदान " एम उचार करतां जयनाद कर्यो हतो। मञ्ज ज्यारे ब्रह्मदत्त राजाना घरमांथी पारणुं करी वाहेर नीकळ्या एटले तेमनां पगलां उपर ब्रह्मदत्ते एक रत्ननी पीठ करावी हती। वायुनी जेम स्वतंत्र विहारी भगवान् अजितस्वामी निर्प्रेय, निर्मम अने निस्पृह यइ पोताना संसर्गधी ग्राम अने शहरोने तीर्धरुप करता सर्व पृथ्वीमां विचर्या हता. ए महानुभावे उग्र तप फर्यु हतुं, विविध प्रकारना उप्र तपथी अने विविध प्रका-रना अभिग्रहोथी परीपहने सहन करतां प्रभुए बार वर्ष निर्गमन फर्या इतां.

दरेक गाम, दरेक शहर अने दरेक अर्ण्यमां फरतां फरतां प्रभु सहस्ताम्रवनमां आव्या, अने त्यां सप्तच्छद हस नीचे कायोत्सर्गे रहा हता. त्यां प्रभुनो ध्यानरूप अप्ति दीपायमान यवायी अप्तिवहे जेम घरफना लय यड़ जाय, तेम तेमनां घातिकामें सर्वया लय पामी गयां, अने

पाठ ८० मो.

अजिननाथ--भाग २ जो.

बद्धी देशना नगाम धया पर्छ। सिंहसेन नामना तेनमा द्वार गणधर देशना भागी १भी गणधरनी देशना नंपूर्ण थया पर्छ। मर्थ देयगाधी अने मगर गला पीन-पीतान म्यांन घाल्या गया १भा

भगवान थीं अजिननायना मंथिने अपितायक महायक्ष नामें एक यक्ष यथी हता, मेने जार तुल हतां, हाथीं ने वाहन हतुं, भने वर्ण द्याम हतां, नेना आह हाथमां जमजी नरफ परद हुद्दा, हुद्दार, अध्युष, अने पान-ए जार अने दावी बाजु तरफ बीजोरं, अभय हुद्दा, अंदुद्ध, अने दानि हतां, अजित्यन्ता नामें मशुनी द्यान्मन देवी यह हतीं, ते मोनेरी रंगनी देवीने जार हाथ हता, अने ने लोदाना आसनपर पेटी हतीं, जमणी तर्राप्ता पे हाथमां परद हुद्दा अने पान, अने टावी तर्राप्ता में हाथमां परद हुद्दा अने पान, अने टावी तर्राप्ता में हाथमां वीजारं, अने अंदुद्धा नेणीए पारण पर्या छे.

पाठ ८० मो.

अजितनाथ—भाग २ जो.

पश्चनी देशना समाप्त थया पछी सिंहसेन नामना तेमना ग्रुख्य गणधरे देशना आपी हती गणधरनी देशना संपूर्ण थया पछी सर्व देवताओ अने सगर राजा पोत-पोताने स्थान चाल्या गया हता.

भगवान् श्री अजितनाथना तीर्थनो अधिष्टायक महायक्ष नामे एक यक्ष थयो हतो, तेने चार मुल हतां, हाथी जुं वाहन हतुं, भने वर्ण क्याम हतो. तेना आठ हाथमां जमणी तरफ वरद मुद्रा, मुद्रगर, अक्षस्त्र, अने पास-ए चार अने डाबी बाजु तरफ बीजोरुं, अभय मुद्रा, अंकुश, अने शक्ति हता. अजितबला नामे प्रभुनी शा-सन देवी थइ हती. ते सोनेरी रंगनी देवीने चार हाथे हता, अने ते लोढाना आसनपर बेठी हती. जमणी तर-फना बे हाथमां वरद मुद्रा अने पाश, अने डाबी तर-फना बे हाथमां वरद मुद्रा अने पाश, अने डाबी तर-फना बे हाथमां वीजोरुं, अने अंकुश तेणीए धारण कर्यी छे.

सगरचक्रीए ज्यारे विनीतानगरीना राज्य जपर पो-ताना पौत्र भगीरथने वेसायों हतो, त्यारे अजितनाथ पश्च पाछा विनीतानगरीना ज्यानयां समोसयी हता ते खबर

पाठ ८० मो.

अजितनाथ—भाग २ जो.

मधुनी देशना समाप्त थया पछी सिंहसेन नामना तेमना ग्रुख्य गणधरे देशना आपी हती गणधरनी देशना संपूर्ण थया पछी सर्व देवताओ अने सगर राजा पोत-पोताने स्थान चाल्या गया हता

भगवान श्री अजितनाथना तीर्थनो अधिष्टायक महायक्ष नामे एक यक्ष थयो हतो, तेने चार मुल हतां, हाथी हुं वाहन हतुं, अने वर्ण इयाम हतो. तेना आठ हाथमां जमणी तरफ वरद मुद्रा, मुद्गर, अक्षसूत्र, अने पास-ए चार अने डाबी बाजु तरफ बीजोरुं, अभय मुद्रा, अंकुश्च, अने शक्ति हता. अजितबला नामे पश्चनी शा-सन देवी थइ हतीं ते सोनेरी रंगनी देवीने चार हाथ हता, अने ते लोडाना आसनपर बेठी हतीं जमणी तरफाना बे हाथमां वरद मुद्रा अने पाश, अने डाबी तरफाना बे हाथमां वर्जारुं, अने अंकुश्च तेणीए धारण कर्यी छे.

सगरचक्रीए ज्यारे विनीतानगरीना राज्य जपर पो-ताना पौत्र भगीरथने बेसार्यो हतो, त्यारे अजितनाथ प्रभु पाछा विनीतानगरीना ज्यानयां समोसर्या हता ते खबर

साथ मळेळो हतो, ते समये प्रभु निर्वाण पदने पा-

प्रभुने कौमार अवस्थामां अहार लाख पूर्व थया हता, राज्य स्थितिमां एक पुर्वांगे सहित त्रेपनलाख पूर्व गया हता, लग्नस्थावस्थामां बार वर्ष प्रसार थयां हतां, अने के-वल्जानमां पूर्वांगे तथा बार वर्ष वर्जित एवा लक्ष पूर्व थया हता. एकंद्र तेमणे बोंतर लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगन्युं हतुं. पहेला तीर्थिकर ऋषभदेवना निर्वाणधी पचाका लाख क्रोड सागरोपम जतां अजितनाथ निर्वाण पदने पाम्या हता. तेमनी साथे बीजा एक हजार मुनिओए पादपोपगम अनकान कर्युं हतुं. तेओ पण केवळ्जान शाप्त करीं, मोक्ष पदने पाम्या हता. सगर चक्रवर्त्ती पण केवळी समुद्धात करीने क्षणवारमां प्रभुना पदने पाप्त थया हता.

देवताओं प्रभुना मृत शरीरने शणगारी शिविकामां बेसारी, गोशीर्षचंदननी चितामां छइ गया हता, त्यां अप्रिक्रमारे अप्रि कर्यो हतो, अने वायुक्रमारे तेने प्रज्व-छित कर्यो हतो। अस्थि विना प्रभुनी बीजी सर्व धातु वळी गइ हती। पछी मेघकुमार देवताए जळ वर्षावी, ते चि-ताने बुझावी हती। प्रभुनी उपरनी जमणी अने डावी तरफनी दाढो शक अने इशान इंद्र छइ गया, अने नीचे-नी बंने दाढो चमर अने बिळ इंद्र छइ गया हता, बी-

१-पूर्वींग एटले चोरांशी लाख वर्ष कार कार कार कि

स्थावस्थामां अने केवळज्ञानमां केटला केटला पूर्व के वर्ष थयां हतां ? १३ एकंदर तेमणे केटला लाख पूर्वतुं आयुष्य भोगव्युं हतुं ? १४ पहेला तीर्थकरना निर्वाण पछी केटला सागरोपम जतां अजितनाथतुं निर्वाण थयुं हतुं ? १५ म-भूनी साथे केटला मुनिओए पादपोपगम अनशन कर्युं हतुं ? १६ देवताओए प्रभुनां मृत शरीरने शुं कर्युं हतुं ? १७ मभुनी चिता लपर देवताओए शुं शुं कर्युं हतुं ? १८ मभुनी चिता लपर देवताओए शुं शुं कर्युं हतुं ? १८ मभुनी लपरनी जमणी अने हाबी तरफनी दाढो कया कया इंद्रोए लीधी हती ? २० मभूनां दांत अने अस्थि कोण लइ गया हता ? २१ ते दाढो इंद्रोए क्यां राखी हती ? २२ ते दाढोनी पूजा शेनाथी करता हता ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

अधिष्टायक, वरदमुद्रा, अक्षसूत्र, अभयमुद्रा, अंकुश, पर्षदा, संकेत, अग्रहार, अणुत्रत, धम अंगीक्ष, जिनोक्त, दाहशक्ति, दानशील, पुष्करवर द्वीप, दीक्षा कल्याणक, पूर्वीग, पादपोपगम अनशन, पूर्व, केवळी समुद्धात, मृत श्रदीर, शिबिका, चिता, अस्थि, वज्रमय

सगरने राज्य आपी माघ शुदी नवमीए, रोहणीमां चंद्रयोगे प्रभु व्रत धारता; ब्रह्मदत्त तणे घर पारणुं प्रथम करी, जम्र तप आचरीने बार वर्ष काढता. पोष मास तणी शुक्छ एकादशी तणे दिन, केवळ धारण करी प्रभु थया केवळी; समवस्रण तणा खबर जाणीने ताही, सगर नरेश आव्या वांदवा अतिबली।

सिंहसेन आदि गणधर थया ग्रुणधर, महायक्ष नाम थयो यक्ष तीर्थनायकः नामे तो अजितबला शासननी देवी थयां, सगरने व्रत विषे थया प्रभु स्हायकः

गणधर पंचाणुं ने एक छाख मुनिवर,
त्रण छाख ने हजार त्रीश साध्वीजी छे;
त्रिहजार सातसो ने चौद पूर्वधारी थया,
साहाचारसो हजार मनपरंपवी छे
नव हजार ने वळी चारसो अवधि झानी,
वीश हजार ने चारसो वैक्रिय लिधना हु;
वे छाख ने अठाणुं हजार श्रावको थया छे,
पांच छाख पिस्तालीश हजार छे श्राविका। १०

१ अतिशय बळवान्.

२ एफ हजार ने साडानारसो मनःपर्यव ज्ञानी थया. 3 वैकिय लिधना

थया हता. ते शिवाय बीजी केटछीएक कळाओ तेओ अजितनाथ पासेथी बीख्या इता. ज्यारे सगरचक्री छायक ज्य्यरना थया, त्यारे तेमने **उत्तम राजकन्याओनी साथे** परणादवामां आव्या हता. पछी राजा जितशत्रुए आजि-तनाथने राज्यपद्धी, सगरने युवराजपद्दी आपी हती. अजितस्वामीए ज्यारे दीक्षा छीधी, त्यारे प्रभुनी आहा-यी विनीतं।नगरीना राज्य उपर सगरराजा आव्या इता. दीक्षा लीधा पछी अजितस्वामी एक बार विनीता-नगरीना ज्ञानमां समोसयी, ते वखते देवताओ तथा तेमना इंद्रोनी साथे सगर राजा पण तेमां हाजर यया इता. इंद्रनी पछवाडे वेसीने सगरे प्रभुनी देशना सांभळी हती. पशुए देशना आपी, विहार कर्या पछी सगर रा-जाना शस्त्र मंदिरमां सुदर्शन नामे चक्ररत्न उत्पन्न थयुं हतुं. ते पछी सगर भावथी शुद्ध थड्ने चक्रनी पूजा करी, अने खर्द्धरतने धारण करी सारा ग्रहुर्चे गजरतन उपर वेसी, दिशाओंने तावे करवाने नीकळ्या हता. तेमनी साथे सेनापित दंडरत्नंने छड्ने आगळ चाल्यो हतो. ते शिवाय सर्व उपद्रवने हरनार पुरेहितरतन, दरेक मुकामे खानपान तथा मुकामनी सगवड करी आपनार गृहिरत्न, छावणी विगे-रेनी मदद करनार वर्द्धकिरतन, उपर तथा नीचे रक्षण करनार छत्ररत्न तथा चर्मरत्न, अने अंधकारमां रक्षण करनारा मणि अने कांकणीरत्न सगर चक्रीनी साथे चाल्या इताः

वीतुं आसन कंपी चाल्यं, अने ते देवी एक हजार ने आठ रत्नना घडा तथा बीजी उत्तम भेटो छइ, सगर-चक्रीनी पासे हाजर थइ. सिंधुदेवीने ताबे करी, चक्रवर्षी इशान दिशा तरफ कुच करी, वैतादय पर्वतना दक्षिण भागमां आव्या हता. त्यांना नायक वैतादय कुमारने ताबे करी, तिमस्रा नामनी गुफा पासे आव्या हता, त्यां तेणे कृतमाल नामना देवने ताबे करी दीधो हतो. पछी पोते त्यां रोकाइने पश्चिम दिशाना सिंधुना निष्कूटने जीतवा पोताना सेनापतिने अरधी सेना लइ मोकल्यो हतो.

सेनापित चर्मरत्नथी सिंधुने उत्तरी यवनद्वीपमां आ-व्यो, अने त्यां रहेला जुदीजुदी जातना म्लेच्छ लो-कोने तेणे शिक्षा करीं हती. ते शिवाय कच्छ देशना नायकोने ताबे करीं, जात जातनी उंची भेटो लइ, सिंधु उत्तरी ते पाछो चक्रवर्तीनी पासे आव्यो, अने ते वधी भेटो तेणे चक्रवर्तीने अर्पण करी हती.

सारांश प्रश्नो.

१ सगर चक्रवर्तीनो जन्म कइ नगरीमां अने कया वंशमां थयो हतो १ २ सगरचक्रीनो जन्म कया मासमां अने कइ तिथिए थयो हतो १ ३ सगरचक्रीनां माता पि-तानां नाम शुं हतां १ ४ जितशत्रु राजा सगरने शुं थता हता १ ५ जितशत्रु राजाए सगरने केवी पद्दी आपी

पाठ ८३ मो

सगर चक्रवर्त्ती भाग २ जो.

सगरे एक वखते तिमला गुफानां दक्षिण द्वारनां कमाड उघाडवानी सेनापतिने आज्ञा करी, तेथी सेना-पतिए दंडरत्नथी ते द्वार उघाडी दीधां इतां. पछी सगरे हाथी उपर मणिरत्न मुकी, प्रकाश पाडी, ते गुफामां प्रवेश कर्ये। इतोः त्यां वर्द्धकिरत्ननी मदद्यी निम्नगा अने उम्नगा नामनी वे नदीओ उतरी सगर राजा गुफानी वाहेर नीकळ्या. ते वखते आपात नामना भिछ लोकोञ चक्रवर्ची उपर हुमलो कर्यो हतो, पण तेओने सगरे क्षणवारमां तावे करी दीधा हता. ते आपात जातना भिलोनी उपासनाथी मेघकुमारोजे चकी उपर वरसादतुं तोफान मचान्युं, तेने चक्रीए चर्मरत्न अने छत्ररत्नथी दूर करी दीधुं इतुं छेवटे तेओने पण हारी जइ चक्रीने शरण आववुं पड्युं हतुं, अने पोते करेला अपराधनी क्षमा मागी हती. त्यारपछी चकीए सिंधुना पश्चिम निष्कूटने जीतवा सेनापतिने मोकल्यो, अने पोते त्यांज मुकाम नाखी रहा।

ते पछी सगरचक्री इशानमां रहेला श्रुद्र हिमालयना देवने जीतीने रूपभक्कट पर्वते गया हता, अने ते पर्वतना पूर्व भाग उपर " आ अवसर्पिणी काळमां हुं सगर नामे

शिक्षानाळा घोडा उपर बेसी फरना नीकळ्या हता. ते तोफानी घोडो सगरने लइ आकाशमां उडी एक मोटा जंगलमां दोडी गयो, त्यां सगरराजा घोडानी लगामने मुकी कवजे राखी तेनी उपरथी कुदी पड्या हता. पछी चकी पंगे चाली आगळ गया, त्यां एक मोटुं सरोवर जीवामां आच्युं, तेमां न्हाइ, पाणी पी तेने कीनारे आसन कीधुं, त्यां एक सुंदर स्त्री जीवामां आवी हती. ते स्त्री वैताढ्य पर्वत उपर आवेला गगनव्छभ नामना नगरना एक विद्याधर राजा सुलोचननी सुकेशा नामनी पुत्री हती, ठेने जोतांज सगरराजाने मोह उत्पन्न थयो हतो. वेवामां कोइ सेवके आवी सगरराजाने जणाव्युं के आ सुकेशा आजथी तमारी स्त्री छे, तेनी रक्षा करो. रथनूपुर नग-रना राजा पूर्णमेघे परणवाने माटे आ सुकेशानी मागणी करी हती. तेना पिताए पूर्णमेघने सुकेशाने आपी नहीं, एटले पूर्णमेघे मुलोचनने मारी नाख्यो, एटले आ स्त्रीनो भाइ सहस्रलोचन तेने लड्ने अहीं छुपी रीते रह्यो हतो. ते आजे तेने तमारो मेळाप थयो. पछी सहस्रछोचने आवी, ते सुकेशाने सगरराजानी साथे परणावी हती. त्यांथी सगरराजा वैताढ्य गिरि उपर आवेला गगनवल्लभ नगरमां आव्या हता, अने सहस्रहोचनने तेना राज्य उपर बेसारी विद्याधरोनो स्वाभी कर्यो हतो, अने पछी पोते पाछा विनीतानगरीमां आव्या इता ते बखते शोकोए मोटो उत्सव कर्यो हतो. ज्यारे सगर चक्रवर्त्ती

जंगलमां आवी चड्या हता ? जंगलमां सरोवरने कांठे शुं जोयुं हतुं ? सुकेशा कोण हती ? अने कोनी पुत्री हती ? तथा सुकेशाना पिता सुलोचनने शुं थयुं हतुं ? अने तेनो भाइ सहस्रनयन तेने जंगलमां शा माटे लाव्यो हतो ? १२ सगरचक्री ते सुकेशाने परणी क्यां गया हता ? १३ सुकेशाना भाइ सहस्रलोचनने चक्रीए शुं कर्युं हतुं ? चक्रवर्त्ति महाराणी सुकेशाने छइ विनीता नगरीमां आव्या, ते पछी देवताओए शुं कर्युं हतुं ? अने चक्रवर्त्तिपणाना अभिषेकनो महोत्सव क्यां सुधी चाल्यो हतो ?

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समज्ज्ञीत आपवी.

उपासना, अवसर्पिणीकाल, नवनिधि, समृद्धि, अ-वळी शिक्षावाळा, अभिषेक.

पाठ ८४ मो

सगर चक्रवर्त्ति—भाग ३ जो.

सगरराजाने वधी मळी चौसठ हजार स्त्रीओ हती। तेओनाथी साट हजार पुत्रो थया हता। तेमां सौधी मोटो

जंगलमां आवी चड्या हता १ जंगलमां सरोवरने कांटे ग्रें जोग्रें हतुं १ मुकेशा कोण हती १ अने कोनी पुत्री हती १ तथा मुकेशाना पिता मुलोचनने ग्रें थयुं हतुं १ अने तेनो भाइ सहस्रनयन तेने जंगलमां शा माटे लाव्यो हतो १ १२ सगरचक्री ते मुकेशाने परणी क्यां गया हता १ १३ मुकेशाना भाइ सहस्रलोचनने चक्रीए ग्रें कर्युं हतुं १ चक्रवर्त्ति महाराणी मुकेशाने लइ विनीता नगरीमां आव्या, ते पछी देवताओए ग्रें कर्युं हतुं १ अने चक्रवर्त्तिपणाना अभिषेक्षनो महोत्सव क्यां मुधी चाल्यो हतो १

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूति आपवी.

उपासना, अवसर्पिणीकाल, नवनिधि, समृद्धि, अ-वळी शिक्षावाळा, अभिषेक.

पाठ ८४ मो.

सगर चक्रवर्ति—भाग ३ जो.

सगरराजाने वधी मळी चोसठ हजार स्त्रीओ हती। तेओनाथी साट हजार पुत्रो थया हता। तेमां सौधी मोटो

भरते आ गिरिने आठ आठ पगर्थायां करेलां छे, तेथी आ गिरितुं नाम अद्यापद पडयुं छे. ए वधी इकीकत पोताना मंत्रिओ पासेथी जाणी छीधी. पछी तेमणे त्यां भरतना जेवुं बीजुं एक मोटुं चैत्य करावानी धारणा फ-री. सर्वे एकटा यइने दंडरत्न हाथमां छइ, चार हजार गां सुधी उंडी एक मोटी खाइ खोदवा मांडी. ज्यारे आवी उंडी खाइ खोदवा मांडी, एटले नीचे आवेला ना-ग क्रमार देवताना मंदिरो भांगवा छाग्यां. ते मोटो उप-द्रव जोइ, नागलोकोमां भारे त्रास थइ गयो, एटले ना-गक्कमारोनो राजा ज्वलनमभ बाहेर आव्या, अने तेण सगरना कुमारोने समजावी तेम करतां अटकाव्या स्थारे जन्हुए कहुं के, अमारा पूर्वजना आ जुना पर्वतने अचल करवा माटे अमारो प्रयत्न हतो, ते छतां आ दंडरत्ननी मोटी शक्तिथी तमने नुकशानी थइ होय तो क्षमा करें।, अमे फरीथी तेम करीथुं नहीं पछी। नागराज शांत यह पाछो गयो. पछवाडे ते खाइ पाणीथी पुरवानो विचार करी, तेओ गंगा नदीने त्यां छाच्या, अने तेनाथी ते खाइ पूरवा मांडी. जन्हुकुमार गंगा नदी खेंची त्यां आ-च्या, तथी गंगानुं " जान्हवी " एवं नाम पहयुं. गंगा-ना जळथी पाछी नागकुमारोने मोटी इरकत थइ, एटले नागराज ज्वलनमभ कोपथी बाहेर आव्योः अने पोतानी शेरवाळी दृष्टिथी सगरना साठ इजार कुमारोने वाळी भरम करी दीधा, तेथी चारे तरफ हाहाकार यह रहारे आ

घरमांथी मने तैवो आप्ने मंगावी आपो, जेथी मारो पुत्र जीवतो थाय.

पछी सगरराजाए तेने समजान्यों के, अरे भाइ! तेवुं घर कोइनुं पण होय नहीं दरेक माणसने माथे काळ फरे छे, माटे तारे पुत्रना शोक करवो न जोइए. पछी ब्राह्म-णे सगरराजाने जणाव्युं के, राजा ! तमें वीजाने बोध आपो छो, पण जो तमारे तेवो अनुभव थाय, तो आवो बोध याद राखजो. पछी तेणे कहां के, राजा ! तमारा साठ हजार पुत्रो वळीने भस्म थइ गया छे, अने तमारा सामंत, मंत्रि विगेरे मरवाने तैयार थता इता, तेमने धी-रज आपवानी खातर आ वधी देखाव करवामां आव्या छे. राजा सगर ते सांभळी घणो खेद पाम्या हता. तेने ब्राह्मणरुपे थयेला ते इंद्रे राजाना मोह तोडवाने माटे कें-टलाएक दाखला आप्या हता, जेथी सगरराजानो शोक समाइ गयो इतो। पछी अष्टापद पर्वतनी आसपास रहें-नारा लोकोए आवी फरीयाद करीके खाइने पूरतां वा-हेर उछळेली गंगा नदी अमारा गामडानो नाश करे छें. पछी सगरे पोताना मोटा पुत्र जन्हुना भगीरथ नामना पुत्रने आहा करी इती के, पुत्र ! तुं दंडरत्न लड्ने त्यां जा, अने तेवडे गंगाने खेंची पूर्व समुद्रमां मेळवी दे पितामहनी आज्ञाथी भगीरथ अष्टापद गिरिंपासे आव्यो अने अष्टम तप करी, तेणे नागकुमारोना राजा ज्वलनप-भने प्रसन्न करी, तेनी रजा छड़ गंगाने दिंडरत्नेथी

शिक्षके नीचेना शब्दोनी समजूती आपवी.

शस्त्रका, निषुण, विहार, स्वेच्छा, भवितव्यता, पूर्वज, देह प्रमाणवाळी, उपद्रव, अचळ, सामंत, मंडलेश, अग्निहोत्री, मंगलिक, पितामह, प्रसन्न.

पाठ ८५ मो.

सगरचकी भाग ४ थो।

भगीरथे पोताना बळी गयेला साठ हजार काकाओनां अस्थिने गंगाना जळमां नाखी पिनत्र कर्यो हतां.
ते रीवाज हज सुधी लोकोमां चाले छे ज्यारे भगीरय
त्यांथी पाछो फर्यों, त्यारे रस्तामां एक झाडनी नीचे
रहेला केवळी तेना जोवामां आव्या हता केवळीने नमस्कार करी भगीरथे पुछ्युं हत्तुं के, मारा काका एकी
साथे केम मृत्यु पाम्या ? तेना उत्तरमां त्रण काळने जाणनारा केवळी भगवाने क्षुं के, भगीरथ ! पूर्वे एक
मोटो संघ तीर्थयात्रा करवाने नीकळ्यो हतो ते नजीकना कोइ गाममां कुंभारना घरनी पासे उतर्थी संघनी साथे

⁹ शत्रुंजय महात्म्यमां अजितनाथ प्रभुए सगर चकवत्तीने कहां छे, एम लखेल छे. २ शत्रुंजय महात्म्यमां एक छुटाइ टीटी हती, तेमां एक छुभार हती, इत्यादिक इपे ठखेल छे.

करी, अने दीक्षा आपवानी प्रार्थना करी. प्रभुए ते वात मान्य करी, एटले भगीरथे पोताना पितामहनो नीकळवानो मोटो वरघोडो चडाव्यो, अने प्रभुनी पासे आवी, तेमने ग्रुनिनो वेष अपाव्यो. सगरराजाए ज्यारे दीक्षा लीधी. त्यारे तेनी साथे सामंत अने वीजा मंत्रीओए पण दीक्षा लीधी हती. पछी प्रभुए देशना आपी सगरराजा विगे-रेने साथे लड़ने त्यांथी विहार कर्यो हतो, अने भगीरथ विगेरे राजाओं अने देवताओं पोतपोताने ठेकाणे चाल्या गया हता.

सगर चक्रवर्ती प्रभुनी साथे रही वार अंग भण्या हता. तेमणे सारी रीते चारित्रने पाळ्युं हतुं. " हुं चक्रवर्त्ती अने तीर्थकरनो भाइ छुं, " एवो तेमणे कदी पण गर्व राख्यो न हतो, अने भारे आकरा परीपह सहन कर्यी हतां. सगरराजाए पाछळथी दीक्षा छीथी हती, पण तपस्या अने भणतरना भारे गुणधी तेओ मोटेरा मुनिओथी पण अधिक यइ पड्या हता. छेवटे घातिकर्मनो क्षय थवाथी तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं.

सारांश प्रक्षी.

१ भगीरथे पोताना काकाओनां अस्थि शेमां ना-रुयां हतां ? २ भगीरथ गंगा छावी पाछा फर्या, त्यारे रस्तामां तेमणे कोने जोया हता ? अने तेमने शुं पुछ्युं कदि छली भिक्षा होय, तोपण साधुए प्रमाणधी अधिक खाबी नहीं; कारण के, हद उपरांत खाबाधी पण विकार उत्पन्न थाय, अने शरीरने हाडा विगेरेनी पीडा यह पढे छे. आ अतिमात्राहार नामे आठमी ग्रिप्त छे.

स्नान, विलेपन अने धूपे करी शरीरने सुंदर करतुं, नख समारवा, दांत साफ करवा, केशमां तेल नाखवुं, कपाळे तिलक करवुं, आंखमां काजळ सारवुं, सुकोमळ करवा वास्ते हाथ, पग विगेरे शरीरना अवयवने तेल अथवा साबुधी मसळवां—आ प्रमाणे शरीरनो शणगार न करे, आ विभूषणादि नामे नवमी सुप्ति छे

आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा माटे छे, तेथी साधु सिवाय वीजा ब्रह्मचारीए पण आ नव वाढ साचववी जोइए.

सारांश प्रश्नो.

१ ब्रह्मचर्यनी केटली गुप्ति छे ? २ गुप्ति एटले शुं ? ३ नव गुप्तिनां नाम आपो ४ वस्ती नामनी गुप्तिमां स्त्रीना केटला प्रकार लेवा ? ५ स्त्री, पशु, अने पंडक ए शुं १ ते समजावो. ६ स्त्रीओनी साथे एक आसनपर वेसचुं, ते कइ गुप्ति ? ७ कथा नामनी गुप्ति विपे

जैन धर्म पहेली चोपडी-

जैन धर्म वांचनमाळानी पहेली चोपडीना विद्वान मुनिराजो अने न्युसपेरवाळाओना अभिप्रायो मां-हेना थोडा अभिप्रायो अहीं आपेला छे.

शियाजी विजय ता. १८-८-०६

जैन धर्मना तेम इतरने पण ए धर्मन्तं शरुआतन्तं सारं ज्ञान मळे, एवं प्राचीन सिद्धांतो साथेनुं वांचनमाळानी शैळी उपर ळखाएछं आ उत्तम पुस्तक अपने पाळीताणाना जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी मळ्यं छे, ने तेनी सुंदर छाप उंचा कागळोना मोटा कदनां एकसो साठ पानां तथा पाकां कापडी पुंठां छतां छ आनानी कीमते एक अमृल्य पुस्तक छे दरेक जैन घरमां, तेम वाळ्कना हाथमां राखवा जोग छे. पर्युसणना तहे- वारोमां प्रभावना आपी, ज्ञान वस्तु वाळकने भेट अपाय, तो घणीज योग्य शरुआत अने सखावत थशे.

नाक्य रचनाथी मुक्तेल करी नाखे छे, तेबुं आ पुस्तकमां यथेल नथी. बल्के बालकोने हरत समजाय, एवी व्यव-हारमां वपराती भाषा राखवामां आवी छे. उपर द्राविल कारणोथी आ पुस्तकने अमे आवकार आपीए छीए. तेनी साथे तेना लेखकने तेमज मगटकर्चाने आभिवंदन आपीए छीए.

छी. सेवक,

CHUNILAL CHHAGANCHAND.

ओनररी मेनेजर,

श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाळा.

मुंबइ समाचार.

नवीन पद्धति उपर तैयार करवामां आवेली श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी—पालीताणा खातेना श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी श्री जैन धर्म पहेली घोपडी मगट करीने शालामां शीखता विद्यार्थीओने धार्मिक श्रान जाणवा माटे ठीक समवडता करवामां आवी छे। आ पुस्तकनी योजना एवी सुगम रीते करवामां आवी छे के, साधारण भाषाज्ञान धरावनारा गुजराती पांचमा धोरण सुधीना जैन विद्यार्थीओ पोताना धर्मनां प्राथमीक तत्वो

केळवणी पुस्तक १८ मुं, अंक ११ सो, संवत १९६२ भाद्रचो.

श्री जैन धर्मनी पहेली चोपडी—पालीताणाना जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी श्रसिद्ध थयेली छे. किन्मत रु. ०-६-० छे, ते पुस्तकना प्रमाणमां घणीज ओछी छे. लीपी बाळबोध छे, अने भाषा सुगम छे. वाळकोने अने अन्यने पण जैन धर्म संवंधी कांइ ज्ञान आपवानी तथा खास करीने नीति धर्म समजाववानी एमां न्यवस्था उत्तम छे. धर्मना प्रसार माटे बाळकोना हाथमां सहेलथी आपी शके, अने तेओ सहेलथी समजी शके, एवां पुस्तकोनी घणी अगत्य छे. जैन धर्मनी शाळाओमां वलाववाने आ पुस्तक उपयोगी थशे, एम लागे छे.

जैनोद्य पुस्तक १ छुं अंक १२ मो आश्विनः

श्री जैन धर्म पहेली चोपडी— आ पुस्तक श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग तरफथी तेमनी उच्च श्रेणीनी वांचनमाळाना प्रथम पुस्तक तरीके वाळवोध छिपिमां वहार पडेल छे. सदरहु पुस्तकनी प्रस्तावनामां लखेल
छे के—" ग्रंथावळीनो मुख्य उद्देश जैनोना द्रव्यानुयोग,
वरणकरणानुयोग, अने कथानुयोगना ग्रंथो अने जैन
साहित्य बांचना तरफ अभिरुची उपनाववी ते छे." आ

जोवा खरीदवा खास आग्रहपूर्वक भलामण छे. इत्यलम् शांतिः

आ वर्गनां कार्योने श्रीमंतोए सहायभूत थवुं जहरतुं छे। निकपराथी मुनि नीतिविजयजीना धर्मलाभ. वी। स. २४३३ मागशर वदी १० सोमवासरे।

जैन धर्म पहेली चोपडी—उपरोक्त पुस्तक पण उपरोक्त वर्ग द्वारा प्रसिद्ध थयेछं अमने अभिप्रायार्थे म-केल छे, जे स्वीकारतां हुई थाय छे.

वर्गना प्रयत्न योग्य छे. चालता समयनी खामी आ पुस्तकथी पुराइ छे. विद्वान म्रानि महाराजो वि. नी. संपतिथी कार्य केंब्रुं थाय छे, तेनो नमुने। आ पुस्तक छे.

आस्तिक जैन अभ्यासीने धर्मज्ञानना उत्तम साधन रुप छे. जैन शैलिधी विरुद्ध एक वाक्य पण अंदर नथी, जे बाबततुं मान चारित्रविजयजी महाराजने आभारी छे. बीजा भागो जलदी वहार पाडी, जैन वर्गने आश्रय आ-पत्तानी उत्तम तक छे.

नियोतमां पुस्तक खंतियी छपायेळ जेथी शुद्धि पत्रक नियोत ए पण बर्गनी चडती दशानुं कारण छे.

श्री पार्श्वजीन प्रणस्यः

पाटण खेतरदाशीपाडा, आशो श्रद ४ शनीवार.

श्री पाटणथी मुनि मोहनिवजयजी तथा चारित्रविज-यजी आदि ठाणाओ जोग मुन पाळीताणा मध्ये देवगुरु भक्तिकारक मभावक मुश्रावक शिवजीभाइ देवशी आदि चर्गना मेम्बरो जोग धर्मछाभ पहाँचे

विशेषमां तमारा तरफथी श्री जैन धर्म पहेली चोपडी मळी छे, जेमांना दरेक पाठना विषयो एटला उपयोगी छे के, आ चोपडी दरेक पाठशाळामां प्रहण करवामां आवे तो, हाळना जमानाना उछरती वयना युवान वाळको घणुं सारुं शिक्षण माप्त करे, एम हुं खा-तरीथी कही शकुं छुं. मुंबइनी जैन कोन्फरन्स तरफथी जैन सीरीझ तैयार करवा माटे जे आर्टीकळ मगट ययो छे, ते आर्टीकळना संबंधमां कोन्फरन्सना सेन्नेटरीओ जैन सीरीझ तैयार करवामां आवी चोपडीनो समावेश करशे, तो ते अति श्रेय गणाशे. आवी मथमनी परेखी चोपडी माफक धोरणोने अनुसार बीजी चोपटीओ यहार पाटवाने आ वर्ग शक्तिमान थाओ, एम हुं अंतःकरणधी इच्छुं छुं.

एन देवदर्शने याद फरशो, धर्म साधना विशेष

MUNI MOHAN V. Khetarwasi Pada, Patan.